आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 फरवरी, 2017

वर्ष : 75 अंक : 02
माघ, 2073 मूल्य : 10 रु.

डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
WPP LICENCE NO. JAIPURCITY/WPP-004/2015-17
डाक प्रेषण तिथि 10 फरवरी, 2017

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

'जैन धर्म और विज्ञान' अंक

75 हीरक वर्ष

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

\- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

\- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

\- उपाध्याय मान

With Best Compliments :

Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी

हिन्दी-मासिक

संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-4068798

प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : editorjinvani@gmail.com
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
WPP Licence No. JaipurCity-004/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

किण्णु भो! अज्ज मिहिलाए,
कोलाहलगसंकुला।
सुव्वंति दारुणा सद्दा,
पासाएसु गिहेसु य।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 9.7

राजर्षि! आज इस मिथिला के,
महलों में पुर के घर-घर में।
दारुण कोलाहल मचा हुआ,
क्यों बाल वृद्ध सबके स्वर में।।

फरवरी, 2017
वीर निर्वाण संवत्, 2543
माघ, 2073

वर्ष 75 अंक 2

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

'जैन धर्म और विज्ञान' अंक

सम्पादकीय-	जिनवाणी की हीरक यात्रा (2)	-डॉ. धर्मचन्द जैन	[illegible]
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-आचार्य महाप्रज्ञ	9
वैज्ञानिक-आलेख-	पारिष्ठापना समिति और वैज्ञानिक तथ्य	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	10
	जैन आगमों में काल और दूरी के माप	-डॉ. (कर्नल) दलपतसिंह बया 'श्रेयस'	14
	ग्लोबल वार्मिंग का कारण : मांसाहार	-डॉ. धर्मेन्द्रकुमार कांकरिया	19
	ज्योतिष विद्या के विकास में जैन आगम-ग्रंथों का योगदान	-श्री राधाकृष्ण शर्मा	23
	वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से ऊर्जा का वैश्विक रूप	-प्रो. प्रभात कुमार जैन	25
	द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव	-श्री चिरंजीव अनेकान्त	30
	जैन ब्रह्माण्ड और आधुनिक ब्रह्माण्ड की तुलनात्मक समीक्षा	-डॉ. जीवराज जैन	37
अंग्रेजी-स्तम्भ-	**STUDY OF UTTARĀDHYAYANA SŪTRA (2)**	*-Dr. Priyadarshana Jain*	32
युवा-स्तम्भ -	विज्ञान और धर्म	-डॉ. धर्मचन्द जैन	45
नारी-स्तम्भ-	चित्त की अचिन्त्य शक्ति	-श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	48
तत्त्व-ज्ञान -	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (101)	-श्री धर्मचन्द जैन	51
स्वास्थ्य-विज्ञान-	अध्यात्म की उपेक्षा करने वाला स्वास्थ्य विज्ञान अपूर्ण	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	53
बाल-जिनवाणी -	परमेष्ठी वन्दना	-संकलित	56
	टेलीवीजन	-श्री मुदित जैन	56
	जैन धर्म को जानें	-श्री प्रमोद महनोत	57
	हम जीते हैं किसलिए...?	-श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया	57
	Story of Monkey	-संकलित	58
	अच्छे बच्चों की अच्छी बातें	-संकलित	59
	कृत्रिम प्रकाश से फैलता प्रदूषण	-श्री प्रदीपकुमार मुखर्जी	60
अभिमत -	संथारा अंक पर अभिमत	-श्री सुरेशचन्द कोठारी	13
		-डॉ. दिलीप धींग	13
कविता/गीत-	न इन्कार कर, न इकरार कर.	-श्री रणजीतसिंह कूमट	22
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	64
सूची -	आजीवन शीलव्रत धारकों की सूची	-संकलित	66
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	69
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	89

सम्पादकीय

जिनवाणी की हीरक यात्रा (2)

❖ *डॉ. धर्मचन्द जैन*

जिनवाणी मासिक पत्रिका जिस संकल्प एवं उत्साह के साथ प्रारम्भ हुई थी, उसमें अनेक कठिनाइयाँ आने पर भी यह पत्रिका निरन्तर आगे बढ़ती रही। जिनवाणी पत्रिका में अंग्रेजी आलेखों का भी समावेश होने लगा। 1950 के अंकों में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डॉ. बेनीप्रसाद का आलेख "World Problems and Jain Ethics" कई अंकों में पूर्ण हुआ। शांति निकेतन के श्री वी.जी. नायर का "Cruelty to Animals" आलेख भी प्रकाशित हुआ। श्री शान्तिचन्द्र मेहता का अंग्रेजी लेखों के सम्पादन में योगदान रहा। यूरोप में जैन दर्शन के प्रति बढ़ती हुई अभिरुचि की दृष्टि से जिनवाणी में अंग्रेजी लेखों को स्थान दिया गया। जिनवाणी पत्रिका को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। सम्पादक मण्डल ने अपने विचारों में व्यक्त करते हुए लिखा-"हमारी तो बहुत पहले से अभिलाषा है कि हम अंग्रेजी विभाग को बढ़ावें, किन्तु आर्थिक कठिनाई बीच में दीवाल बनकर खड़ी है। यहाँ तक कि हिन्दी के प्रकाशन में भी हमें आर्थिक समस्या निश्चिंत नहीं रहने देती।" (नवम्बर, 1950)*

जिनवाणी का प्रारम्भ किसी गीत, भजन या कविता से होता था। कभी संस्कृत या प्राकृत के उद्धरण देकर उनका हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया जाता था तो कभी प्रेरक विचार अंक की शोभा बढ़ाते थे। जिनवाणी के स्वरूप को अभिव्यक्त करने वाली जो पंक्तियाँ आज भी प्रकाशित होती हैं उन्हें सन् 1950 के अंकों में भी देखा जा सकता है-

मंगल मूल धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह मोह छल मान मर्दिनी, फिर प्रकटी यह जिनवाणी।।

श्रावक का जीवन सुन्दर हो, उसका चिन्तन एवं व्यवहार उत्तम हो, इस प्रकार के भावों का वपन जिनवाणी के माध्यम से समय-समय पर होता रहा है। फरवरी-1951 के अंक में 'श्री बटुक' नाम से पूज्य आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. की आदर्श श्रावक के स्वरूप को प्रस्तुत करने वाली कुछ पंक्तियाँ इसकी साक्षी हैं-

जो विलासिता का नहीं, सादगी का उपासक हो;
जिसको परिग्रह से मोह नहीं, किन्तु त्याग के प्रति प्रेम हो;
वही आदर्श श्रावक।
मन पर, वचन पर, तन पर जिसका पूर्ण नियन्त्रण हो;
जिसके ललाट पर ब्रह्मचर्य का अद्भुत तेज झलकता हो;
वही आदर्श श्रावक।
अपने व्यवसाय में जो न्याय और नीति का आचरण करता हो;
जो दूसरों के परिश्रम का फल अपने में नहीं मिलाता हो;
संग्रह बुद्धि से सदा दूर, संतोष की खान हो।
वही आदर्श श्रावक।

* सन् 1944 से 1949 के जिनवाणी अंक उपलब्ध नहीं हो सके, अतः उस अवधि के विकासक्रम की जानकारी प्राप्त नहीं हो पायी, किन्तु संवत् 2002 तदनुसार सन् 1945 या सन् 1946 में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल का गठन हो गया था, जिसका कार्यालय जोधपुर में प्रारम्भ हुआ एवं जिनवाणी का प्रकाशन उसके अधीन जोधपुर से होने लगा।

सन् 1950 में पत्रिका का प्रकाशन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जोधपुर द्वारा श्री विजयमलजी कुम्भट की देखरेख में श्री गुरुकुल प्रिंटिंग प्रेस, त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर से हो रहा था, जिसका क्रम जुलाई 1953 तक चला। इससे यह सूचित होता है कि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल का प्रारम्भिक कार्यालय जोधपुर में रहा। वर्तमान में यह कार्यालय जयपुर में है। बालक-बालिकाओं में धार्मिक अध्ययन के सम्बन्ध में कदम उठाये जा रहे थे। इसलिए फरवरी 1951 के अंक में जैन धार्मिक अध्यापिकाओं की आवश्यकता हेतु सूचना प्रकाशित करते हुए लिखा गया- ''सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्यकर्ता प्रयत्नशील हैं कि प्रत्येक क्षेत्र में बालिकाओं के लिए धार्मिक शिक्षण की व्यवस्था की जाए। अतएव ऐसी जैन अध्यापिकाओं की आवश्यकता है, जो धार्मिक शिक्षण के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षण भी दे सकें।'' इसी अंक में भारत के लोह पुरुष एवं गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल का 15 दिसम्बर 1950 को देहावसान होने की सूचना भी प्रकाशित हुई।

जैन कथा साहित्य के लेखन हेतु शिक्षित नवयुवकों को प्रेरित करने के लिए बीकानेर के श्री अगरचन्द नाहटा का आलेख प्रकाशित हुआ, जिसमें कहा गया-''भारतीय कथा साहित्य में जैन विद्वानों (आचार्यों) की महान् देन है। उनके प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश एवं प्रादेशिक लोकभाषाओं में रचित हजारों कथा ग्रंथ विद्यमान हैं। इनमें छोटी से छोटी एवं बड़ी से बड़ी कथा कहानियाँ ऐतिहासिक, पौराणिक एवं लौकिक शैली में रचित हैं। आज आवश्यकता है कि प्राचीन साहित्य को लोक मंगल की भावना से युगानुकूल भाषा एवं शैली में प्रस्तुत किया जाए।'' संभव है युग की इस मांग को देखते हुए ही उत्तरकाल में जैन मुनियों एवं कतिपय विद्वानों द्वारा जैन कथाओं का नई शैली में लेखन किया गया हो। आचार्य श्री हस्ती, दिवाकर श्री चौथमलजी, श्री मधुकरमुनिजी, श्री पुष्करमुनिजी, श्री केवलमुनिजी, श्री देवेन्द्रमुनिजी, प्रवर्तक रमेशमुनिजी, श्री गणेशमुनिजी, श्री गणेश ललवानी, श्री वीरेन्द्रकुमार जैन आदि के द्वारा हिन्दी में कथाएँ लिखी गईं। गुजराती भाषा में पहले से ही लेखन हो रहा था। जैन साहित्य से सम्बद्ध नई कहानियों को नई प्रेरणा के साथ लिखने की आवश्यकता आज भी अनुभव की जा रही है। नये लेखकों को इस दिशा में अपनी कलम चलाने की महती आवश्यकता है। कथा-कहानियों से भी जीवन को दिशा प्राप्त होती है। सन् 1950 में जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज के निधन पर फरवरी 1951 के अंक में एक कविता प्रकाशित हुई-

क्षण बीत गये इस जीवन के दे शान्ति अरे अब कौन मुझे।
मानव रोते मानवता भी है फूट-फूट रोती तुझको।।

श्री सूरजचन्दजी 'सत्यप्रेमी' की अनेक कविताएँ जिनवाणी में समय-समय पर प्रकाशित होती रहीं। उनके द्वारा लिखित एक प्रार्थना की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

''वंदन हम करते मंगलमय महावीर स्वामी को।
संघ शिरोमणि शासन-नायक प्रभु अंतरयामी को।।''

यह प्रार्थना बाद में सर्वत्र गायी गई एवं आज भी गायी जाती है। प्रभु महावीर के जीवन को सुन्दर ढंग से वर्णित करने वाला एक आलेख जिनवाणी के कई अंकों में क्रमशः प्रकाशित हुआ, जिसके लेखक थे श्री उदयलाल डूंगरवाल, कानोड। अगस्त 1951 के अंक में समाचार प्रकाशित हुए कि राजस्थान प्रान्त में पहले भाद्रपद शुदि में संवत्सरी एवं ऋषि पंचमी के उपलक्ष्य में जो आम छुट्टी होती थी वह अब बंद कर दी गई है। जैन समाज से अपील की गई कि वह इस छुट्टी को निरन्तर जारी रखने हेतु सरकार से मिलकर प्रयत्न करे। साधु-साध्वियों से वंचित क्षेत्रों में पर्युषण पर्व पर धर्माराधन कराने एवं व्याख्यान देने हेतु चिन्तन चल रहा था। सन् 1951 के सितम्बर अंक से ज्ञात होता है कि उस वर्ष प्रवर्तकमुनिश्री पन्नालालजी म.सा. के सदुपदेश से गुलाबपुरा में स्थापित स्वाध्याय संघ की ओर से 15-20 स्वाध्यायी मेरवाड़ा व मेवाड़ क्षेत्र में पर्युषण पर्व पर व्याख्यान देने हेतु गए। पूज्य आचार्य श्री हस्ती ने इस कार्य को आगे बढ़ाया एवं

जोधपुर में स्वाध्याय संघ की स्थापना हुई, जो विगत 57 वर्षों से हजारों क्षेत्रों को योग्य स्वाध्यायियों से लाभान्वित कर चुका है। जिनवाणी कार्यालय जोधपुर के व्यवस्थापक उस समय माधोमल जी लोढ़ा थे, जिन्होंने जिनवाणी के नये ग्राहक बनाने हेतु भी प्रयत्न किया। देश आजाद हो चुका था, अतः लोकसभा एवं विधान सभा के लिए चुनाव होने लगे। उम्मीदवार की पहचान के लिए अनेक योग्यताओं का कथन जिनवाणी में किया गया, यथा- ''उम्मीदवार, धीर, गम्भीर सच्चा और प्रतिभासम्पन्न होना चाहिए और जनहित के लिए डटकर लड़ने की क्षमता रखने वाला होना चाहिए।''

उपाचार्यश्री गणेशीलालजी महाराज के विचार भी समय-समय पर प्रकाशित हुए। उन्होंने फरमाया-''मानव प्रकृति का उत्कर्ष सेवा तथा करुणा में अन्तर्निहित है। सेवा का कार्य महान् है, परम महान् है, सेवाव्रती मानव वही बन सकता है जो जीवन के संकीर्ण घेरे को तोड़कर विशाल दृष्टि को अपनाता हो'' (मार्च 1953)। सम्पादक मण्डल में श्री चम्पालाल कर्णावट, श्री शान्तिचन्द्र मेहता के साथ कभी श्री मिट्ठालाल जी मुरडिया रहे तो कभी श्री लालचन्दजी जैन।

भारत में आज अन्न की कमी नहीं है, देश ने कृषि, वाणिज्य एवं उद्योग में पर्याप्त विकास किया है। किन्तु स्वतन्त्रता के कुछ वर्षों के पश्चात् तक खाद्यान्न का संकट बना रहा। इस संकटकाल में मांस, मछली और अण्डे के सेवन को प्रोत्साहित किया जाने लगा तब जिनवाणी में पंडित शशिकान्त झा ने लिखा कि जीव हिंसा से देश की खाद्य स्थिति नहीं सुधर सकती। अधिक अन्न उपजाने के साथ सप्ताह में एक दिन का व्रत रखने का परामर्श दिया गया। आगे चलकर मानो यह सुझाव साकार हुआ एवं प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने खाद्यान्न के संकट से जूझते हुए सप्ताह में एक दिन के उपवास की प्रेरणा की।

पर्युषण पर्व पर कत्लखाने बंद रखे जाने की भी मुहिम चली। बीकानेर में कत्लखाना बंद रखने के सम्बन्ध में हुई लिखा-पढ़ी की नकल श्री भंवरलाल नाहटा द्वारा जिनवाणी में राजस्थानी भाषा में प्रकाशित की गई। उसमें लिखा गया-''जैन धर्म जीव दया रे वास्ते जिको काम कियो पाडौसी धरमां ऊपर भी बैरी जबरी छाप पड़ी। जैन धर्म री संगत सूं ही राजस्थान, गुजरात खास निरामिष भोजी हुय गया।'' बीकानेर में दस दिनों के लिए कसाईखाने बंद रखे गये और राजस्थान सरकार से भी सम्पूर्ण राजस्थान में कसाई खाने बंद रखने हेतु पुरजोर कोशिश की गई (अगस्त 1953)।

महावीर जयन्ती पर अप्रेल 1952 के अंक में भारत सरकार की ओर से सार्वजनिक अवकाश घोषित किए जाने की मांग की गई। निरन्तर मांग किए जाने का फल है कि महावीर जयन्ती पर आज भारत सरकार एवं राज्यों के द्वारा अवकाश स्वीकृत है तथा इसके कारण समस्त जैन समाज एक प्लेटफार्म पर अपनी एकता को अभिव्यक्त करता है।

27 अप्रेल से 7 मई 1952 तक आयोजित सादड़ी सम्मेलन में श्रमण संघ की एकता हुई, जिसमें पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज को आचार्य पद, पूज्य श्री आनन्दऋषिजी महाराज को प्रधानमंत्री पद एवं पंडितरत्न श्री हस्तीमलजी महाराज को सहमंत्री पद प्रदान किया गया। सन् 1953 का जोधपुर चातुर्मास ऐतिहासिक रहा। इस चातुर्मास में उपाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज, वयोवृद्ध श्री पूरणमलजी महाराज, प्रधानमंत्री श्री आनन्दऋषिजी महाराज, सहमंत्री पण्डितरत्न श्री हस्तीमलजी महाराज, व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी महाराज, पण्डितरत्न श्री समर्थमलजी महाराज, कविरत्न श्री अमरचन्दजी महाराज आदि संतवृन्द एक साथ उपस्थित थे। जोधपुर के सिंहपोल में धर्मचर्चा एवं प्रवचन-श्रवण का अनूठा आनन्द रहा। हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने इस चातुर्मास का लाभ लिया।

अक्टूबर 1952 के अंक में जैन फिल्मों के निर्माण हेतु एक प्रेरक आलेख 'श्री क्रान्तिदूत' के नाम से प्रकाशित हुआ, जिसमें सिनेमा के प्रति बढ़ते रुझान को देखते हुए जैन कथानकों के आधार पर रोचक एवं प्रामाणिक फिल्मों का निर्माण किए जाने का परामर्श दिया गया। युवकों को लेकर आज जो समस्याएँ हैं वे पहले भी रहीं। श्री मिट्ठालाल मुरडिया लिखते हैं-''आज का युवक चरित्र-निर्माण करने वाली सुरुचि सम्पन्न सामग्री को पढ़ना नहीं चाहता है। वह तो

केवल विलासात्मक कहानियाँ और इश्क को प्रोत्साहन देने वाले उपन्यासों को पढ़ने में समय बिता देता है।'' आज का युवा अध्ययन, व्यापार-व्यवसाय के अतिरिक्त समय को टी.वी. एवं मोबाइल के माध्यम से व्यय कर रहा है। सद्गुणों का महत्त्व नहीं जानने के कारण उनके प्रति आकर्षण नहीं होता। ऐन्द्रियक सुखों के प्रति मनुष्य सहज आकर्षित होता है।

एक लेखक के मत में गुणी बनने का सरल उपाय है गुणों के प्रति अनुराग रखना, गुणीजनों के प्रति आदर-सत्कार एवं भक्ति रखना। जैसे-जैसे मनुष्य का गुणानुराग बढ़ेगा, वैसे-वैसे उसका गुणियों के प्रति आकर्षण होगा एवं वह गुणी बनता चला जाएगा। गुणी से प्रेम एवं गुणों के प्रति आकर्षण ही गुणी बनने का उपाय है। (जनवरी-1954) सद्गुणी ही गुरु हो सकता है। श्रीमद् राजचन्द्र के विचारों में कहा गया- गुरु के तीन रूप होते हैं- एक काष्ठ की भाँति होता है, जो स्वयं भी तैरता है एवं दूसरों को भी तरा सकता है। दूसरा कागज की भाँति होता है जो कुछ समय तैर कर गल जाता है एवं दूसरों को तराने में समर्थ नहीं होता। तीसरा पत्थर की भाँति होता है जो न स्वयं तर सकता है और न दूसरों को तरा सकता है। इनमें प्रथम प्रकार का गुरु ही सद्गुरु कहा जा सकता है। (सितम्बर-1952)

आचार्य श्री हस्ती कहते हैं कि ग्राम धर्म के अनुसार एक सद्गृहस्थ में दस विशेषताएँ होती हैं- 1. कष्ट सहिष्णुता, 2. सरलता, 3. संतोष, 4. सहयोग, 5. अतिथि-सत्कार, 6. सादगी, 7. श्रमशीलता, 8. श्रद्धा, 9. बड़ों का आदर तथा मानमर्यादा एवं 10. परमेश्वर का भय। (अगस्त-1954)

महात्मा गाँधी के 'हरिजन' पत्र के सम्पादक एवं निर्भय आलोचक श्री किशोरीलाल घनश्यामदास मशरुवाला द्वारा विनोबा भावे की 'भूमि दान' योजना के सम्बन्ध में जिनवाणी के अक्टूबर-1952 के अंक में विचार प्रकट किए गए हैं-''हर भू स्वामी को गहराई से सोचना चाहिए कि पानी और हवा की तरह धरती भी सबकी है, अतः इसका समान विभाग एवं समान लाभ आवश्यक है।'' आज जमीन के छोटे से टुकड़े के लिए भाई अपने भाई की जान का ग्राहक हो जाता है, किन्तु बिनोबा भावे ने भूमिहीनों के लिए भूदान की योजना को साकार रूप प्रदान किया।

जिनवाणी पत्रिका का कार्यालय अगस्त 1954 में जोधपुर से जयपुर स्थानान्तरित हो गया एवं अगस्त-1954 का अंक मनोरंजन प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से प्रकाशित हुआ। इसके पूर्व जून 1954 तक के अंक जोधपुर से प्रकाशित प्राप्त होते रहे। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल का कार्यालय तब तक जोधपुर में ही था, किन्तु जिनवाणी का प्रकाशन जयपुर में स्थायी रूप लेने लगा तो मण्डल का कार्यालय भी जनवरी 1955 में जयपुर आ गया।

29 अक्टूबर 1954 को लालभवन, जयपुर में पं. रत्न सहमंत्री श्री हस्तीमलजी महाराज के व्याख्यान में जर्मन विद्वान् लूथर वेण्डल उपस्थित हुए। पूज्य श्री के द्वारा 'जैनदर्शन की विशालता और तत्त्वज्ञान' के सम्बन्ध में जो व्याख्यान दिया गया, उसका अंग्रेजी अनुवाद उदयपुर निवासी श्री हिम्मतसिंहजी सुरपुरिया (असिस्टेण्ट कमिश्नर, देवस्थान विभाग, राजस्थान) द्वारा किया गया, जिसे सुनकर लूथर वेण्डल अत्यन्त प्रभावित हुए। वे बैरिस्टर चम्पतराय जैन से हुई मुलाकात के बाद से जैन धर्म के प्रति विशेष रुचिशील एवं श्रद्धाशील बने। उन्होंने कहा- *''मुझे जब-जब जैन सन्तों से मिलने का अवसर प्राप्त होता है, तब-तब अपने आपको बड़ा भाग्यशाली समझता हूँ। इस युग में जैन मुनियों के ज्ञान, दर्शन एवं चारित्रमय जीवनवृत्ति को देखकर हृदय गद्गद् हो उठता है।''*

जिनवाणी पत्रिका में समय-समय पर वैज्ञानिक आलेख भी प्रकाशित होते रहे हैं। श्री हिम्मतसिंहजी सरूपरिया-उदयपुर के वैज्ञानिक आलेखों की निरन्तर शृंखला प्रकाशित हुई। अन्य विद्वानों के भी वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक आलेख प्रकाशित हुए हैं। जिनवाणी के प्रस्तुत अंक में जैन धर्म एवं विज्ञान के सम्बद्ध कतिपय आलेख प्रकाशित किए जा रहे हैं, जिनमें अधिकांश आलेख वे हैं जो जिनवाणी में पहले प्रकाशित हो चुके हैं।

(क्रमशः)

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

1. से बेमि-अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे।-आचारांग सूत्र, 1.1.2, सूत्र 28

2. से बेमि-इमंपि जाइधम्मयं एयंपि जाइधम्मयं.....एयंपि विपरिणाम धम्मयं।

-आचारांग 1.1.15, सूत्र 113

(1) मैं कहता हूँ- पृथ्वीकायिक जीव जन्मना इन्द्रिय-विकल-अंध, बधिर, मूक, पंगु और अवयवहीन मनुष्य की भांति अव्यक्त चेतना वाले होते हैं। शस्त्र से भेदन-छेदन करने पर जैसे जन्मना इन्द्रिय-विकल अंधे मनुष्य को कष्टानुभूति होती है, वैसे ही पृथ्वीकायिक जीवों को होती है।

शंका हो सकती है- क्या पृथ्वी में जीव हैं? यद्यपि सूक्ष्म तत्त्व के अवबोध के लिए अतीन्द्रियज्ञान ही प्रमाण होता है, फिर भी पूर्वाचार्यों ने इस विषय में कुछ युक्तियाँ प्रदर्शित की हैं। वे कहते हैं- जैसे मस्से में मांसांकुर फूटते हैं वैसे ही पर्वत में समानजातीय शिला का उद्भेद होता है। यह चेतना का चिह्न है। आचार्य कुन्दकुन्द ने पंचास्तिकाय में एकेन्द्रिय प्राणियों का जीवत्व सिद्ध करने के लिए यह तर्क प्रस्तुत किया है- जिस प्रकार अण्डे में अन्तर्लीन और गर्भ में स्थित जीवों तथा मूर्च्छित प्राणियों में बुद्धिपूर्वक प्रवृत्ति नहीं देखी जाती, फिर भी उनमें जीवत्व का निश्चय किया जाता है। उसी प्रकार से ही एक इन्द्रिय वाले जीवों का भी जीवत्व सिद्ध होता है। एक इन्द्रिय वाले प्राणियों तथा अण्डे आदि के मध्यवर्ती पंचेन्द्रिय प्राणियों में बुद्धिपूर्वक प्रवृत्ति दृष्टिगोचर नहीं होती। इस बुद्धिपूर्वक प्रवृत्ति का अदर्शन दोनों में समान है।

आधुनिक भूवैज्ञानिक भी मानते हैं- शिलाखण्ड, पर्वत आदि में भी हानि और वृद्धि होती है। उनमें क्लान्ति, चयापचय और मृत्यु- चैतन्य के ये तीनों लक्षण पाए जाते हैं। उनमें चेतना अव्यक्त होती है, इसलिए उनको व्यक्त चेतना वाले प्राणी की तरह सहजतया जाना नहीं जा सकता।

(2) वनस्पतिकाय में जीवत्व सिद्ध करते हुए मनुष्य एवं वनस्पतिकाय में तुलना की गई है-

1. जैसे मनुष्य का शरीर जन्म-धर्मा है, वैसे ही वनस्पति का शरीर भी जन्म-धर्मा है।
2. जैसे मनुष्य का शरीर बढ़ता है, वैसे ही वनस्पति का शरीर भी बढ़ता है।
3. जैसे मनुष्य का शरीर चित्तवान्- ज्ञानयुक्त होता है वैसे ही वनस्पति का शरीर भी ज्ञानयुक्त होता है। आंवले के पेड़, चकवंड (चक्रमर्द) के पौधे आदि में नींद और जागरण का अस्तित्व दृष्टिगोचर होता है। इस विषय में आधुनिक वैज्ञानिकों का मत जानने के लिए 'सीक्रेट लाइफ ऑफ दी प्लांटस्' यह ग्रंथ देखना चाहिए।
4. जैसे मानव शरीर के हाथ आदि अवयव छिन्न होने पर म्लान होते हैं- क्रमशः निर्जीव हो जाते हैं, वैसे ही वनस्पति के भी शाखा, फूल, पत्ते आदि अवयव छिन्न होने पर म्लान होते हैं- मूल शरीर से पृथक् हुए अवयवों का आभामण्डल क्रमशः क्षीण होता चला जाता है। उसके क्षीण होने पर मृत्यु हो जाती है।
5. जैसे मनुष्य का शरीर आहार लेता है वैसे ही वनस्पति का शरीर भी पृथ्वी, जल आदि का आहार ग्रहण करता है। दोनों में पाचनक्रिया प्रकाश-सापेक्ष है।
6. जैसे मनुष्य का शरीर अनित्य अर्थात् हानि-वृद्धि युक्त होता है, वैसे ही वनस्पति का शरीर भी अनित्य है, हानि-वृद्धियुक्त है।
7. जैसे मनुष्य का शरीर अशाश्वत अर्थात् मरणधर्मा है, वैसे ही वनस्पति का शरीर भी अशाश्वत है, मरणधर्मा है।
8. जैसे मनुष्य का शरीर चयापचय-धर्मा है अर्थात् उसमें प्रतिक्षण करोड़ों कोशिकाएँ उत्पन्न होती हैं, नष्ट होती हैं, वैसे ही वनस्पति का शरीर भी चयापचय-धर्मा है। उसमें भी कोशिकाओं की उत्पत्ति और विनाश देखा जाता है।
9. जैसे मनुष्य का शरीर विपरिणामधर्मा है, वैसे ही वनस्पति का शरीर भी विपरिणामधर्मा होता है।

-आचार्य महाप्रज्ञकृत आचारांगभाष्य से संकलित

पारिष्ठापना समिति और वैज्ञानिक तथ्य

संकलन : पी. शिखरमल सुराणा

जैन मुनियों का 'पारिष्ठापना समिति' वाला नियम भारतीय ऋषि-मनीषा का एक ऐसा नियम है, जिसके पालन से जल-संरक्षण होता है, मिट्टी की उर्वरता बचती व बढ़ती है तथा जल-थल प्रदूषण नहीं होते हैं। इस तथ्य को आज वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं। इस सम्बन्ध में एक शोधपूर्ण और तथ्यपरक पुस्तक है - 'जल थल मल'। श्री सोपान जोशी द्वारा विस्तृत अनुसंधान के बाद लिखी गई 210 पृष्ठीय यह महत्वपूर्ण पुस्तक 'गांधी शांति प्रतिष्ठान' (221, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002) से पहली बार जुलाई-2016 में प्रकाशित हुई।

गांधी स्मारक निधि के द्वारा स्थापित 'गांधी शांति प्रतिष्ठान' अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित गैर-सरकारी संगठन है। इसके संस्थापकों में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. एस. राधाकृष्णन, डॉ. जाकिर हुसैन, सी. राजगोपालाचारी, जयप्रकाश नारायण, जवाहरलाल नेहरू, मोरारजी देसाई जैसी विभूतियाँ भी रही हैं। यह प्रतिष्ठान दुनियाभर में अहिंसा और शांति के लिए विविध कार्य करता है।

रिपोर्टर, सम्पादक व लेखक श्री जोशी को इस पुस्तक के लिए बेंगलुरु की संस्था 'अर्घ्यम' ने सन् 2011 में शोधवृत्ति दी थी। लेखक ने देश-विदेश के शास्त्रीय और आधुनिक शताधिक प्रामाणिक शोध-सन्दर्भों के साथ पुस्तक तैयार की है। उन्होंने व्यक्तिगत सर्वेक्षण भी किये तथा अनेक वैज्ञानिक प्रयोग और निष्कर्ष भी दिये।

यह पुस्तक स्वच्छता, स्वच्छ भारत अभियान तथा इससे जुड़े अनेक ज्ञात-अज्ञात बिन्दुओं पर वैज्ञानिक तथा अन्य दृष्टियों से प्रकाश डालती है। अनेक तथ्य जीव और पुद्गल के सम्बन्ध तथा पुद्गल के परिणमन को समझने में सहायक बनते हैं। पूरी पुस्तक पठनीय और मननीय है। इस सम्बन्ध में पुस्तक में से कुछ चयनित अंश यहाँ दिये जा रहे हैं -

1. ऑक्सीजन वनस्पति का मल है, जिसे वह त्याग देती है। यह उसका जूठन, कूड़ा-करकट है। हमारे लिये यही प्राणवायु है। हम हर पल प्राणवायु अपने फेफड़ों से होते हुए शरीर के हर पोर तक खींचते हैं। यही प्राणायाम है और इसके लिए किसी योग गुरु की जरूरत नहीं होती।
2. प्रकृति में हमेशा ही किसी एक जीव का कूड़ा किसी दूसरे जीव के लिए 'संसाधन' का रूप ले लेता है। हर किस्म के जीव किसी भी तरह के साधन का एक हिस्सा भर इस्तेमाल कर पाते हैं। जो नहीं पुसाता उसे त्याग देते हैं। वह किसी और के काम आता है। इस सृष्टि में कुछ भी बेकार नहीं जाता। जीवन का कोई भी रूप दूसरे जीवों से लेन-देन किए बिना पनप ही नहीं सकता है।
3. सर्वहारी शूकर मनुष्य की बस्तियों के पास सभ्यता के उभरने के पहले से रहते रहे हैं। हमारा ही मल खाने के बाद भी हमने सूअर को घृणा का पात्र बना दिया है।
4. जिधर जितना जीवन, उधर उतना ही आपसी व्यवहार। जीवन का जैसा अपार वैभव भूमध्य रेखा के इर्दगिर्द के वर्षावनों में होता है, उतना जमीन पर और कहीं नहीं मिलता। समुद्र के भीतर प्रवालों में भी

ऐसा ही सजीव मेला सदा लगा रहता है। दोनों के पीछे जीवों के बीच यही व्यवहार, यही व्यापार है।

5. जीवन के अनगिनत रूप एक-दूसरे से सट कर रहते हैं, एक दूसरे के विष को अमृत बनाने का काम सतत करते रहते हैं। कुछ भी बरबाद नहीं जाता।

6. हमारा भोजन भी कचरे और साधन के इसी लेनदेन से आता है। हर जीव का शरीर पृथ्वी के उर्वरकों का एक छोटा सा संग्रह है। मृत्यु होने पर यह रचना जब टूटती है तब ये उर्वरक किसी और जीव के शरीर में पहुँच जाते हैं।

7. धरती से उगे गेहूँ की रोटी हमारे पेट में जाती है। हमारे मरने के बाद चाहे हमें दफनाया जाए या आग के हवाले किया जाए, उर्वरक घूम के फिर वहीं पहुँचते हैं, जहाँ से कभी वे निकले थे।

8. पिछले सौ सालों में कुछ वैज्ञानिक खोजों की मदद से हमने ढेर सारा भोजन पैदा करना सीख लिया है। कई बीमारियों का उपचार करना भी पिछली शताब्दी में संभव हुआ है। इससे दुनिया भर में हमारी आबादी सौ साल में चौगुनी बढ़ी है। आज पृथ्वी पर लगभग साढ़े सात अरब से ज्यादा लोग हैं।

9. हमारी आबादी चौगुनी हुई है तो हमारा कुल मल-मूत्र भी चौगुना बढ़ा है। लेकिन उसे ठिकाने लगाने के तरीके चौगुने नहीं हुए हैं।

10. कोई चार अरब लोगों के पास शौचालय की सुविधा है ही नहीं। और अगर है भी तो उनके मैले पानी का सुरक्षित निकास नहीं होता है। यानी औसतन दस लोगों में-से छह लोगों के मल-मूत्र का ठीक निस्तार नहीं होता।

11. सन् 2013 का एक अध्ययन बताता है कि ठीक-ठाक शौचालय तो दुनिया की कुल आबादी में से केवल 110 करोड़ लोगों के पास ही हैं। यानी छह लोगों में से केवल एक व्यक्ति के पास।

12. अच्छे-बुरे हर तरह के मैले पानी को साफ करने के कारखानों से जुड़े शौचालयों को एक साथ गिन लें, तब भी दुनिया के केवल 280 करोड़ लोगों के शौचालय ठीक माने जा सकते हैं। इस समस्या का सबसे विकराल रूप हमारे देश में है।

13. शुचिता एक त्रिकोणीय विचार है। जिसका एक कोण है पानी, दूसरा मिट्टी और तीसरा हमारा शरीर- जल, थल और मल। शौचालय होना या न होना तो शुचिता विषय की एक मामूली कड़ी भर है।

14. पानी और मिट्टी के संस्कार से जो भोजन उगता है, उसे हमारा शरीर कुछ घंटों के भीतर ही मल-मूत्र बना देता है। उसमें मिट्टी से निकले बेशकीमती उर्वरक होते हैं। प्रकृति का नियम है कि जमीन से निकले उर्वरक जमीन में वापस जाने चाहिये। यह खाद फिर खाद्य में बदल जाती है। लेकिन आजकल विकास का मानदण्ड पानी से चलने वाले फ्लश कमोड में ही पाया जाता है। थल से निकले उर्वरक वापस मिट्टी में जाने की बजाय आजकल जल में बहाये जाते हैं। इससे मिट्टी की उर्वरता घट रही है।

15. खेती की जमीन को आज बहुत महंगे बनावटी उर्वरक डाल कर उपजाऊ रखा जा रहा है। हमारे यहाँ तो यह सौदा बहुत ही भारी पड़ता है। कुछ बनावटी उर्वरक तो ऐसे हैं जो यहाँ मिलते ही नहीं हैं। इनके आयात पर बहुत खर्चा होता है। भारत सरकार अनुदान दे कर इन्हें कम दाम पर किसानों को मुहैया कराने की कोशिश करती है। ये सस्ते उर्वरक असल में बहुत महंगे पड़ते हैं।

16. सन् 2009 में सरकार का उर्वरकों पर सालाना अनुदान 1,00,000 करोड़ रुपये के पास पहुँच गया था, जिसके बाद से सरकार इसे घटाने की भरसक कोशिश कर रही है। फिर भी सरकारी खजाने में

बनावटी उर्वरक की सेंध हर साल कोई 70,000 करोड़ रुपये की तो लगती ही है। इतने उर्वरक डालने पर भी हर साल हमारी मिट्टी बंजर होती जा रही है।

17. दस साल पुराना एक अनुमान कहता है कि फसलों के कटने के साथ हर साल एक करोड़ टन उर्वरक का घाटा हमारी मिट्टी को हो रहा है। फसलें भोजन के रास्ते हमारे शरीर के भीतर पहुँचती हैं। फिर शरीर से निकलने के बाद सीवर से जुड़े शौचालयों के रास्ते ये उर्वरक नालियों में बहाये जाते हैं।

18. आधुनिक शौचालय और सीवर व्यवस्था पानी की घोर बरबादी तो करती ही है, जल प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण भी यही है।

19. एक अध्ययन बताता है कि दुनिया भर में आधे से ज्यादा नदियाँ और तालाब सीवर के मैले पानी से दूषित है, तटवर्ती समुद्र भी। घनी आबादी वाले हमारे देश में जल स्रोतों के हाल बहुत खराब है, चाहे फिर वह गंगा और यमुना जैसी पवित्र नदियाँ हो या भूजल।

20. शहरों के मैले पानी को साफ करने का एकमात्र तरीका है सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट, जो बनाने में बहुत महंगे और चलाने में कठिन होते हैं। कई विकसित कहे जाने वाले देशों के शहरों में भी ये ठीक से काम नहीं करते। इसलिए ढेर सारा धन खर्च करने के बाद भी इनके जल स्रोत दूषित ही रहते हैं।

21. मल-मूत्र का बोझा केवल नदियाँ और तालाब ही नहीं उठाते हैं। इसे हटाने का काम लोगों पर भी डाला जाता रहा है। ऐसे लोगों पर जिनके जन्मजात दुर्भाग्य का फायदा दूसरे उठाते हैं।

22. कुछ जातियों के कुछ लाख लोग आज भी इस काम को करने के लिए अभिशप्त हैं। आजाद भारत में ये आज भी गुलाम हैं, स्वच्छता के नाम पर।

23. कई तरह के लोग मल-मूत्र से सनी अपनी-अपनी दुनिया में सोना बनाने में जुटे हुए हैं। उनकी कहानी उनके आसपास सिमटी हुई है, क्योंकि ये लोग अपने काम का ढोल नहीं बजाते हैं। पर हम उनसे बहुत कुछ समझ सकते हैं।

24. जो कार्यकर्ता हर किसी को शौचालय का अधिकार दिलाने में लगे हैं, उनकी बातचीत उनसे कम ही होती है, जो जल प्रदूषण रोकने में लगे हैं। दोनों हलकों का संवाद उनसे और भी कम है, जो मिट्टी की उर्वरता लौटाना चाहते हैं। और जो लोग मैला ढोने वाली जातियों को मुक्ति दिलाना चाहते हैं वे तो बिल्कुल ही अकेले पड़े हैं।

25. जल, थल और मल का सम्बन्ध शाश्वत है। अगर इसे सामाजिक व्यवहार में ठीक से निभाया जायेगा तो सबके लिए जीवन थोड़ा सरल हो जायेगा। अगर न निभाया जा सका तो बेशकीमती जमीन उजड़ेगी, नदियाँ दूषित होंगी, लाखों लोग बीमार पड़ते रहेंगे। मैला ढोने का शाप हर रोज ढो रहे लोगों को गरिमा नहीं मिलेगी।

26. अपने-अपने जीवन में आँख बंद कर लगे रहने वाले लोग एक भीड़ बन जाते हैं। इस भीड़ की भगदड़ में वही दुर्दशा होने की आशंका है, जो ऑक्सीजन बनाने वाले प्रागैतिहासिक जीवाणुओं की हुई। वे अपनी साँस से निकले मैल के इकट्ठा होने से लुप्त हो गए। लेकिन उनके मिटने से जीवन नहीं मिटा। केवल उसका रूप बदल गया।

27. क्या पता, अगर हमने भी अपने मल को ठिकाने लगाना नहीं सीखा तो हम भी लुप्त हो जाएँ? आज नहीं तो कल? सौ साल नहीं तो दो सौ, चार सौ साल में? अगर ऐसा हुआ तो हमारी संतति प्रलय

के कगार पर अपने पूर्वजों की बेवकूफी को कोसेगी। हमारी प्रजाति के मिटने का डर किसी परमाणु प्रलय या युद्ध की बजाए उसके अपने कचरे से ज्यादा है। यह अचानक नहीं, धीरे-धीरे होगा।

28. मसला पृथ्वी को बचाने का नहीं है। मनुष्य जाति को स्वयं को स्वयं से बचाना है। पुराना किस्सा बताता है कि समुद्र मंथन से विष भी निकलता है और अमृत भी। यह जैसे समुद्र के जल पर लागू होता है वैसे ही थल पर भी होता है और हमारे मल पर भी। हमारा मल-मूत्र या तो विष का रूप ले सकता है या अमृत का। इसका परिणाम किसी सरकार या राजनीतिक पार्टी या किसी नगर निगम की नीति-अनीति भर से तय नहीं होगा। यह विषय सामाजिक शुचिता का है। जल, थल और मल के संबंध का है। *-राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, इंटरनेशनल लॉ सेंटर, 61-63, डॉ. राधाकृष्णन रोड़, मैलापुर, चेन्नई-600004 (तमिलनाडु)*

संथारा अंक पर अभिमत

(1)

'जिनवाणी' का जनवरी का 'संलेखना-संथारा- अंक पढ़ा। इस अंक में साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की सम्पूर्ण जीवनगाथा को जानकर ऐसा लगा कि हम कितने भाग्यशाली हैं जो उनके दर्शन-सेवा का लाभ ले सके। ऐसी महासती का भविष्य में होना बहुत दुर्लभ है। वे सती-मण्डल के लिए प्रेरणा की स्रोत थीं। इस अंक में उनके बारे में जो विभिन्न लेखकों द्वारा जानकारी दी गई है वह अपने आपमें एक इतिहास की रचना करती है कि किस प्रकार जन्म व मृत्यु के बीच के काल को बाल्य अवस्था से समाधि तक जीना चाहिये। उन्होंने इसे सार्थक करके बताया। जिनवाणी का सम्पादक-मण्डल साधुवाद का पात्र है, जिन्होंने इस अंक में एक से एक सारगर्भित लेखों द्वारा महासतीजी के जीवन को हमारे समक्ष रखा है। इस अंक के लिए सभी को बधाई व धन्यवाद। *-सुरेशचन्द कोठारी, संयुक्त मंत्री, लालभवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.)*

(2)

नये, बेहतर और आकर्षक कलेवर के साथ जिनवाणी का जनवरी-2017 का अंक देखकर अच्छा लगा। इंसे पढ़कर लगा कि बाह्य सज्जा के साथ ही आन्तरिक सामग्री को और अधिक उद्देश्यपूर्ण, समयानुकूल और श्रेष्ठतर बनाने की सजगता कायम है। यह प्रयास 'जितना गुड़ डालो, उतना मीठा' करने जैसा है। जिनवाणी का विशाल प्रबुद्ध पाठकवर्ग इसे अवश्य पसन्द करेगा।

यह अंक संलेखना-संथारा विषय को समर्पित किया है। सितम्बर-2015 के बाद यह अंक पुनः संथारे पर है। उस अंक में कुछ जरूरी रह गया, उसकी पूर्ति इस अंक में करने का प्रामाणिक प्रयास दिखा। इसके अलावा श्रद्धेया साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरीजी की अन्तिम आराधना के जीवन्त वर्णन के साथ अनेक अनुभूत और व्यावहारिक तथ्य भी इसमें जुड़े हैं। संलेखना-संथारा विषय पर यह अंक भी सदा सहेजने योग्य, सन्दर्भ योग्य, पठनीय और मननीय है।

यह अंक जिनवाणी के हीरक वर्ष के शुभारम्भ का आगाज़ भी करता है। सम्पादकीय 'जिनवाणी की हीरक यात्रा' खूब चाव से पढ़ा। किसी धार्मिक पत्रिका की शुरुआत तथा विकास-यात्रा का वर्णन सबके लिए आनन्ददायक बनेगा। जिनवाणी की विशिष्ट साख और प्रतिष्ठा के जिन कारणों का उल्लेख किया गया, वे गौर करने और गौरव करने लायक है। अब आगे के अंकों में इस रोचक, प्रेरक, शोधपूर्ण और बोधपूर्ण सम्पादकीय को पढ़ने की प्रतीक्षा रहेगी। स्वप्नदर्शी आचार्य हस्ती की दूरदर्शिता के प्रति हृदय श्रद्धा और कृतज्ञता से भर उठता है।

-डॉ. दिलीप धींग, निदेशकः अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)

जैन आगमों में काल और दूरी के माप

डॉ. (कर्नल) दलपतसिंह बया 'श्रेयस'

आगमों में काल और दूरी के माप

अनादिकाल से ही मानव के लिये काल और दूरी के मापों का महत्त्व रहा है। जैनागमों में वर्णित काल और दूरी के माप इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं कि वे आगम काल में प्रचलित काल एवं दूरी की अवधारणा को प्रस्तुत करते हैं तथा हमें उनके प्रति वैज्ञानिक धरातल पर विचार करने के लिये बाध्य करते हैं। इस आलेख में मेरा यह प्रयास रहेगा कि आगमों में वर्णित माप-प्रणाली को प्रस्तुत करने के साथ ही उनका वर्तमान वैज्ञानिक ज्ञान के आलोक में आकलन भी प्रस्तुत कर सकूँ।

श्वेताम्बर आगमों के अन्तर्गत जम्बूद्वीपपण्णत्ति, औपपातिकसूत्र एवं अनुयोगद्वारसूत्र में तथा दिगम्बर परम्परा के ग्रन्थों में तिलोयपण्णत्ति में इस बारे में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध है।

दूरी का माप

आगमों में दूरी की लघुतम इकाई के रूप में उत्श्लक्ष्ण-श्लक्ष्णिका का उल्लेख प्राप्त होता है जो एक (उत्सेध) अंगुल (1.905 cm) को बारह बार आठ से विभाजित करने पर प्राप्त होती है जिसका वर्तमान में प्रचलित दूरी की इकाई में मान 1.905×8^{-12} cm या 2.771×10^{-13} मीटर होता है।

दूरी की व्यावहारिक इकाइयों के रूप में हमें यवमध्य व अंगुल से लगाकर योजन तक का उल्लेख मिलता है जो कि सभी सामान्य दूरियों को नापने के लिये प्रयुक्त की जाती थीं। तीन प्रकार के अंगुल का उल्लेख प्राप्त होता है- **1. आत्मांगुल-** काल विशेष में पाए जाने वाले मनुष्यों की अंगुलि के पोर का नाप आत्मांगुल कहलाता था जो उसी काल विशेष में व्यावहारिक होता था तथा अलग-अलग व्यक्तियों की अंगुलियों की लम्बाइयों में अंतर पाए जाने के कारण प्रामाणिक भी नहीं था। **2. उत्सेधांगुल-** यह एक मानकीकृत इकाई थी जो एक मानक हाथ (18 इंच) का चौबीसवाँ भाग होती थी। वर्तमान MKS system में इसका मान 1.905 सेन्टीमीटर या 0.01905 मीटर है। **3. प्रमाणांगुल-** बड़ी दूरियों यथा अंतर्देशीय, अंतरद्वीपीय या अंतरमहाद्वीपीय दूरियों को नापने के लिये इस इकाई का प्रयोग होता था जिसका मान 1000 उत्सेधांगुल था। आकाशीय पिण्डों की दूरियों का नाप प्रमाण-योजन को इकाई मानकर तय किया जाता था।

उत्श्लक्ष्ण-श्लक्ष्णिका से लगाकर योजन पर्यंत इकाइयों का परस्पर सम्बन्ध निम्न तालिका में दिखाया गया है-

निम्नतर इकाई	उच्चतर इकाई	वर्तमान इकाई
अनन्त व्यवहार परमाणु	1 उत्श्लक्ष्ण-श्लक्ष्णिका	2.771×10^{-13} M
8 उत्श्लक्ष्ण-श्लक्ष्णिका	1 श्लक्ष्ण-श्लक्ष्णिका	2.217×10^{-12} M
8 श्लक्ष्ण-श्लक्ष्णिका	1 ऊर्ध्वरेणु	1.773×10^{-11} M
8 ऊर्ध्वरेणु	1 त्रसरेणु	1.419×10^{-10} M
8 त्रसरेणु	1 रथरेणु	1.135×10^{-9} M

8 रथरेणु	1 सूक्ष्मातिसूक्ष्म बालाग्र (देवकुरु-उत्तरकुरु के युगलिकों के बालाग्र)	$9.082x10^{-9}$ M
8 सूक्ष्मातिसूक्ष्म बालाग्र	1 अतिसूक्ष्म बालाग्र (हरिवास-रम्यक्वास के युगलिकों के बालाग्र)	$7.266x10^{-8}$ M
8 अतिसूक्ष्म बालाग्र	1 सूक्ष्म बालाग्र (हैमवत-हिरण्यवत के युगलिकों के बालाग्र)	$5.813x10^{-7}$ M
8 सूक्ष्म बालाग्र	1 बालाग्र (पूर्वविदेह-अपरविदेह के युगलिकों के बालाग्र)	$40650x10^{-6}$ M
8 बालाग्र	1 लीख	$3.720x10^{-5}$ M
8 लीख	1 जू	$2.976x10^{-4}$ M
8 जू	1 यवमध्य	$2.381x10^{-3}$ M
8 यवमध्य	1 (उत्सेध) अंगुल	$1.905x10^{-2}$ M
12 अंगुल	1 वितस्ति (बालिश्त)	$2.28x10^{-1}$ M
2 वितस्ति	1 हाथ (18 इंच)	$4.56x10^{-1}$ M
4 हाथ	1 धनुष या दण्ड (6 फीट)	1.824 M
2000 धनुष	1 गव्यूति या कोस	$3.648x10^{3}$ M
4 गव्यूति	1 (उत्सेध) योजन	$1.4592x10^{4}$ M
1000 उत्सेध योजन	1 प्रमाण योजन रज्जु	$1.4592x10^{7}$ M
7 रज्जु	अर्द्धलोक प्रमाण-मध्यलोक से नीचे अधोलोक का विस्तार तथा मध्यलोक से ऊपर उर्ध्वलोक का विस्तार।	रज्जु लोक विस्तार की इकाई है जो इतनी विशाल व कल्पनातीत मानी गई है कि इसका ज्ञान केवल अनंतज्ञानी को ही हो सकता है। (कोलब्रक और आइंस्टीन ने एक रज्जु का मान 10^{18-21} मील (वर्तमान यूनिवर्स के विस्तार का 1/14) आंका है। एक अन्य आकलन के अनुसार इसका मान $3.7x10^{18}$ से $2.4x10^{21}$ KM आंका गया है। तत्त्व केवलिगम्य है।
14 रज्जु	अधोलोक से ऊर्ध्वलोक तक लोक का विस्तार।	

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राचीन काल में भी सूक्ष्म-बादर या छोटी बड़ी सभी प्रकार की दूरियों को नापने के लिए समुचित इकाइयाँ विद्यमान थीं जिससे उस प्रागैतिहासिक काल में भी इस भूभाग में वैज्ञानिक उपलब्धियों का अनुमान लगाया जा सकता है। हाँ, यह अवश्य है कि रज्जू जैसी कुछ अतिविशाल एवं कल्पनातीत या अकल्पनीय

इकाइयों को वर्तमान में वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है तथा इस बारे में अनुसंधान की अपार संभावनाएँ छिपी हुई हैं। यह क्षेत्र जिज्ञासु अनसंधित्सुओं के लिये खुला है।

वर्तमान में दूरी की न्यूनतम इकाई पीको मीटर (10^{-12} M) तथा अधिकतम इकाई के रूप में प्रकाश-वर्ष का प्रयोग होता है, जो सुज्ञात है।

काल का माप

काल के माप की जैनागमों में वर्णित प्रणाली अत्यन्त सूक्ष्म (कल्पनातीत) से अत्यन्त विशाल (कल्पनातीत) की ओर इंगित करती है। इनके समरूप ही नहीं, अपितु इनके समीप भी और कोई प्रणाली अन्यत्र कहीं दिखाई नहीं देती है। जैनागम सम्मत काल की लघुतम इकाई 'समय' है जो इतनी सूक्ष्म है कि एक प्राण (1 उच्छवास एवं 1 निश्वास) में अनेक (4446) आवलिकाएँ (क्षण) तथा एक आवलिका (एक अनुमान के अनुसार 1.72×10^{-4} Sec) में भी असंख्यात समय व्यतीत हो जाते हैं। काल के माप को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है- 1. संख्यात काल जो गणनाधारित है। इसमें आवलिका से लगाकर शीर्षप्रहेलिका तक के काल की गणना उपलब्ध है 2. असंख्यात काल जो गणनातीत होते हुए भी उपमाधारित होने से उपमाओं द्वारा समझा-समझाया जाता है। इसमें पल्य व सागर की उपमाओं से पल्योपम व सागरोपम काल को व्याख्यायित किया गया है तथा 3. अनन्त काल जो गणना तथा उपमा दोनों से परे अगणनीय तथा अनुपम है।

संख्यात अथवा गणनीय काल

आवलिका से लगाकर शीर्षप्रहेलिका तक के काल की गणना निम्न तालिकानुसार है-

निम्नतर इकाई	उच्चतर इकाई	वर्तमान इकाई
असंख्यात समय	1 आवलिका	1.72×10^{-4} S
2223 आवलिका	1 उच्छ्वास अथवा 1 निःश्वास	3.8166×10^{-1} S
1 उच्छ्वास तथा 1 निःश्वास	1 प्राण (4446 आवलिका)	7.6332×10^{-1} S
7 प्राण	1 स्तोक	3.73464 S
7 स्तोक	1 लव	26.14248 S
77 लव	1 मुहूर्त्त	2880S या 48Minutes
30 मुहूर्त्त	1 दिन-रात	24 H
15 दिन-रात	1 पक्ष	-
2 पक्ष	1 मास	-
2 मास	1 ऋतु	-
3 ऋतु	1 अयन	-
2 अयन	1 वर्ष	1 Y
5 वर्ष	1 युग	5 Y
20 युग	1 वर्ष-शत	10^2 Y
1000 वर्ष-शत	1 लाख वर्ष	10^5 Y
84 लाख वर्ष	1 पूर्वांग	84×10^5 Y
84 लाख पूर्वांग	1 पूर्व (7056×10^{10} Y)	$84^2 \times 10^{10}$ Y

84 लाख पूर्व	1 त्रुटितांग	$84^3 x 10^{15} Y$
84 लाख त्रुटितांग	1 त्रुटित	$84^4 x 10^{20} Y$
84 लाख त्रुटित	1 अडडांग	$84^5 x 10^{25} Y$
84 लाख अडडांग	1 अडड	$84^6 x 10^{30} Y$
84 लाख अडड	1 अववांग	$84^7 x 10^{35} Y$
84 लाख अववांग	1 अवव	$84^8 x 10^{40} Y$
84 लाख अवव	1 हुहुकांग	$84^9 x 10^{45} Y$
84 लाख हुहुकांग	1 हुहुक	$84^{10} x 10^{50} Y$
84 लाख हुहुक	1 उत्पलांग	$84^{11} x 10^{55} Y$
84 लाख उत्पलांग	1 उत्पल	$84^{12} x 10^{60} Y$
84 लाख उत्पल	1 पद्मांग	$84^{13} x 10^{65} Y$
84 लाख पद्मांग	1 पद्म	$84^{14} x 10^{70} Y$
84 लाख पद्म	1 नलिनांग	$84^{15} x 10^{75} Y$
84 लाख नलिनांग	1 नलिन	$84^{16} x 10^{80} Y$
84 लाख नलिन	1 अर्द्ध-निपुरांग	$84^{17} x 10^{85} Y$
84 लाख अर्द्ध-निपुरांग	1 अर्द्ध-निपुर	$84^{18} x 10^{90} Y$
84 लाख अर्द्ध-निपुर	1 अयुतांग	$84^{19} x 10^{95} Y$
84 लाख अयुतांग	1 अयुत	$84^{20} x 10^{100} Y$
84 लाख अयुत	1 नयुतांग	$84^{21} x 10^{105} Y$
84 लाख नयुतांग	1 नयुत	$84^{22} x 10^{110} Y$
84 लाख नयुत	1 प्रयुतांग	$84^{23} x 10^{115} Y$
84 लाख प्रयुतांग	1 प्रयुत	$84^{24} x 10^{120} Y$
84 लाख प्रयुत	1 चूलिकांग	$84^{25} x 10^{125} Y$
84 लाख चूलिकांग	1 चूलिका	$84^{26} x 10^{130} Y$
84 लाख चूलिका	1 शीर्ष-प्रहेलिकांग	$84^{27} x 10^{135} Y$
84 लाख शीर्ष-प्रहेलिकांग	1 शीर्ष-प्रहेलिका (महत्तम गणनीय काल)	$84^{28} x 10^{140} Y$*

* यह गणना अनुयोगद्वारसूत्र तथा जम्बूद्वीपपण्णत्ति के अनुसार है। अन्य वर्णन के अनुसार पूर्वांग से 31वें स्तर पर अचलात्मा नामक इकाई है जिसका मान $84^{31} x 10^{155} Y$ है तथा ज्योतिष्करंडक के अनुसार शीर्ष-प्रहेलिका पूर्वांग से 36वें स्तर पर है तथा इसका मान $84^{36} x 10^{180} Y$ है।

असंख्यात अथवा औपमिक काल

जैनागमों में असंख्यात काल को उपमा के माध्यम से व्याख्यायित किया गया है। उपमा का आधार पल्य है, जिसका मान 1 उत्सेधयोजन लम्बाई, 1 उत्सेधयोजन चौड़ाई तथा 1 उत्सेधयोजन गहराई का गड्ढा है। इस गड्ढे को यदि युगलिकों के 1 से सात दिनों के नवजात शिशुओं के बालाग्रों से कूट-कूट कर भरा जाए तथा

प्रतिसमय एक बालाग्र निकाला जाए तो जितने काल में वह गड्ढा पूरी तरह से खाली होगा वह एक व्यवहार उद्धार-पल्योपम होगा। यदि प्रति सौ वर्षों में एक बालाग्र निकाला जाए तो जितने काल में वह गड्ढा पूरी तरह से खाली होगा वह एक व्यवहार अद्धा-पल्योपम होगा।

यदि प्रत्येक बालाग्र के असंख्य खण्ड किये जाएँ तथा प्रतिसमय अथवा प्रति 100 वर्ष उपर्युक्तानुसार निकाले जाएं तो क्रमशः सूक्ष्म उद्धार पल्योपम तथा सूक्ष्म अद्धा पल्योपम काल प्राप्त होंगे। इसके अतिरिक्त एक क्षेत्र-पल्योपम का उल्लेख भी प्राप्त होता है।

दस कोटा-कोटि ($10x10^{14}=10^{15}$) अद्धा पल्योपम का एक अद्धा सागरोपम होता है। दस कोटा-कोटि ($10x10^{14}$) अद्धा सागरोपम का एक उत्सर्पिणी काल होता है। दस कोटा-कोटि ($10x10^{14}$) अद्धा सागरोपम का एक अवसर्पिणी काल होता है।

एक उत्सर्पिणी काल तथा एक अवसर्पिणी काल का अर्थात् बीस कोटा-कोटि ($20x10^{14}$) अद्धा सागरोपम का एक कालचक्र होता है।

कालचक्र के दो भागों-अवसर्पिणी काल एवं उत्सर्पिणी काल को पुनः छह आरकों में विभाजित किया गया है, जिनका मान निम्न लिखित तालिका में दिया गया है-

अवसर्पिणी काल		उत्सर्पिणी काल	
आरक	कालमान	आरक	कालमान
1. सुषमा-सुषमा	4 कोटाकोटि सागरोपम	1. दुषमा-दुषमा	21000 वर्ष
2. सुषमा	3 कोटाकोटि सागरोपम	2 .दुषमा	21000 वर्ष
3. सुषमा-दुषमा	2 कोटाकोटि सागरोपम	3. दुषमा-सुषमा	42000 वर्ष कम 1 कोटाकोटि सागरोपम
4. दुषमा-सुषमा	42000 वर्ष कम 1 कोटाकोटि सागरोपम	4. सुषमा-दुषमा	2 कोटाकोटि सागरोपम
5. दुषमा	21000 वर्ष	5.सुषमा	3 कोटाकोटि सागरोपम
6. दुषमा-दुषमा	21000 वर्ष	6.सुषमा-सुषमा	4 कोटाकोटि सागरोपम

अनन्त काल

अनन्त काल की कोई व्याख्या नहीं हो सकती है। जैनागमों के अनुसार अब तक अनन्त कालचक्र व्यतीत हो चुके हैं तथा भविष्य में भी अनन्त कालचक्र होंगे।

वर्तमान में काल की न्यूनतम इकाई के रूप में पीको सैकण्ड (10^{-12} S) तथा अधिकतम इकाई के रूप में सहस्राब्दी (Millennium) का प्रयोग होता है।

उपसंहार

जैनागमों में काल व दूरी की जो इकाइयाँ वर्णित हैं, उनका वर्तमान में प्रचलित वैज्ञानिक इकाइयों के साथ सामंजस्य बिठाना एक बड़ी चुनौती है। मान्यता के अनुसार सर्वज्ञ कथित इन इकाइयों को कपोल-कल्पना कहकर नजरअंदाज करना भी उचित नहीं होगा। अतः जैन विद्वानों तथा वैज्ञानिकों के लिये इनका अनुसंधान करना एक कर्त्तव्य है। कुछ प्रयास हुए हैं, परन्तु वे विचारशील जिज्ञासुओं को संतुष्ट नहीं कर पाए हैं। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी गहन अनुसंधान होते रहेंगे जब तक कि एक सर्वमान्य एवं विज्ञानाधारित हल प्राप्त न हो जाए। (जिनवाणी, नवम्बर-2008 से गृहीत)

-ई 26, भूपालपुरा, उदयपुर-313001 (राज.)

ग्लोबल वार्मिंग का कारण : मांसाहार

डॉ. धर्मेन्द्रकुमार कांकरिया

भूमण्डलीय तपन या 'ग्लोबल वार्मिंग' पृथ्वी की पारिस्थितिकी (इकोलॉजी) के लिए भयंकर त्रासदी बनकर उभर रही है। मानवीय गतिविधियों और क्रियाकलापों के कारण औद्योगिक क्रान्ति प्रारम्भ होने के बाद वायुमण्डल में कार्बनडाइऑक्साइड और मीथेन की मात्रा लगातार बढ़ती जा रही है। लगभग 30 गैसें भूमण्डलीय तपन को बढ़ा रही हैं, जिनमें उपर्युक्त दो गैसें प्रमुख हैं। औद्योगिक विकास और अन्य मानवीय गतिविधियों के कारण 18 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से फौसिल ईंधन के बढ़ते दहन, जनसंख्या में अभूतपूर्व वृद्धि, मांसाहार के लिए पशुपालन और उनके भोजन का प्रबंध करने के लिए वृक्षों की द्रुतगति से निरन्तर कटाई के कारण कार्बनडाइऑक्साइड और मीथेन की मात्रा में क्रमशः 25 प्रतिशत और 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसके कारण पर्यावरण और मौसम की दशा और दिशा में व्यापक परिवर्तन हो रहे हैं और फलस्वरूप सारे विश्व में वैज्ञानिक चिंतित हैं, अत्यन्त आशंकित है। अमेरिका के भूतपूर्व उपराष्ट्रपति अल्गोरे ने एक 'इन्कन्वीनियेण्ट ट्रुथ' नामक पुस्तक लिखी है और उस पर आधारित फिल्म का सारे विश्व में प्रदर्शन किया जा रहा है। परिणामस्वरूप सभी जगह इस समस्या का प्रकम्पन मनुष्य समाज के विभिन्न वर्गों को विचलित कर रहा है। अन्य लोगों ने भी अपने-अपने स्तर पर इस दिशा में सार्थक प्रयत्न किये हैं, जिनमें अल्गोरे साहब का प्रयास विशेष उल्लेखनीय है।

ग्लोबल वार्मिंग का कारण समझना आवश्यक है, क्योंकि इससे सारी मानवता और पृथ्वी के पर्यावरण पर व्यापक कुप्रभाव पड़ने का अंदेशा केवल कल्पना की वस्तु नहीं रही। औद्योगिक क्रान्ति 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में प्रारम्भ हुई। उस समय वायुमण्डल में कार्बनडाइऑक्साइड की मात्रा 280 पीपीएम थी जो सन् 2005 में बढ़कर 380 पीपीएम हो गई। यह आकलन किया गया है कि यदि हमने अपने तौर तरीके नहीं बदले और फौसिल ईंधनों के दहन की गति बढ़ती रही तो लगभग 50 वर्ष के अंतराल में कार्बनडाइऑक्साइड की मात्रा 600 पीपीएम पार कर जाने की संभावना है। इसी प्रकार मीथेन और अन्य ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा भी निरन्तर बढ़ने की संभावना है। मानवीय क्रियाकलापों के कारण जैसे कोयला, तेल, गैस का ज्वलन और वृक्षों की बेहिसाब और निर्मम कटाई के कारण इन ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा द्रुतगति से बढ़ रही है। इसके लिए विश्व स्तर पर जो प्रयास किये जा रहे हैं वे अभी तक सतही ही सिद्ध हुए हैं।

वृक्ष फोटो सिंथेसिस प्रक्रिया से कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और वायुमण्डल में ऑक्सीजन का उत्सर्जन करते हैं। यह निरन्तर चलने वाली प्रकिया वनों की कटाई के कारण गंभीर रूप से बाधित हुई है। इसका दुष्परिणाम है कि 0.5 से 0.9 डिग्री सेंटीग्रेड ताप में वृद्धि हुई है और यदि यही क्रम चलता रहा तो सन् 2100 तक तापमान में 1.4 से 5.8 डिग्री सेंटीग्रेड की वृद्धि होगी। इसके दूरगामी दुष्परिणाम सारे विश्व को झेलने पड़ेंगे।

शुक्र (वीनस) ग्रह के वातावरण में अत्यधिक कार्बनडाइऑक्साइड की उपस्थिति से इतनी अधिक तपन होती है कि वहाँ किसी जीवन का अस्तित्व संभव नहीं है। मंगल (मार्स) ग्रह में ग्रीन हाउस गैसों के अभाव में वातावरण निरन्तर अतिशीतल रहता है, जिसके कारण वहाँ भी किसी प्रकार के जीवन का अस्तित्व संदिग्ध है। कुछ ऐसा संयोग बैठा है कि पृथ्वी के वातावरण में उचित मात्रा में ग्रीन हाउस गैसों की उपस्थिति के कारण औसत

तापमान लगभग 37 डिग्री सेण्टीग्रेड रहता है और इसके कारण यहाँ की पारिस्थितिकी में भिन्न-भिन्न प्रकार का जीवन संभव हो सका है। इसी कारण पृथ्वी को 'गोल्डीलोक्स' प्लेनेट कहा जाता है। यह मानना पड़ता है कि पृथ्वी अपने आप में विशिष्ट है और इसकी सुरक्षा करना हमारा पवित्र कर्त्तव्य है। अनेक व्यक्ति भूलवश यह सोचते हैं कि पृथ्वी इतनी बड़ी है कि हमारा कोई भी कार्यकलाप पृथ्वी की इकोलॉजी को स्थायी हानि नहीं पहुँचा सकता। परन्तु बढ़ती हुई जनसंख्या और तकनीकी प्रगति के कारण उपलब्ध साधनों की बहुलता और विविधता इस धारणा को एकदम गलत सिद्ध कर देते हैं, क्योंकि पृथ्वी के वायुमण्डल, वातावरण और समग्र पारिस्थितिकी पर भयंकर कुप्रभाव दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

गो-माँस उत्पादन के लिए यह आकलन किया गया है कि सारे विश्व में गायों की संख्या 1400 करोड़ से अधिक है। यह संख्या मानव जनसंख्या की तुलना में दुगुनी से अधिक है। प्रत्येक गाय अपानवायु के रूप में और अन्य प्रकार से लगभग 45 किलो मीथेन गैस का प्रतिवर्ष उत्सर्जन करती है। इस प्रकार देखा जाय तो गो-माँस उत्पादन के लिए पशुपालन 'ग्लोबल वार्मिंग' का महत्त्वपूर्ण कारण है, जिसके ऊपर विचार करना और ध्यान देना आवश्यक है। मीथेन गैस कार्बनडाइऑक्साइड की तुलना में ग्रीन हाउस गैस की तरह लगभग 25 गुनी अधिक सशक्त है। एक स्वाभाविक प्रश्न यह उठता है कि मीथेन गैस के उत्सर्जन की, नापने की और आकलन की प्रयोगात्मक विधि अपनाई जाती है। इसके लिए गायों को 'फ्लेक्सी' ग्लास के कठघरे में रखकर कितनी मीथेन गैस का उत्सर्जन हुआ, इसकी गणना की जाती है और इसलिए यह नापने की वैज्ञानिक प्रक्रिया संदेह में नहीं है। अनेक लोग ग्लोबल वार्मिंग के इस पहलू से परिचित नहीं हैं। माँसाहार के लिये सघन पशुपालन किया जाता है और पशुओं की विष्ठा और मूत्र भीमकाय साइलो में संगृहीत रखा जाता है। सीमित स्थान के कारण इनका जैविक उर्वरक की तरह उपयोग तकनीकी और आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद नहीं होता। इन भीमकाय पात्रों में सड़न के कारण मीथेन गैस बराबर बनती रहती है। यह माँसाहार का दुःखद पहलू है। कई बार दुर्घटना के कारण ये संगृहीत दूषित पदार्थ बह निकलते हैं और नदियों में जल-प्रदूषण का बड़ा कारण बनते हैं। मोटे तौर पर यह अंदाज लगाया गया है कि मीथेन गैस के कारण ग्लोबल वार्मिंग का 17 से 20 प्रतिशत योगदान है। सूअर और माँसाहार के लिए पाले गये अन्य पशु भी मीथेन गैस के उत्पादन के निमित्त हैं।

मानव जनसंख्या की वृद्धि के कारण और विकासशील देशों में बढ़ते माँसाहार के कारण ग्लोबल वार्मिंग का यह पहलू निरन्तर महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है। यह बात सच है कि अमेरिका, इंग्लैण्ड, जर्मनी इत्यादि विकसित देशों में स्वास्थ्य, पर्यावरण और नैतिक मूल्यों के आधार पर शाकाहार की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत बलवती हो रही है। पूरी जानकारी के अभाव में विकासशील देशों द्वारा माँसाहार अपनाना तथा उसे स्वास्थ्य और प्रगति का सूचकांक मानना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। यथोचित जानकारी का अभाव और अज्ञान के कारण इस त्रासदी की विकटता बढ़ रही है। इकोलॉजी पर इसके दुष्परिणाम घटित हुए हैं, जो काफी चिन्ताजनक हैं।

गो-माँस के लिए पशुपालन और मीथेन गैस का उत्पादन समस्या का एक अहम पहलू है। दो देश अमेरिका और कनाडा विश्व की दो तिहाई मीथेन गैस उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार हैं। इसका मुख्य घटक गो-माँस का भक्षण है। पशुओं के लिए खाद्य पदार्थ उगाने के लिए जमीन उपलब्ध करने हेतु ट्रोपिकल वर्षावनों की कटाई हो रही है। 32 हेक्टेयर(80 एकड़) हरित-वन प्रति मिनट की गति से काटे जा रहे हैं और गत 60 से 70 वर्षों में ट्रोपिकल वर्षावनों की कटाई के कारण सारे विश्व के लिए एक भयानक त्रासदी तीव्र गति से घटित हो रही है। इसके कारण सारी मानवता और पृथ्वी की पारिस्थितिकी(इकोलॉजी) के सभी घटक बुरी तरह से प्रभावित हो रहे हैं। इस प्रक्रिया के कारण समृद्ध ट्रोपिकल वर्षावन का क्षेत्रफल प्रारम्भिक 1500 करोड़ हेक्टेयर से काफी घट गया है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के फूड और एग्रीकल्चर आर्गेनाइजेशन (एफ.ए.ओ.) ने यह आकलन प्रस्तुत किया है कि प्रतिवर्ष 1140 लाख हेक्टेयर वर्षा वन काटे जाते हैं। उपग्रह तस्वीरों से इस प्रक्रिया की भयानकता और अधिक उजागर हुई है। प्रतिवर्ष वृक्षों की कटाई की गति बढ़ रही है और विश्व के अनेक देशों जैसे इंडोनेशिया, थाईलैण्ड, मलेशिया, बांग्लादेश, चीन, श्रीलंका लाओस, नाईजीरिया, लाइबेरिया, गिनी, घाना, फिलीपिन्स में 50 से 80 प्रतिशत वनों की कटाई हो चुकी है। ट्रोपिकल वर्षा वनों की कटाई के कारण लेटिन अमेरिका में 37 प्रतिशत, एशिया में 42 प्रतिशत और अफ्रीका में 52 प्रतिशत वन समाप्त हो गये हैं।

वर्षा वनों के विषय में यह जानकारी आवश्यक है कि अन्य वनों की तुलना में वे भिन्न होते हैं और इन्हें 'हरा मरुस्थल' कहा जाता है। इन वनों की मृदा में पोषक तत्त्वों का अपेक्षाकृत अभाव होता है। कालान्तर में इन वनों का तंत्र इस तरह विकसित हुआ है कि वृक्ष और पौधे सब तरफ फैलते हैं, परन्तु इनकी जड़ें गहरी नहीं होती। अपने स्थान में ये पेड़ पौधे गिरने वाले पत्तों और अपशिष्ट उत्पादों से अपना पोषण प्राप्त करते हैं और इस तरह इनका अपना अलग तंत्र बन गया है। एक बार कटने के बाद मृदा का तेजी से ह्रास होता है और बरसात होने पर इस वृक्ष-रहित भूमि से प्रति हेक्टेयर 185 टन तक सतही मृदा बह जाती हैं। वर्षा बंद होने के बाद जब सूर्य तपता है तो यह खुली भूमि लाल रंग की लेटेरिटिक संहति में बदल जाती है। इस तरह से निर्जीव हुई मृदा में आगे चलकर कोई वनस्पति नहीं उगती। इसका अर्थ यह हुआ कि वर्षावनों की कटाई के बाद इस जटिल प्रक्रिया के फलस्वरूप सारी जमीन बंजर हो जाती है और तपने के बाद एक मरुस्थल के समान ऊष्मा को परावर्तित करती है। स्पष्ट है इससे ग्लोबल वार्मिंग की भयानकता बढ़ती है। हरित भूमि से ऊष्मा का परावर्तन बहुत घट जाता है और अच्छे वृक्ष तो एयर कण्डीशनर की तरह शीतलन का कार्य करते हैं। पेड़ों की कटाई से इस प्रकार दुगुनी हानि होती है।

वर्षावनों की कटाई की प्रकिया भी अपने आप में बहुत विनाशकारी है। दृढ़ काष्ठ(हार्डवुड) की खोज में लट्ठक (लागर्स) कुछ वृक्षों की कटाई करते हैं और फिर मशीन द्वारा उन्हें खींचकर वन से बाहर लाते हैं। बड़ी विचित्र स्थिति यह है कि इस तरह के दृढ़ काष्ठ के वृक्षों की संख्या जिनका व्यावसायिक महत्त्व है एक हेक्टेयर में दो या तीन से अधिक नहीं होती और निर्यात के लिये इनको खींचने और बाहर निकालने से बचे हुए वृक्षों का एक तिहाई से दो तिहाई भाग काफी हानि भुगतता है। जो वृक्ष आहत हो जाते हैं, उन्हें कई देशों में जला दिया जाता है। उदाहरण के लिए थाईलैंड और सारावाक में प्रति वर्ष 15 करोड़ डालर मूल्य की लकड़ी जलाकर नष्ट की जाती है और इस तरह काफी मात्रा में कार्बनडाइऑक्साइड गैस का उत्सर्जन होता है। ब्राजील(दक्षिण अमेरिका)में इस प्रकार लकड़ी जलाने से ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन सभी विकासशील देशों का लगभग 50 प्रतिशत है।

वृक्षों की कटाई और जलने के बाद गरीब किसान परिवार इन क्षेत्रों में जीविका के लिए कुछ फसल उगाते हैं। परन्तु दुर्भाग्यवश यह केवल दो तीन बार पैदावार के लिए ही संभव होता है और बाद में कृषि का कार्य बंद कर देना पड़ता है, क्योंकि वह लाभदायक उत्पादन नहीं रहता। यह भूमि पशुपालकों को घास उगाने के लिए बेच दी जाती है और इस प्रकार अल्पकाल में ही यह वृक्षविहीन भूमि बंजर हो जाती है। मध्य अमेरिका में इस प्रकार कई लाख हेक्टेयर वन भूमि सस्ता गो माँस उपलब्ध कराने के लिए नष्ट हो गई है और यह प्रकिया सारे विश्व की व्यथा गाथा है।

ट्रोपिकल वर्षावन जल-प्रवाह को नियंत्रित करते हैं, जलवायु को संतुलित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और ऑक्सीजन के उत्सर्जन एवं उत्पादन में प्रभावी योगदान करते हैं। इन वनों की कटाई के कारण सारी प्रक्रियाएँ इतनी अधिक विखंडित हो रही हैं कि जिससे सारे विश्व की जलवायु प्रचण्ड रूप से असंतुलित हो रही है। वर्षा वन सर्वाधिक पुरातन और अनेक प्रकार के आनुवंशिक संसाधनों के अनुपम भंडार हैं। इन वर्षा वनों को बचाने की वार्ता और छुटपुट प्रयत्न कई देशों में प्रारम्भ किये गये हैं। प्रभावित अधिकांश देश आर्थिक रूप से इतने दीन हीन

हैं कि वनों की कटाई और विकसित देशों के लिये गोमाँस के अलावा कोई अन्य विकल्प इन्हें आकर्षित नहीं करते। वर्षावनों का विकास पृथ्वी के लिए बड़ी दुःखान्तिका बन रही है, जिसकी कल्पना मात्र भी दिल दहला देती है। पृथ्वी की इकोलॉजी बार-बार चेतावनी देकर सँभलने का संदेश दे रही है।(जिनवाणी, मई-2008 से गृहीत)

-सोसायटी फॉर साइन्टिफिक एण्ड एथिकल लिविंग,
प्राकृत भारती अकादमी, 13ए-मेन मालवीय नगर, जयपुर (राज.)

न इन्कार कर, न इकरार कर

श्री रणजीतसिंह कूमट

न इन्कार कर न इकरार कर,
जो है उसे स्वीकार कर,
न कुछ पकड़ो, न कुछ छोड़ो,
उन्मुक्त रहो सब मान्यता और सिद्धान्तों से,
दुःख और सुख आने जाने हैं,
इनसे न राग कर न द्वेष कर,
समता से सब स्वीकार कर।

न इन्कार कर न इकरार कर,
जीना है सुख से और बिना द्वन्द्व के,
तो सहजता से जी,
न मोह कर न माया में फँस,
इन्द्रियों और इच्छाओं पर कर नियंत्रण,
जीना है सुख से तो अनासक्त बन।

न पत्थर बन न पत्थर पूज,
न किसी को संतप्त कर न किसी का प्रताड़न कर,
दे न सके किसी को तो किसी का कुछ न हर,
लेना है किसी का तो उसका दुःख हर,
दिल दिया है भगवान ने,
करुणावान बन कर जी,
जीना है सुख से तो सबको सुखी कर के जी।

जीना है तो नदी की तरह बह कर जी,
मार्ग दुर्गम हो या सुगम,
पहाड़ हो या मैदान,
बहती अपने स्वभाव से,
न रुकती है, न ठहरती है,
बनाती है रास्ता अपने लक्ष्य तक पहुँचने का,
मंद या तेज, बहती है निरंतर,
जीना है तो स्वभाव से चल अविरल और अविराम।

जीना है तो वृक्ष सा जी,
काटने वाले पर क्रोध नहीं,
पानी पिलाने वाले से नेह नहीं,
सहता खुद धूप और औरों को देता छाँव,
पत्थर मारो तो देता है फल,
न किसी पर क्रोध न किसी से मोह,
समता से रहना है तो वृक्ष से सीखो
न इन्कार करो न इकरार करो,
जीना है सुख से तो वस्तु-स्वभाव स्वीकार करो।

-मुम्बई (महा.)

प्रिय निवेदन

जिनवाणी मासिक पत्रिका के सन् 1944 से 1949 तथा सन् 1963 से 1966 के अंक यदि किसी सज्जन के पास या पुस्तकालय में उपलब्ध हों तो मोबाइल नं. 094132-53084 पर सूचित करें। यदि मूल अंक उपलब्ध हों तो अत्युत्तम, अन्यथा फोटोफापी उपलब्ध हो तो भी निम्नांकित पते पर प्रेषित करने की कृपा करें। सम्बद्ध व्यय का भुगतान कर दिया जाएगा।-**डॉ. धर्मचन्द जैन**, जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

ज्योतिष विद्या के विकास में जैन आगम-ग्रंथों का योगदान

श्री राधाकृष्ण शर्मा

सृष्टि के आदिकाल से ही प्राणी जिज्ञासु रहा है और भविष्य में रहेगा भी। सूर्य, चन्द्रमा एवं अन्य नक्षत्र मनुष्य के लिए कौतूहल के विषय रहे हैं। वह उत्सुक रहा है इन पर पड़े रहस्य के पर्दे को हटाने के लिए। वह यह जानना चाहता है कि ग्रह क्यों भ्रमण करते हैं, दिन-रात किस प्रकार बनते हैं, इस भ्रमण का मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। पूर्णिमा को समुद्र-जल में तीव्र उद्वेलन क्यों होता है तथा पूर्णिमा के ही आस-पास पागल अधिक क्यों विक्षिप्त हो उठते हैं? इस प्रकार की जिज्ञासा ने मनुष्य को ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन के लिए प्रेरित किया।

जिस समय आज का खेतांग विश्व सभ्यता का क ख सीख रहा था एवं आधुनिक विज्ञान कल्पनातीत था भारतीय मनीषियों ने अपने दिव्यज्ञान एवं सक्रिय साधना द्वारा उस काल में ज्यातिष शास्त्र की अनेक गुत्थियों को सुलझाया। यह हमारा दुर्भाग्य है कि आज पाश्चात्त्य सभ्यता के रंग में आकण्ठ डूबे कुछ लोग इस विज्ञान को विदेशी देन बतलाते हैं। प्राचीन ग्रंथों का मंथन करने पर उक्त धारणा निर्मूल सिद्ध होती है।

भारतीय विज्ञान के विकास में इतर धर्मावलम्बियों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने वाले जैनाचार्यों का भी महत्त्वपूर्ण हाथ रहा है। उनके लिखे ग्रंथ आज भी अमर है तथा ज्ञान के प्रकाश से दैदीप्यमान हैं। जैनाचार्यों द्वारा रचित ज्योतिष ग्रंथों से भारतीय ज्योतिष में अनेकानेक नवीन बातों का समावेश तथा प्राचीन सिद्धान्तों में परिमार्जन हुए हैं। जैन ग्रंथों की मदद के बिना भारतीय ज्योतिष के विकासक्रम को समझना नितान्त दुष्कर कार्य है।

प्रश्न है कि ज्योतिष का शृंखलाबद्ध ज्ञान और इतिहास हमें किस समय से उपलब्ध होता है? आर्यभट्ट से यद्यपि हमें क्रमिक ज्योतिष इतिहास उपलब्ध होता है, पर इसके पूर्व भी वेद, अंग साहित्य, ब्राह्मण, सूर्य प्रज्ञप्ति, गर्गसंहिता, ज्योतिषकरण्डक तथा वेदांगज्योतिष प्रभृति ग्रंथों में तत्सम्बन्धी ज्योतिष ज्ञानगंगा बहती नज़र आती है। वेदांग ज्योतिष में पंचवर्षीय युग पर से उत्तरायण और दक्षिणायण के तिथि-नक्षत्र एवं दिनमान का साधन किया गया है। इसके मतानुसार युगारम्भ माघ शुक्ला प्रतिपदा के दिन सूर्य एवं चन्द्रमा के घनिष्ठा नक्षत्र सहित क्रान्तिवृत्त में पहुँचने पर होता है। उक्त ग्रंथ ईसापूर्व का माना जाता है तथा इसके रचनाकाल का पता लगाने के लिए जैन-ज्योतिष को ही पृष्ठ भूमि में स्वीकारा गया है। वेदांग ज्योतिष पर उसके पूर्ववर्ती और समकालीन ज्योतिष्करण्डक, सूर्य-प्रज्ञप्ति एवं षट् खण्डागम में फुटकर उपलब्ध ज्योतिष चर्चा का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। 'हिन्दुत्व' के लेखक ने लिखा है- ''भारतीय ज्योतिष में यूनानियों की शैली का प्रचार विक्रमीय संवत् से 300 वर्ष पीछे हुआ। पर जैनों के मूल ग्रंथ अङ्गों में यवन ज्योतिष का कुछ भी आभास नहीं है। जिस प्रकार सनातनियों की वेद संहिता में पंच वर्षात्मक युग है और कृतिका से नक्षत्र गणना है उसी प्रकार जैनों के अंग ग्रंथों में भी। (हिन्दुत्व, पृ. 581)

डॉ. श्यामशास्त्री ने वेदांग ज्योतिष की भूमिका में लिखा- ''वेदांग ज्योतिष के विकास में जैन ज्योतिष का बड़ा भारी सहयोग है, बिना जैन ज्योतिष के अध्ययन के वेदाङ्ग ज्योतिष का अध्ययन अधूरा है। भारतीय प्राचीन ज्योतिष में जैनाचार्यों के सिद्धान्त अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण हैं।'' पंचवर्षात्मक युग का सर्वप्रथम उल्लेख जैन ग्रंथों में ही आता है। काललोकप्रकाश, ज्योतिषकरण्डक और सूर्य प्रज्ञप्ति में जिस पंचवर्षात्मक युग का निरूपण किया है, वह वेदांग ज्योतिष के युग से भिन्न व प्राचीन है।

सूर्य प्रज्ञप्ति में कहा है- ''श्रावण कृष्ण प्रतिपदा के दिन अभिजित् नक्षत्र में पंचवर्षीय युगारम्भ होता है।'' प्राचीन जैनागम में ज्योतिषी के लिए 'जोइसंगविउ' का प्रयोग हुआ है। 'प्रश्नव्याकरण सूत्र' में कहा है-

"तिरियवासी पंचविहा जोइसिया देवा, वहस्वती चन्द, सूर, सुक्क, सणिच्छरा, राहु, धूमकेउ, बुद्धाय, अंगारगाय, तक्षतवणिज्ज कण्णगवण्णा जेयगहा जो-इसियंमि चारं चरइ, केतुय गतिरतीया। अट्ठावीसतिविहायणक्खतरेवगणा णाणासंट्ठाणसंठिया ओ य तारगाओ ठियलेस्सा चारिणो य।" इससे स्पष्ट है कि नवग्रहों का प्रयोग ग्रह के रूप में ईसवी पूर्व तीसरी शती से भी पहले जैनों में प्रचलित था। ज्योतिष करण्डक का काल ई.पू. चौथी शताब्दी निश्चित है। उसमें लग्न का जो निरूपण किया है, उससे भारतीय ज्योतिष की कई नवीन बातों का ज्ञान होता है।

"लग्गं च दक्षिणायविसुवे सुवि अस्स उत्तरं अयणे।
लग्गं साई विसुवेसु पंचसु वि दक्खिणे अयणे।।"

'अस्स' अर्थात् 'अश्विनी' एवं 'साई' अर्थात् 'स्वाति' से विषुव के लग्न बताए गये हैं। ज्योतिषकरण्डक में विशिष्ट अवस्था के नक्षत्रों को भी लग्न कहा गया है। यवनाक्रमणों के पूर्व भारत में उक्त जैन प्रणाली ही प्रचलित थी। वेदांग ज्योतिष में भी लग्न प्रणाली का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है-'श्रविष्ठाभ्यां गुणाभ्यस्तान् प्राविलग्नान् विनिदिशेत् ।' इसमें वर्तमान लग्नों का अर्थात् लग्न नक्षत्र का निरूपण किया गया है।

जैन ज्योतिष की प्राचीनता का एक प्रमाण पंचवर्षात्मक युग में व्यतिपात आनयन की प्रक्रिया है। वेदांग ज्योतिष से पूर्व भी यह प्रक्रिया थी, जो इस प्रकार है-

गणित क्रिया- 72 व्यतिपात में 124 पर्व होते हैं तो 1 व्यतिपात में क्या? ऐसा अनुपात करने पर 124 x1/72=1, 52/72x15=10, 60/72 तिथि 60/72x30/1=25 मुहूर्त। व्यतिपात ध्रुव राशि की पटिका 1 युग में निम्न आयेगी।

124x1/72=	1 पर्व	10 तिथि	25 मुहूर्त्त
124/72x2=	3 पर्व	6 तिथि	20 मुहूर्त्त
124/72x3=	5 पर्व	2 तिथि	15 मुहूर्त्त
124x4/72=	6 पर्व	13 तिथि	10 मुहूर्त्त
124x5/72=	8 पर्व	9 तिथि	5 मुहूर्त्त
124x6/72=	10 पर्व	5 तिथि	0 मुहूर्त्त
124x7/72=	7 पर्व	0 तिथि	25 मुहूर्त्त
124x8/72=	13 पर्व	11 तिथि	20 मुहूर्त्त
124x9/72=	15 पर्व	7 तिथि	15 मुहूर्त्त
124x10/72=	17 पर्व	3 तिथि	10 मुहूर्त्त

जैन ज्योतिष की प्राचीनता उसकी नक्षत्र गणना से भी सिद्ध होती है। प्राचीनकाल में कृत्तिका से नक्षत्रों की गणना होती थी, पर जैन ग्रंथों में अभिजित् से की गई है, जो सत्य के अधिक निकट है।

जैन संवत्सर प्रणाली का अध्ययन करें तो पायेंगे कि इसका प्रयोग प्राचीन भारत में ई.पू. 10 शताब्दी से भी पूर्व था। वेदों में जो संवत्सर नाम आये हैं, जैन ग्रन्थों में उनसे भिन्न नाम हैं जो अभिजित नक्षत्र प्रणाली पर आधारित हैं। नक्षत्र संवत्सर, युग संवत्सर, प्रमाण संवत्सर और शनि-संवत्सर। गुरु जब समस्त नक्षत्र समूह को भोगकर पुनः अभिजित नक्षत्र पर आता है तब महानक्षत्र संवत्सर होता है।

षट्खण्डागम धवला में रौद्र, श्वेत, मैत्र, सारभट, दैत्य, वैरोचन, वैश्वदेव, अभिजित्, रोहण, बल, विजय, नैऋत्य, वरुण, अर्यमन और भाग्य ये 15 मुहूर्त्त आये हैं।

इस प्रकार ज्योतिष के क्षेत्र में जैनाचार्यों की अपूर्व देन रही है। **(जिनवाणी, जुलाई-1973 से गृहीत)**

-पूर्व ज्योतिषी, जोधपुर (राज.)

वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से ऊर्जा का वैश्विक रूप

प्रो. प्रभात कुमार जैन

यह लेख षड्द्रव्यों की ऊर्जा, विशेषतः जीव एवं पुद्‌गल की ऊर्जा पर वैज्ञानिक दृष्टि से चिन्तन प्रस्तुत करता है। लेखक ने साधना हेतु जीव ऊर्जा के सदुपयोग पर बल दिया है।-**सम्पादक**

आचार्य नेमिचन्द्र ने त्रिलोकसार में इस अनन्त आकाश के दो भेद करते हुए व्याख्या की कि अनन्त आकाश के ठीक मध्य में जितने क्षेत्र में अन्य पाँच द्रव्य जीव, पुद्‌गल, धर्म, अधर्म व कालाणु समाहित हैं, वह लोकाकाश है तथा शेष सभी ओर अनन्त अलोकाकाश है अर्थात् जहाँ 6 द्रव्य हैं, वह लोकाकाश है तथा शेष अलोकाकाश। इस लोकाकाश या लोक में ही अर्थात् 343 घनराजू प्रमाण क्षेत्र में ही जीव व पुद्‌गल या इनका संसार है। इस लोक में धर्म, अधर्म एक-एक अर्थात् अखण्ड होते हुए 343 घनराजू प्रमाण क्षेत्र में हैं तथा गति या अगति के कारणभूत द्रव्यों अर्थात् जीव व पुद्‌गल के लिये उदासीन अर्थात् अप्रेरक रहते हुए गतिहेतुत्व तथा स्थितित्व के कारण हैं। कालाणु केवल एक ही प्रदेशी हैं, किन्तु इस सम्पूर्ण लोक के एक-एक प्रदेश में रत्नराशि की भाँति परस्पर स्पर्शमात्र करते हुए विद्यमान हैं तथा जीव, पुद्‌गल आदि के परिणमन में हेतु है। आकाश तो स्वयं को तथा शेष पाँच द्रव्यों को स्थान मात्र देता है। ये सभी पाँच द्रव्य अपनी मूल सत्ता में एक क्षेत्रावगाही रहते हुए भी, एक दूसरे के साथ किसी भी गुण अर्थात् स्वभाव में कोई बाधा उत्पन्न नहीं करते।

अब यहाँ प्रश्न उत्पन्न होता है कि फिर संसार क्या है? परिणमन, गति, अगति क्या हैं? वास्तव में 'समस्त संसार की इस इन्द्रजालिक क्रीडा के स्वामी हैं दो द्रव्य-जीव व पुद्‌गल। ये दोनों भी अपनी सर्वात्म शुद्ध अवस्था में ही केवल अपने स्वभाव में रहते हैं, किन्तु अनादिकाल से इनके मध्य चले आ रहे संयोग अथवा बन्ध के कारण यह सारा संसार चल रहा है। दोनों परस्पर मिलकर, निश्चयनय से अपने स्वभाव में रहते हुए भी, व्यवहारनय से एक दूसरे की अवस्था-परिवर्तन में निमित्त बनते हैं। इन दोनों की मिश्रित अवस्था में न जाने कितने भेद हो सकते हैं, कल्पना करना कठिन है। स्यात् इसी कारण से संसारी जीव की अवस्थाएँ मूल भेद में 84 लाख या 197.5 लाख करोड होते हुए भी अनन्तानन्त हैं।

प्रत्येक द्रव्य अपनी अन्तर्निहित ऊर्जा (Intrinsic energy) से ही अपना कार्य करता है, किसी बाह्य कारण से नहीं। बाह्य कारण निमित्त हो सकता है, किन्तु केवल अपनी उपादान क्षमता या ऊर्जा से ही कार्य, परिणमन अथवा परिवर्तन होना सम्भव है। प्रत्येक द्रव्य अपनी इस अनन्त व स्थिर ऊर्जा से स्वयं परिवर्तन करता रहता है। स्वयं का तात्पर्य कर्त्ता से न होकर, स्वभाव से है जिसे विशेषतः 'षट्गुण भाग हानि वृद्धि' से समझा जा सकता है अर्थात् प्रत्येक द्रव्य स्वयं षट्गुण हानि वृद्धि करते हुए परिवर्तन वाला होता है, किन्तु इस परिवर्तन से ही वह अपनी सत्ता बनाये रखता है। ऊर्जा में कोई ह्रास या वृद्धि नहीं होती, बल्कि एक अद्भुत स्थिति आती है कि परिवर्तन करते हुए भी वह स्थिर रहता है। आप कह सकते हैं जैसे समुद्री लहरें Sine curve की भाँति उठती व विलीन होती रहती हैं, लेकिन अपने में ही। गणितीय आधार पर इसका विवेचन इस प्रकार कर सकते हैं। माना, किसी द्रव्य में गुण की संख्या 1024 है तब गणना करते हैं कि किस प्रकार षट्गुण हानि वृद्धि होती है। पहले यह समझ लें कि यह हानि वृद्धि अनन्त, असंख्यात, संख्यात के आधार पर निम्न प्रकार से होती है तथा प्रक्रिया को समझने मात्र के लिए इन्हें

क्रमशः 8,4 व 2 से व्यक्त कर रहे हैं।

अनन्त भाग वृद्धि =	1024 + (1024 / 8 = 128) = 1152
असंख्यात भाग वृद्धि =	1152 + (1024 / 4 = 256) = 1408
संख्यात भाग वृद्धि =	1408 + (1024 / 2 = 512) = 1920
संख्यात गुण वृद्धि =	1920 + (1024 x 2 = 2048) = 3968
असंख्यात गुण वृद्धि =	3968 + (1024 x 4 = 4096) = 8064
अनन्त गुण वृद्धि =	8064 + (1024 x 8 = 8192) = 16256
अनन्त भाग हानि =	16256 - (1024 / 8 = 128) = 16128
असंख्यात भाग हानि =	16128 - (1024 / 4 = 256) = 15872
संख्यात भाग हानि =	15872 - (1024 / 2 = 512) = 15360
संख्यात गुण हानि =	15360 - (1024 x 2 = 2048) = 13312
असंख्यात गुण हानि =	13312 - (1024 x 4 = 4096) = 9216
अनन्त गुण हानि =	9216 - (1024 x 8 = 8192) = 1024

इस प्रकार परिवर्तन एक क्रम से हुआ, किन्तु गुण, अवस्था वैसी ही रही, इस प्रकार निरन्तर परिवर्तन होते हुए भी द्रव्य अपरिवर्तित रहता है अर्थात् अपने स्वभाव को नहीं छोड़ता। यहाँ प्रश्न यह आता है कि इस निरन्तर चलने वाली षट्गुण हानि वृद्धि में या किसी भी प्रकार के परिणमन व गति के लिए क्या ऊर्जा की भी आवश्यकता होगी ? वास्तव में इस लेख का विषय केवल इस ऊर्जा का ही दर्शनसम्मत व विज्ञानसम्मत विवेचन करना है।

पदार्थ में ऊर्जा की व्याख्या करने से पहले भौतिक-ऊर्जा के स्रोत पुद्गल को समझ लेना आवश्यक है। छः द्रव्यों में पुद्गल एक मात्र रूपी द्रव्य है, जिसमें अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशत्व, मूर्तत्व व अचेतनत्व इन अष्ट सामान्य गुणों के अतिरिक्त स्पर्श, रस,गन्ध व वर्ण ये चार विशेष गुण भी हैं, सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाये तब ये ही पुद्गल के सम्पूर्ण गुण नहीं हैं। क्योंकि पुद्गल अणु (Independent, native state) व स्कन्ध (Dependent, combined state) इन दो अवस्थाओं में पाया जाता है। अणु वह सूक्ष्मतम अवस्था है जो अपनी संज्ञा के अनुरूप अविभाज्य तो है ही, किन्तु स्वतंत्र भी है। ये अनन्त हैं और सर्व लोकव्यापी तथा अदृश्य हैं, दो या अधिक अणु संयुक्त होकर स्कन्ध बनाते हैं तथा इस बन्धन के विकार के परिणामस्वरूप ही पुद्गल की इस स्कन्ध पर्याय में विशिष्ट स्पर्श, रस,गन्ध व वर्ण उत्पन्न हो जाते हैं। बस, यहीं से अर्थात् अणु एवं स्कन्ध से भौतिक ऊर्जा का सद्भाव प्रारम्भ होता है। सामान्यतः अणुओं से स्कन्ध बनने में अणुओं की स्वाभाविक अनन्त ऊर्जा का शोषण होता है तथा स्कन्ध से परमाणु पृथक् होने पर ऊर्जा का उत्सर्जन होता है। एक प्रकार के स्कन्ध से अन्य प्रकार के स्कन्ध रूप परिवर्तन होने में ऊर्जा का शोषण व उत्सर्जन दोनों हो सकते हैं।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार, नाभिकीय प्रतिक्रियाओं में अपार ऊर्जा का उत्पन्न होना स्कन्ध का पर्याय परिणमन ही है। किसी भी नाभिकीय प्रतिक्रिया में किसी तत्त्व के परमाणु में उपस्थित मौलिक कण पृथक् होने पर छोटे-छोटे अंशों में टूटते हैं, ये अंश प्रोटोन, इलेक्ट्रोन, न्यूट्रॉन या हेड्रन या क्वार्क्स ही नहीं, वरन् और भी छोटे कण हैं, जो अत्यधिक सूक्ष्म होने से ऊर्जा रूप में आ जाते हैं, जो पहले से ही उन कणों के द्वारा बंधकर तत्त्व के परमाणु में निहित थी तथा अब प्रकट हो गयी। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि ये जैन दर्शन वर्णित अणु से बहुत बडे हैं। नाभिकीय क्रिया में इसी कारण कहा जाता है कि पदार्थ की कुछ मात्रा नष्ट होकर ऊर्जा में परिवर्तित हुई, वास्तव में

ऊर्जा अर्थात् अत्यधिक सूक्ष्म कण, सूक्ष्म मात्रा के रूप में ही परिवर्तित थी, यदि $E=mc^2$ है तब, $m=E/C^2$ भी है। अत:E व m के परिवर्तन से ही ऊर्जा का उत्सर्जन या स्कन्ध का निर्माण होता है। गणितीय आधार पर, इस अपार ऊर्जा की गणना इस प्रकार की जाती है।

पदार्थ या तत्त्व या द्रव्य की मूल रूप से नष्ट या परिवर्तित मात्रा=lamu जहाँ, lamu(atomic mass unit) परमाण्वीय मात्रक इकाई, एक 12_C परमाणु के 1/12 वें भाग प्रमाण अर्थात् $1/6.023\times10^{23}$ या $1.66\text{x}10^{-24}$ ग्राम है

अत: आइंस्टीन समीकरण $E=mc^2$ से-

E = उत्पन्न ऊर्जा

m = परिवर्तित या नष्ट मात्रा = $1.66 \text{ x } 10^{-24}$ ग्राम

E = प्रकाश का वेग = $3 \text{ x } 10^{10}$ सेमी/सेकिण्ड

तब (1) से

E = $1.66 \text{ x}10^{-24}(3 \text{ x}10^{10})2$ अर्ग

= $1.66 \text{ x}10^{-24} \text{x } 9 \text{ x } 10^{-20}$ अर्ग

= $14.94\text{x}10^{-4}$ अर्ग ऊर्जा (2) यह नाभिकीय ऊर्जा अपार होने से Million electron volt (Mev) में प्रदर्शित की जाती है जहाँ =1Mev = $1.602\text{x}10^{-6}$ अर्ग तथा c के 1 परमाणु के 1/12 वें भाग अर्थात् कार्बन तत्त्व के $4.98\text{x}10^{-24}$ग्राम के पूर्ण दहन (प्रज्वलन) से lev(इलेक्ट्रॉन वोल्ट) ऊर्जा उत्पन्न होती है तथा 10^6 ev = 1 Mev.

अत: (2) से - $E=14.94\text{x}10^{-4}/1.602\text{x}10^6$ Mev.

=931Mev.(लगभग)

अत: lamu जितनी सूक्ष्म मात्रा के नष्ट होने अर्थात् अत्यधिक सूक्ष्म कणों में परिवर्तित होने पर अपार ऊर्जा उत्पन्न होती है। इस गणना करने का प्रयोजन यही है कि सूक्ष्म स्कन्ध रूप पुद्गल में अपार ऊर्जा निहित है।

किसी भी तत्त्व के परमाणु के निर्माण में प्रयुक्त इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन व न्यूट्रॉन के द्वारा अपार ऊर्जा प्रयुक्त होती है, जिसे बंधन ऊर्जा (Binding energy) कहा जाता है। किसी तत्त्व के नाभिक में उपस्थित सभी कण अर्थात् प्रोटॉन व न्यूट्रॉन, न्यूक्लिऑन (Nuecleon) कहलाते हैं तथा एक न्यूक्लिऑन के लिए इस बंधन ऊर्जा का मान, सभी तत्त्वों में लगभग एक समान अर्थात् 8 Mev है। जिन तत्त्वों में लिए यह 8 Mev या अधिक है, वे स्थायी, तथा जिनके लिये यह 8 Mev से कम है, वे रेडियो एक्टिव या विघटित होते हैं।

यह ऊर्जा सभी तत्त्वों में रहते हुए, जब वे परस्पर संयोग करके अन्य यौगिक बनाते हैं, तब और बढ जाती है, जो रासायनिक ऊर्जा है। सामान्यत: ये तत्त्व या यौगिक जब कोई रासायनिक अभिक्रिया करते हैं तब वे ऊर्जा में भी परिवर्तन करके नये-नये यौगिक बनाते हैं, जिनमें ऊर्जा पहले से अधिक भी हो सकती है और कम भी। अधिक होने पर, ऊर्जा प्रकृति अर्थात् वातावरण या वायुमण्डल से शोषित की जाती है तथा कम होने पर शेष ऊर्जा उत्सर्जित कर दी जाती है, यह ऊर्जा प्रतिक्रिया ऊर्जा Energy of reaction होती है।

इन सभी ऊर्जाओं को पदार्थों की ऊर्जा कहते हैं जो लौकिक है, किन्तु साथ ही यह ऊर्जा अलौकिक या आध्यात्मिक भी है। यही ऊर्जा इस लोक में संसारी जीव व कार्मण वर्गणाओं में भी प्रयुक्त होती आ रही है। जीवद्रव्य एक अनन्त ऊर्जा सम्पन्न अखण्ड द्रव्य अवस्था है जो अपने भावों अर्थात् विभावों के द्वारा ऊर्जा का

उपयोग होने पर कार्मण वर्गणाओं को कर्मों में परिवर्तित करता है तथा ये कर्म अपनी व जीवद्रव्य की ऊर्जा से बन्धन को प्राप्त हो जाते हैं। यही संसारी जीव अवस्था है।

संसारी जीव अपने पूर्व कर्मों के उदय से उत्पन्न ऊर्जा एवं उससे प्रभावित होकर अन्य नये विभावों, संस्कार से उत्पन्न ऊर्जा से नये द्रव्य कर्म बाँधता है, किन्तु इस बन्धन में वह जितनी ऊर्जा का उत्सर्जन करता है, उसी से कर्म वर्गणाओं में प्रकृति पड़ती है तथा प्रदेश आकर्षित होते हैं तथा कषायों की तीव्रता या मन्दता से, उन कर्मों को बंधन के समय हीन या अधिक ऊर्जा मिलती है। इसी कारण प्रत्येक कर्म-बन्धन की भिन्न-भिन्न ऊर्जा से उन कर्मों की स्थिति व अनुभाग दृढ़, तीव्र या निर्बल व मंद होते हैं। ये कर्म अपने अबाधा काल के समाप्त होते ही अपनी भिन्न स्थिति के अनुरूप उदय में आते हैं, तब इनकी ऊर्जा से प्रभावित होकर ही सभी संसारी जीव भाव कर्म में डूब जाते हैं जो भविष्यत् के द्रव्यकर्म निर्धारण में सहायक होते हैं और यही द्रव्यकर्म-भावकर्म की रासायनिक क्रिया अनन्त काल से चली आ रही है ।

सभी साधारण संसारी जीव अर्थात् प्रथम मिथ्यात्व गुणस्थान सम्बन्धी जीव, इन द्रव्य कर्मो के उदय के प्रभाव से समस्त कार्य करते रहते हैं, उन बद्ध कर्मों की सविपाक निर्जरा होती रहती है। किन्तु अन्तर देखिये, एक साधक या बुधजन या सम्यक्त्वी जीव जो इस भव-भ्रमण के कारण को समझ और इन प्रतिक्रियाओं अर्थात् बन्धनों के कारणों को समझ निर्लिप्त होने लगता है तथा बन्ध-प्रक्रिया की गति को मन्द करता है अर्थात् अनन्त कर्मों से कुछ मुक्ति पा लेने से, कुछ सुख का अनुभव करने लगता है अर्थात् दुःख की कारणभूत सम्यक्त्वघाती 7 प्रकृतियों का सर्वथा अभाव कर डालता है अर्थात् अपनी ऊर्जा उत्पन्न करता है तथा उसके उपयोग या संघात से इन 7 प्रकृतियों की बन्धन ऊर्जा को क्षीण करके उनका अभाव कर डालता है। इस अवस्था में आने पर संयम, तप, नियम, उपवास, ध्यान आदि प्रक्रियाओं से निरन्तर अपनी ऊर्जा से यह जीवात्मा जो अब प्रथम गुणस्थान अर्थात् बहिरात्मा से पाँचवें, छठे, सातवें गुणस्थान या आगे अर्थात् अन्तरात्मा की ओर अग्रसर होता जाता है। ध्यान से प्रज्वलित अग्नि के संघात से कर्म-बन्धनों की ऊर्जा को कम करके ही-

1. समय से पहले कर्मो का उदय अर्थात् उदीरणा होती है।
2. कर्म प्रकृति का परिवर्तन अर्थात् स्वजाति रूप दुःख या असाता का सुख या साता रूप परिणमन अर्थात् संक्रमण किया जा सकता है।
3. कर्म बन्धन को स्थायी अवस्था से निर्बल बन्ध अवस्था में लाना अर्थात् स्थिति काण्डकघात व अनुभागकाण्डकघात होता है।
4. कर्म बन्धन की ऊर्जा को स्थायी रूप से क्षीण करना अर्थात् अविपाक निर्जरा करने लगता है। विशेष रूप से ध्यान रखने योग्य तथ्य यह है कि इस तप, संयम आदि से उत्पन्न संघात के भी दो भेद हैं।

(अ) यदि ऊर्जा कर्म-बन्ध में प्रयुक्त ऊर्जा को क्षीण करने की क्षमता से कम है तब उस साधक जीव की 'उपशम श्रेणी' प्रारम्भ होती है अर्थात् कर्मों की निर्जरा नहीं होती, किन्तु उनका प्रभाव ऊर्जा के प्रभाव से कुछ समय के लिए कम हो जाता है, जिसे 'उपशम' अवस्था कहते हैं।

(ब) यदि उत्पन्न ऊर्जा, उस बंधन ऊर्जा के बराबर या अधिक है तब वह उस कर्म-बन्धन की ऊर्जा को क्षीण करके, उस कर्म को उदासीन करके क्षय कर देता है, यही 'क्षपक' अवस्था है।

उपर्युक्त सभी कारणों में आवश्यक ऊर्जा का परिमाण कितना हो, इसकी व्याख्या इस प्रकार से की जाती है। सामान्य या रेडियो-एक्टिव तत्त्वों में जब उनका विखण्डन करना होता है अथवा उन्हें अस्थायी बनाना होता है, तब उन पर किसी कण की बौछार की जाती है, किन्तु उस कण जिसे प्रक्षेप्य (Projectile) संज्ञा दी जाती है, अर्थात्

प्रक्षेप्य को दी गयी ऊर्जा, यदि उस तत्त्व की बन्धन ऊर्जा से कम है, तब वह उस तत्त्व में कोई परिवर्तन नहीं कर सकता तथा प्रयुक्त की गयी ऊर्जा भी व्यर्थ हो जाती है। यदि उस प्रक्षेप्य की ऊर्जा, उस लक्ष्य अर्थात् तत्त्व की बन्धन ऊर्जा के समतुल्य या अधिक है, तब वह प्रक्षेप्य परिवर्तन या परिणमन या विखण्डन कर देता है। इसी तरह आध्यात्मिक दृष्टि से आत्मा व कर्मों पर घटित करें तब यह कहा जा सकता है कि किसी प्राणी के द्वारा सदैव ऊर्जा तो उत्पन्न होती ही है, लेकिन उसका केन्द्रीकरण या सदुपयोग न होने से वह व्यर्थ चली जाती है, क्योंकि वह कर्म बन्ध की ऊर्जा को कम करने, संक्रमण या क्षीण करने के बराबर नहीं है। किन्तु प्रायः साधना करने वाला अपने भावों को विभावों में परिवर्तित कर देता है जिससे ऊर्जा अन्य कार्यों, अभिप्रायों में बँटकर नष्ट हो जाती है तथा पुरुषार्थ व्यर्थ चला जाता है तथा उत्पन्न की गयी ऊर्जा भी अन्य बन्धनों का कारण बन जाती है। इसी कारण साधक से अपेक्षा की जाती है कि जब वह स्वयं साधना करता है तो मन भटके नहीं तथा ऊर्जा व्यर्थ न जाकर सदुपयोग में व्यय हो। तीसरे गुणस्थान अर्थात् सम्यक्त्व-मिथ्यात्व में यही तो होता है।

सदुपयोग होने पर क्षायिक सम्यग्दर्शन उत्पन्न होने पर साधक निरन्तर उन्नति करता है। उसका I-Q अब E-Q (Emotional Quotient) में परिवर्तित होकर Spiritual Q (S-Q) में प्रवेश करने लगता है या धीरे-धीरे भाव विशुद्धि करता हुआ, निर्ग्रंथ होकर क्षपक श्रेणी पर आता है तथा अन्त में 63 कर्म प्रकृतियों का क्षय करके केवलज्ञान व अरिहंत अवस्था पा लेता है अर्थात् भव-भ्रमण से मुक्ति पा लेता है।

इन सभी गणनाओं (करण) व उनके विश्लेषण, मनन का तात्पर्य यही है कि हम अपनी ऊर्जा का सदुपयोग करें। सभी अपने हृदय या भाव परिवर्तन से स्वयं को शान्त, तनावरहित व सुखी रखें। संसार में रहते हुए, अपने कार्य करें, किन्तु हम अहिंसक, विचारवान्, शान्त, निर्लिप्त रहें, फिर कैसा तनाव, कैसी अव्यवस्था, कैसा वैमनस्य, कैसा राग-द्वेष, कैसी चोरी, झूठ, निन्दा, परिग्रह, हिंसा, व्यभिचार तथा अनैतिकता? प्रत्येक अवस्था में सन्तोषी व सुखी। यही धर्म का मर्म या रहस्य है। अतः अपनी ऊर्जा को स्वयं में केन्द्रित करें और सुखी रहें। विशेष जिज्ञासु आचार्य श्री कनकनन्दी कृत 1. विविध क्रम विकासवाद एवं परम विकासवाद 2. ब्रह्माण्डीय जैविक-भौतिक एवं रसायन विज्ञान 3. अनन्त शक्ति सम्पन्न परमाणु से लेकर परमात्मा आदि पुस्तकों का अध्ययन करें।

-संघस्थ वै. धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी) (जिनवाणी, जनवरी-2008 से गृहीत)

जैन विद्यार्थियों के लिए अवसर

1. जैन अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति योजना शुरु हो गई है। यह पहली से लेकर पी-एच्.डी करने वाले सभी छात्र-छात्राओं के लिए है। विदेश में उच्च शिक्षा के लिए रुपये 50 लाख तक ऋण मिल सकता है। इसके लिए वेबसाइट पर ऑनलाइन फार्म भरकर उसका प्रिण्ट लेकर सम्बन्धित विभागीय पते पर सरकार को भेजना होता है। ऑनलाइन फॉर्म भरना आसान है। स्वीकृत छात्रवृत्ति सीधे ही विद्यार्थी के खाते में जमा होती है। विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- **पारसभाई एच. लाठिया जैन, एडवोकेट** (राजकोट), भारतीय जैन माइनोरिटी जेन्युइन सेवा ग्रुप (16 राज्य), मोबाइल- 097266-05070, 094282-82112, व्हॉट्सएप : 094268-18069.
2. जो जैन छात्र-छात्राएँ बैंक पी.ओ., एस.एस.सी., आर.ए.एस., आई.ए.एस. की तैयारी करना चाहते हैं, उनके लिए जोधपुर में परिणामोन्मुखी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करवाई जायेगी। इसके लिए कोई पूर्व जाँच परीक्षा नहीं होगी। स्थान सीमित है। कॉम्प्रीहेंसिव कोचिंग ओरियेंटेशन संगोष्ठी के लिए पंजीकृत करवाएँ। सम्पर्क:-093147-10944

द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव

श्री चिरंजीव अनेकान्त

सत्य अनन्त है। उसका एक दृष्टिकोण से प्रतिपादन नहीं किया जा सकता। केवली भगवान् अनन्त सत्य को जान लेते हैं, किन्तु वे भी उसका प्रतिपादन एक साथ नहीं कर सकते। पदार्थ और उसके पर्याय अनन्त हैं उसके द्वारा प्रतिपादित सत्य की कुछेक पर्यायों को पूर्ण सत्य मानकर अवशिष्ट पर्यायों को अस्वीकार करना सत्य की सीमा से बाहर जाना है। अनेकान्त कहता है- सत्य को एक दृष्टि से मत देखो। सत्य को अस्तित्व की दृष्टि से देखते हो तो साथ-साथ नास्तित्व की दृष्टि से भी देखो।

वस्तुबोध की चार दृष्टियाँ- वस्तु को जानने के अनेक कोण, अनेक अपेक्षाएँ होती हैं। तत्त्वार्थ सूत्र (1/7-8) में वस्तुविज्ञान के चौदह कोण-मार्गणाएँ प्रतिपादित हैं- निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण, स्थिति, विधान, सत् संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्पबहुत्व। अनुयोगद्वार सूत्र (121) में वस्तु बोध के नौ प्रकार प्रज्ञप्त हैं- सद्प्ररूपणा, द्रव्यप्रमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाषा, भाव और अल्पबहुत्व।

भगवान् महावीर द्वारा प्रतिपादित निरूपण की मुख्य चार दृष्टियाँ हैं- द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव। इनको जाने बिना वस्तु स्वरूप का सम्यक् बोध नहीं हो सकता। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार भी क्षेत्र (Space) और काल (Time) इन दो आयामों के बिना वस्तु की व्याख्या नहीं की जा सकती। भगवान् महावीर के अनुसार विज्ञान सम्मत क्षेत्र व काल के साथ-साथ द्रव्य (Substance) और भाव (Mode) भी वस्तु की व्याख्या के लिए अनिवार्य हैं। हमारे सारे निर्णय द्रव्य-सापेक्ष, काल-सापेक्ष, क्षेत्र-सापेक्ष तथा भाव-सापेक्ष होते हैं।

द्रव्य- भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में परिवर्तित होते हुए भी जिसका मौलिक स्वरूप एवं क्षमता क्षीण नहीं होती, वह द्रव्य है। दार्शनिक परिभाषा में द्रव्य वही है जिसके गुण और पर्याय हों। अद्रुवत्, द्रवति, द्रोष्यति तांस्तान् पर्यायान् इति द्रव्यम् - जो भिन्न-भिन्न अवस्थाओं को प्राप्त हुआ, हो रहा है और होगा वह द्रव्य है। अस्तित्व का निर्णय द्रव्य सापेक्ष ही होता है न कि भाव सापेक्ष। चेतन-अचेतन एक-दूसरे के अस्तित्व में हस्तक्षेप नहीं कर सकते। क्योंकि आत्मा एवं परमाणु का स्वतन्त्र अस्तित्व है। यही द्रव्य सापेक्ष निर्णय है। प्रत्येक द्रव्य में दो प्रकार के धर्म रहते हैं- एक सहभावी धर्म (गुण) जो द्रव्य में नित्य रूप से रहता है दूसरा क्रमभावी धर्म (पर्याय) जो परिवर्तनशील रहता है।

क्षेत्र- विवक्षित पदार्थ के क्षेत्र का निरूपण करना भी आवश्यक है। क्षेत्र आकाश का द्योतक है। आकाश के दो प्रकार हैं - लोकाकाश और अलोकाकाश। जैन दर्शन के अनुसार लोक और अलोक का विभाजन नैसर्गिक है, अनादिकालीन है। वह किसी भी ईश्वरीय सत्ता द्वारा कृत नहीं है। महान् वैज्ञानिक अलबर्ट आइन्स्टाइन की आकाशविषयक अवधारणा भी इसी प्रकार की है। क्षेत्र सापेक्ष निर्णय स्वतंत्र एवं परतन्त्र दोनों हो सकते हैं। एक परमाणु अमुक काल तक इस क्षेत्र में रहेगा यह उस परमाणु की स्वतंत्रता है। अमुक काल के बाद वह इस क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में चला जाएगा-यह उसकी परतन्त्रता है।

काल- श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार काल दो प्रकार का है- नैश्चयिक काल और व्यवहार काल। नैश्चयिक काल का सम्बन्ध प्रत्येक अस्तित्व के साथ है, व्यावहारिक काल का सम्बन्ध सूर्य की गति के साथ है (भगवती सूत्र 2/122-123)। दिगम्बर मान्यता में काल अणु रूप है (द्रव्यसंग्रह-22)। वैदिक दर्शनों में भी काल के सम्बन्ध में व्यावहारिक एवं नैश्चयिक दोनों रूप मिलते हैं। न्याय, वैशेषिक दर्शन में काल को सर्वव्यापी एवं स्वतंत्र द्रव्य माना

गया है (न्यायकारिकावली-45 तथा वैशेषिक दर्शन-2/2/6-10) योग, सांख्य आदि दर्शन काल को स्वतंत्र द्रव्य नहीं मानते (सांख्यतत्त्वकौमुदी-33)। काल सापेक्ष निर्णय से ही व्यवहार में उलझनें पैदा नहीं होती। पुरुषार्थी अगर असफल रहे तो उसे निराश होने की बजाय अनेकान्त को समझना चाहिये। पुरुषार्थ वर्तमान पर्याय है। उसकी असफलता में बाधक तत्त्व है- अव्यक्त पर्याय, सूक्ष्म पर्याय, अतीत का पर्याय। अतीत को छोड़कर वर्तमान की व्याख्या नहीं की जा सकती। वर्तमान काल विपाक काल होता है। वर्तमान है परिणाम का काल। संरचना व निर्माण काल जो अतीत से प्रभावित होता है और भविष्य को प्रभावित करता है। अतः अतीत और भविष्य के बीच की कड़ी है वर्तमान। वर्तमान सापेक्ष निर्णय काल सापेक्ष होते हैं।

बौद्धों के महान् आचार्य धर्मकीर्ति ने स्याद्वाद के सिद्धान्त का मखौल उड़ाते हुए कहा- ''स्याद्वाद निर्णय तक नहीं पहुँचता।'' वह कहता है- यह भी हो सकता है वह भी हो सकता है। अस्तित्व भी हो सकता है नास्तित्व भी हो सकता है। तब हम क्यों नहीं मानें कि ''दही ऊँट हो सकता है और ऊँट दही हो सकता है?'' समाधान की भाषा में यदि चिन्तन किया जाए तो पदार्थ सर्वथा परतन्त्र नहीं है। तब स्वतन्त्र अस्तित्व वाले पदार्थ दही को ऊँट व इसी प्रकार ऊँट को दही होने से कौन रोक सकता है? आचार्य धर्मकीर्ति ने इस चिन्तन की जरूरत ही नहीं समझी कि आज जिन परमाणुओं ने दही की रचना की है वे ही परमाणु काल के अन्तराल में परिवर्तित होकर ऊँट के शरीर की रचना कर सकते हैं। आज जो परमाणु ऊँट से शरीर की संरचना कर रहे हैं वे परमाणु भी बदल कर दही के रूप में परिवर्तित हो सकते हैं। निष्कर्ष यह है कि काल निरपेक्ष निर्णय कभी भी सत्य को स्पर्श नहीं कर सकते हैं।

भाव- विवक्षित पदार्थ में औदयिक, उपशम, क्षायिक, क्षायोपशमिक अथवा पारिणामिक भावों (पर्यायों)का कथन करना इसके अन्तर्गत आता है। द्रव्य की पर्याय को भी भाव कहा जाता है। किसी जीव का पर्याय परिवर्तन भी भाव है। इस प्रकार भावों का चक्र चलता रहता है। इस अपेक्षा से प्रत्येक द्रव्य का स्वभाव स्वपर्याय होता है।

जिस प्रश्न को गौतम बुद्ध ने अव्याकृत कहकर छोड़ दिया उसे भगवान् महावीर ने द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव इन चार दृष्टियों के द्वारा समाहित कर स्कन्दक परिव्राजक की जिज्ञासा को शान्त किया। भगवती (सूत्र 2/44-45) में वर्णित स्कन्दक एवं भगवान् की चर्चा का सार यह है कि भगवान् कहते हैं- ''से तं खंदगा! दव्वओ लोए सअंते, खेत्तओ लोए सअंते, कालओ लोए अणंते, भावओ लोए अणंते।'' हे स्कन्दक! द्रव्यतः लोक एक व सान्त है। क्षेत्रतः लोक असंख्येय कोटाकोटि योजन परिधि वाला प्रज्ञप्त है और सान्त है। कालतः वह अनंत है तथा भावतः भी अनन्त है। इसी प्रकार की जिज्ञासा जीव के सम्बन्ध में शान्त करते हुए भगवान् ने स्कन्दक से कहा- द्रव्यतः जीव एक व सान्त है। क्षेत्रतः जीव असंख्य प्रदेशी है, सान्त है। कालतः जीव अनन्त है तथा भावतः जीव में अनंत ज्ञान पर्यव, अनंत दर्शन पर्यव, अनंत चरित्र पर्यव, अनंत गुरुलघु एवं अनंत अगुरुलघु पर्यव हैं।

उपर्युक्त समस्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव का सिद्धान्त सापेक्षता का सिद्धान्त है। सापेक्षता के बिना किसी भी अस्तित्व का प्रतिपादन नहीं किया जा सकता। जो निर्णय इन चार दृष्टियों के आधार पर नहीं बदलता वह निर्णय नहीं अनिर्णय होता है। इसलिए भगवान् महावीर ने कहा- तुम कोई भी निर्णय द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और भव से निरपेक्ष होकर मत करो।

-224, एन एस सी बोस रोड, चेन्नई (तमिलनाडु)

www.jainelibrary.org पर जैन साहित्य उपलब्ध

हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में जैन आगम, प्राचीन जैन साहित्य, जैन कथाएँ और ज्ञानवर्धक जैन लेखों को पढ़ने तथा प्राप्त करने के लिए वेबसाइट **www.jainelibrary.org** का अवलोकन करें। यह एक ऑनलाइन पोर्टल है जिस पर अपना प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण जैन साहित्य उपलब्ध है। आप इस वेबसाइट से पुस्तकें डाउनलोड कर सकते हैं और जैन धर्म से सम्बन्धित ज्ञान लोगों तक प्रचारित करने में सहायक बन सकते हैं। आपक बहुमूल्य सुझाव आप हमें ईमेल कर सकते हैं-**contact@jainelibrary.org**

English-Section

STUDY OF UTTARĀDHYAYANA SŪTRA (2)

Dr.Priyadarshana Jain

(Continue from December 2016 issue)

SECTION II:

LEGENDARY TALES AND DIALOGUES: [Chapters 9, 12-14, 18-23, 25]

It is held by critics that this portion constitutes the earliest nucleus of the Uttarjjhayana. Some of these legends have their parallels in the Buddhist Jātakas. They have also intersections with the Mahabharata and the Puranas. Therefore Winternitz ascribes this portion to the common heritage of ancient Indian Ascetic Poetry. [21]

Chapter IX is a brief biography of Nami Rājarşi who was a self-enlightened soul (Pratyeka Buddha). He ruled over Mithilā before renouncing the world. Indra disguised as a Brahmin priest and appeared before him and put before him ten challenging questions for which Nami gave profound spiritual answers. Their conversation throws light on the Varnāśrama Dharma of the Brahmanic tradition, the sacrificial practices and social order at that time besides the spiritual message of the ancient Śramanic tradition which is universally relevant and is an eternal message for all spiritual aspirants. The conversation is allegorical, the questions are practical and the answers are inspiring and noteworthy.

Chapter XII is about an outcaste Harikesī who rose in spiritual excellence due to austerities and righteous conduct. Śramana conduct signifies the greatest of sacrifices (Yajña). Here austerities are the fire, the soul is the fire place, converging thought, word and action – is the ladle for pouring oblations and one's accumulated karmas are the oblations to be thrown into the sacrificial fire and burnt. This sacrifice is really efficient in bringing about liberation and not the material one which involves injury to life.[22] The ceremonial sacrifices of the Vedic tradition are condemned and this legendary tale is important for censuring and challenging casteism and sacrifices and for giving spiritual interpretation of the same which is non-violence in thought, word and deed.

Chapter XIII tells us the story of the lives of Citta and Sambhuta. The story is found under the same title in the Jātaka stories (No. 498). The story supports the concept of karma and rebirth and the futility of casteism for spiritual welfare is again showcased.

Chapter XIV is titled Işukārīya in which the renunciation of six people of a place called Işukāra is told. The king, queen, priest, his wife and their two sons- how the four elders are inspired by the two sons is narrated. The sons tell their Brahmin parents that no son can redeem their parents for everybody is responsible for his deeds. Study of the Vedas and feeding the Brahmins in a ceremonial sacrifice can save none. They lead the doer of false actions from darkness to more darkness. Similarities of this tale can be seen in the Jātaka (509) on one hand and Śantiparvan (175/217) on the other.

Chapter XVIII tells us about the renunciation of a King called Sanjaya after he is inspired by a monk in a forest who gives him a sermon on the sin of killing and on the ephemeral

nature of life and on the insignificance of power and possession.[23] The chapter also gives a list of twenty soverign monarchs who renounced the world inspite of enjoying such reputed sovereignity. The four kinds of different philosophical schools too are enumerated here and the superiority of the Nirgrantha, Anekanta order is established. It also declares the practice of non-violence superior to all world orders.

Chapter XIX is about the renunciation of the Son of Mṛgā ie Mṛgāputra which reveals that the pleasures of life are like sweet poison, dreadful and painful ultimately. One who embarks on a long journey without sufficient stuff for the way, comes to grief, so does a person who lives without righteousness. The chapter also says that, "Birth and old age are miserable, so are the diseases and death, the world is full of miseries, where all living beings experience pain".[24] Verse 19.5 mentions about the 18,000 Śilāṅga chariot and other virtues of an ascetic. "Just as one cannot fill a bag with air and one can't weigh Mt. Meru in a balance, crossing the ocean by oneself is difficult, so is restraint difficult".[25] The chapter also enumerates the kinds of tortures afflicted in hell and inspires one and all to give up the Bhoga Mārga and tread on the Mokṣa Mārga.

Chapter XX is a beautiful chapter and reveals a brief life history of Anathi Muni, a great spiritual saint who inspired Śrenika Bimbisāra to become a devoted follower of Mahavira. Jaina literature has scores of references of King Śrenika and it was revealed by Lord Mahavira later on that King Śrenika is going to be the first Tirthankara of the forthcoming ascending era (Utsarpani Kala). The narrative reveals the shelterlessness nature of the world and that all are Anātha i.e. shelterless in this world. Neither the riches nor the kith and kin can save a person from oldage, disease and death. Verse 37 of this chapter reveals that the soul is the doer and enjoyer of its own karmas. When the soul treads on the right path it is its friend and when it treads on the wrong path it is its own foe.

Chapter XXI tells us about a lay and handsome householder Samudrapāla, who saw a criminal being taken for execution and was inspired to search the secrets of birth and death, of reward and punishment. Through his story the Uttarādhyayana preaches the essence of karma theory. As you sow, so you reap, is a natural universal law, and none can escape this law except those who have transcended the inferior self and become the supreme selves. The purpose of this precious and auspicious human life is to purify oneself and to free oneself from karmas, and the first step towards this is to know the nature of 18 fold sins and renounce them, if not minimize them to the extent possible. The chapter gives an insight into the austere and spiritual life of Samudrapāla who ultimately destroyed all karmas and became an Arhat.

Chapter XXII is another beautiful narrative which tells us about the legendary Ariṣṭanemi, the 22nd Tirthankara, Rajīmati his eternal lover and his brother Rathanemi. It is said that both Ariṣṭanemi and Rajīmati had been man and wife for the past nine births, but in this birth Neminatha renounced the world to seek enlightenment, but Rajīmati too followed his footsteps and attained Nirvāna before him. The chapter also tells us about the compassionate nature of Ariṣṭanemi and his love for animals. It also tells us about his brother Rathanemi who was tempted by the worldly pleasures even though he had embraced asceticism; later he was cautioned by Rajīmati and saved from sin. The commentary gives information about the Yadava clan, Kṛṣṇa Vāsudeva and others.

Chapter XXIII is a dialogue between Keśi and Gautama and is important for its historical content. Keśi was a follower of the Pārśva order and Gautama was the first disciple of Lord Mahavira. The two great leaders met and discussed the differences of Caturyama Dharma of Pārśva and the five Mahavrata order of Mahavira besides scores of philosophical, religious and spiritual details. Keśi enquired and Gautama replied and the people listened with devotion and faith and rejoiced. Ultimately Keśi accepted the five vows and became a follower of Lord Mahavira. During the conversation Gautama clarifies the little doubts of Keśi and enlightens him of the spiritual path of the Tirthaṅkaras which is pure, logical, practical, eternal, universal and utmost simple.

Chapter XXV highlights the Śramanic culture and the Brahmanic culture and establishes the supremacy of spirituality over Vedic rituals, non-violence over violence, wisdom over ignorance, equanimity over incoherent practices and austerities over external appearances. In the city of Vāranasi, Jayaghoṣa enlightens his brother Vijayaghoṣa about the true nature of spiritual Yajña and the futility of animal sacrifices and ceremonial practices. Verses 31 and 32 inform us that, "Not by *Tonsure* but by *Equanimity* one becomes a *Śramana,* not by *Chanting of Om*, but by *Celibacy* one is a *Brahmana*, not by staying in a *Forest* but by *Wisdom* one becomes a *Muni*, not by *External Apperancees* but by *Austerities* one becomes a *Tāpas*. The spiritual and practical meanings of Yajña, Māhana, Śramana, Muni, Brahmana, Kṣatriya etc are revealed. The dreadfulness of the world, sorrows of birth and death, karmas as the cause of transmigration are preached and the message of spirituality, detachment, contentment, self-restraint, significance of vows, righteousness etc is imparted for one and all with loving kindness.

SECTION III

Section III discusses the Dogmatic discourses revealed in Chapter 24, 26, 28-31, 33, 34 and 36. Although other lessons too contain dogmatic discourses but they were interwoven with narratives and often monastic details are predominant. Chapter II which narrates the twenty-two afflictions can be included in both sections of monastic teachings and dogmatic discourses besides Chapter XXIV which elaborates the 5 fold Samiti ie regulatory practices and the three fold Guptis ie restraints. The two together make up the spiritual and physical discipline of an ascetic. The former guides the ascetic to conduct himself in society and the latter teaches him how to master oneself. The eight together are titled 'Pravacana-Mātā' and is said to be the mother of all teachings. Right conduct is stressed and elaborated in this chapter where as the other chapters of this section are important for Right Knowledge and Right Faith.

Dr. Poddar remarks, "Historians of literature and critics of the Uttarajjhayaṇa are of opinion that these pieces are of comparatively recent origin. Dogmaticim must have been a later formulation of the religious renaissance which gave birth to the Ardhamāgadhī (and also Pali) religious literature, its first preferences naturally being religious teachings through discourses and appropriate narratives and not stuffing the audience with dogmatics. Therefore, the opinion of the historians and the critics seems plausible".[26]

Chapter XXVI is titled Samācarī and it reveals the rules and regulations of ascetic order. Besides ten points of code of conduct the chapter says that an ascetic divides his days beginning with sunrise into four parts. In the first part he should do the scriptural study, in the second meditate, in the third collect alms and in the fourth again pursue scriptural study. Likewise in the

four parts of the night beginning from sunset he should study, meditate, sleep and then study in the fourth again. He should regularly to penitential retreat (Pratikramana), expiation (Prāyaścitta), examination of his belongings (Pratilekhana) etc.

Chapter XXVIII titled Mokṣa Mārga Gati elaborates the path of emancipation as well as the constituents of Right Knowledge, Right Faith and Right Conduct, Right Austerity. The significance of each and a fine blend of all are important for emancipation. Five types of knowledge, six substances (dravyas), nine fundamentals (tattvas), description of right faith, its characteristics, its types, its significance and its eight limbs, five kinds of conduct are discussed in detail.

Chapter XIII is titled Tapomārga and discusses in detail the twelve-fold austerities. Through Tapas ie austerities one can destroy the karmas accumulated over crores (millions) of births.[27] The divisions and sub-divisions of the six – fold eternal austerities and six – fold internal austerities are enumerated.

Chapter XXIX is Samyaktva Parākrama and contains 73 questions and answers on Right Exertion. The chapter is very important for understanding right exertion and it illustrates the fruit of each act of exertion enumerated here and their spiritual significance. The soul has been exerting since time immemorial but it has always been in the wrong direction, this chapter gives minute details of exerting in the right direction with right understanding and right faith.

Chapter XXXI is Caraṇavidhi and is like a mini encyclopedia of Right Conduct. Beginning with one to number thirty three it enumerates the strengths and the impediments on the path of emancipation as follows, 1 kind of non-restraint, 2 types of bondages, 3 kinds of punishments etc, 4 kinds of contemplations etc, 5-fold passions etc., 6-fold life forms etc., 7-types of fears etc., 8-kinds of pride, 9-fold celibacy, 10-fold virtues, 11-fold advanced spiritual practices of a house holder, 12-fold advanced spiritual practices of an ascetic, 13 kinds of activities, 14 kinds of life-forms, 15 kinds evil gods, 16 chapters of Samavāyānga, 17 types of non-restraint, 18-fold celibacy, 19 chapters of Jñāta-dharma katha, 20 places of disturbances, 21 defilements, 22 afflictions, 23 remaining chapters of Sutrakṛtanga, 24 kinds of celestial beings, 25 contemplations of five Mahavratas, 26 chapters of three agamas viz Daśasrutaskandha, Brhatkalpa and Vyavahara Sutra, 27 qualities of an ascetic, 28 chapters of Ācārańga, 29 subjects of false knowledge, 30 places of delusion producing karma, 31 qualities of Siddhas, 32 points on Yoga and 33 disrespects are mentioned here and notes on these are spread in different Agamas particularly Samavāyanga, Avaśyaka, etc.

Chapter XXXIII is an exposition of the eight – fold karma theory with its multifold divisions (148). The concept of karma has been thoroughly analysed and enumerated with the minutest details in Jaina canonical literature and also in post canonical literature and Digambara literature. Knowledge and right understanding of the karma theory inspires one to be responsible and to exert for self-realization and purification without delay. The Arhats and Siddhas serve as role models and inspire the aspirants to discover and tap the latent potential of Godhood.

Chapter XXXIV elucidates the six kinds of Leśyās under eleven heads. Leśyās are the thought paints or colourings of the soul in transmigration. The passions and the vibrations of mind, body and speech cause an aura of every individual. The colour, taste, smell, touch etc of

each Leśya are cited by various similies. Black Leśyā (Kṛṣṇa) is associated with violence, cruelty and lack of restraint; Blue (Nila) with jealousy, anger, ignorance, deceit and greed; Grey (Kapota) with crookedness, hypocrisy and impoliteness; Red (Tejo) with humility, calmness, righteousness; Yellow (Padma) with gradual disappearance of passions such as anger, conceit, deceit and greed ;[28] White (śukla) with purity, blemishlessness, equanimity and passionless state.

Chapter XXXVI is about living and non-living and is the longest of all the chapters containing 268 verses. It begins with a mention of the universe (Loka) and its six constituents, viz principle of motion (Dharmāstikāya), principle of rest (Adharmāstikāya), space (Akāsāstikāya), time (Kāla), matter (Pudgalāstikaya) and living-beings (Jivāstikāya) and goes to elaborate each one in detail. The discussion on non-living and matter begins with verse 10 and ends with verse 47 and the elaboration on living things begin with verse 48 and ends with 249. The characteristics of liberated and the bondaged beings are enumerated at great length. The 249th verse says that knowing the nature of living and non-living, one must logically understand them from different aspects and exercise self-restraint. Thus progressing from right knowledge, one is advised to have faith in the above revelations and take to rational conduct in order to realize and release oneself. The chapter concludes with a note on Sallekhanā ie the art of dying. It discusses the contemplations associated with death that are to be nurtured to make death meaningful and life successful.

The last verse of this chapter and of the Uttarādhyayana Sūtra records that thus the enlightened all knowing omniscient of the Jñātra vanśa expounded the above teachings for the welfare of all living beings so that they may all accomplish and manifest their true potential and achieve eternal happiness and bliss. Thus we see that Jainism starts with a pessimistic note, progresses through optimism and culminates in pragmatism. The Uttarādhyayana Sūtra gives a comprehensive picture of Jaina asceticism and Śramanic culture, besides Jaina spirituality, beliefs and practices. It is indeed a great work of Ardhamagadhi Prakrt and is an immortal song of the soul.

REFERENCES

21. Introduction to Uttarjjhayana Pg. 34
22. Ibid Pg 39-40
23. Introduction to Uttarajjhayana Pg.57.
24. Uttarādhyayana Sūtra 19.15
25. Ibid 19. 40-42.
26. Introduction to Uttarajjhayana Pg.66.
27. Uttarādhyayana Sūtra 30.6
28. Uttarādhyayana Sūtra and An Introduction to Uttarajjhayana Pg 72-73.

-Asst Prof & Head, Dept of Jainology, University of Madras, Chennai-600005

जिनवाणी के विदेशी पाठकों से निवेदन

विदेशों में रहने वाले जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका के सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध किया जाता है कि जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका संघ की वेबसाइट **http://ratnasangh.com** के कॉलम (फोल्डर) पर अपलोड कर दी गई है। आप वेबसाइट पर जाकर ई-बुक में जिनवाणी का पठन कर सकते हैं। अप्रेल-2017 से जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका विदेश में भिजवाना बंद करने की योजना है। यदि किसी भी सदस्य को जिनवाणी की प्रिण्टेड प्रति ही चाहिये तो वे सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की ईमेल **sgpmandal@yahoo.com** पर अपना पता, टेलीफोन नम्बर सहित भिजवाकर मंगवा सकते हैं।

-विनयचन्द डागा, मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

जैन ब्रह्माण्ड और आधुनिक ब्रह्माण्ड की तुलनात्मक समीक्षा

श्री डॉ. जीवराज जैन

ब्रह्माण्ड का वैज्ञानिक स्वरूप

(अ)ब्रह्माण्ड का गणितः-

- हमारा सूर्य अपने, ग्रह, उपग्रह, पुच्छल तारे सहित आकाश गंगा की एक भुजा में अवस्थित है।
- एक मंदाकिनी अर्थात् आकाशगंगा का औसत विस्तार 1 लाख प्रकाश वर्ष है।
- ब्रह्माण्ड में 100 अरब से ज्यादा मंदाकिनियाँ (आकाशगंगा) हैं। एक मंदाकिनी में औसतन 100 अरब तारे हैं। हर तारा सूर्य का रूप है। लेकिन ऊर्जा के अनुसार कुछ इससे बूढ़े हैं, तो कई इससे जवान या शैशव अवस्था में हैं।
- दो मंदाकिनियों की दूरी औसतन 2 करोड़ प्रकाश वर्ष हैं। यानी पास की दो मंदाकिनियों के बीच बहुत बड़ी खाली जगह रहती है।
- ब्रह्माण्ड के सुदूर छोर से प्रकाश को आने में 15-20 अरब वर्ष लगेंगे। कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति 15-20 अरब वर्ष पूर्व हुई थी।
- प्रकाश की गति 3 लाख कि.मी. प्रति सैकेण्ड है। यानी $3X10^5$ km/s

  (1 प्रकाश वर्ष = $9.40X10^{12}$ कि.मी.= 10,000 अरब कि.मी.)
- ऐसा माना जा रहा है कि ब्रह्माण्ड में समूचे द्रव्यमान का-

  (1) 25% कृष्ण पदार्थ (ज्यादातर श्याम विवर के रूप में)

  (2) 70% कृष्ण ऊर्जा (यह एक तरह का विकर्षण बल है, जो दिक् के प्रसरण के लिए जिम्मेदार है।)

  (3) 4% हाइड्रोजन और हीलियम का है।

  (4) शेष 1% में, 0.5 % तारों से पूर्ति और 0.5% अन्य पदार्थ।

(आ) ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति : वैज्ञानिकों के मतः-

1. महाविस्फोट सिद्धान्तः-

पहले ब्रह्माण्ड का समस्त द्रव्य बहुत ही कम जगह में केन्द्रित था। वहाँ उसका घनत्व और तापमान अपरिमेय था। एक महाविस्फोट की स्थिति बनी। महाविस्फोट के तुरन्त बाद, ब्रह्माण्ड में विकिरण ऊर्जा थी और तापमान बहुत अधिक था। बाद में कुछ ठंडा होने पर इलेक्ट्रोन, प्रोटोन और न्यूट्रोन जैसे मूलकणों की उत्पत्ति उस विकिरण ऊर्जा से हुई।

बाद में इसमें हाइड्रोजन और हीलियम जैसे हल्के तत्त्व बने। तारों में दूसरे तत्त्वों का निर्माण हुआ। तारों में ऊर्जा का स्रोत तो आण्विक नाभिकीय क्रियाएँ (nuclear reactions) ही हैं।

2. स्थिरावस्थावान विश्वः-

इसके अनुसार यद्यपि विश्व विस्तृत हो रहा है, फिर भी उसमें नई जड़ राशि उत्पन्न हो रही है। अतः विश्व में जड़ की घनता स्थिर रहती है। प्रो. नारलीकर के अनुसार ब्रह्माण्ड के लघुक्षेत्रों में सृजन प्रक्रिया चलती रहती है।

3. आइन्स्टीन का विश्वः-

यह विश्व बेलनाकार है। इसमें दिक् और काल की सततता के ताने बाने से गुजरता हुआ एक पिंड, इसमें उसी तरह झोल पैदा करता है, जैसे कि रबड़ की चादर पर रखी हुई लोहे की वजनी गेंद। यदि धन वक्रता वाला विश्व है, तो वह सान्त और बद्ध है। और यदि ऋण वक्रता वाला है तो वह अनन्त और खुला विश्व है। जैन दर्शन आकाश को अनन्त मानता हुआ भी, निवासित आकाश (लोकाकाश) को सांत मानता है। लोकाकाश की वक्रता धन और अलोकाकाश की ऋण वक्रता मान लेने पर, जैन दर्शन का विश्व सिद्धान्त पुष्ट हो जाता है। (म.मु. पृ0 287)

विश्व 'सान्त है या अनन्त', इस प्रश्न को सुलझाने के लिए वैज्ञानिक 'आकाश की वक्रता' की कल्पना करते हैं। जैन दर्शन इसका समाधान-

(1) ऋण-धन ईथर और

(2) आकाश के विभागीकरण के निरूपण से करते हैं। (म. मुनि)

4. हालांकि अधिकतर वैज्ञानिक विस्तारवान विश्व को मान्यता देते हैं, लेकिन फिर भी यह असंदिग्ध सिद्धांत नहीं है।

जैन दर्शन के अनुसार 'लोकाकाश' का विस्तार नहीं होता है। आकाशीय पिंडों की गति के कारण आपसी दूरियाँ बदलती रहती हैं। यह स्वतः संचालित कम्पनशील विश्व, चक्रीय विश्व के अनुरूप चल रहा है। काल प्रवाह के साथ-साथ निर्माण और ध्वंस की क्रियाएँ साथ-साथ चलती हैं।

5. चन्द्रशेखर लिमिट/सीमाः-

यदि किसी तारे का द्रव्यमान, सूर्य के द्रव्यमान से 1.44 गुणे से अधिक है, तो वह तारा श्वेत-वामन नहीं बनेगा। इस द्रव्यमान को चन्द्रशेखर सीमा कहते हैं। वस्तुतः तारे संतुलित रहते हैं, अर्थात् गुरुत्वाकर्षण का दबाव, आंतरिक दबाव को संतुलित रखता है। यह आंतरिक दबाव तारे के गर्भ (भीतर) में हो रहे आंतरिक आण्विक प्रक्रियाओं के द्वारा उत्सर्जित विकिरण के कारण पैदा होता है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि जब आण्विक भट्टी क्षीण होने लगती है, तो आंतरिक दबाव भी कम होने लगता है। एक स्थिति के बाद यह आंतरिक विकिरण बल, गुरुत्वाकर्षण के दबाव को संतुलित रखने में असमर्थ हो जायेगा। उस परिस्थिति में, गुरुत्वाकर्षण का बल तारे के द्रव्य को निचोड़ना शुरु करेगा। इससे तारा सिकुड़ना शुरु करेगा। इस प्रक्रिया से तारों की 3 अंतिम अवस्थाएँ पैदा हो सकती हैं-1. श्वेत वामन, 2. न्यूट्रोन तारा, 3. कृष्ण विवर। यदि तारे का भार चन्द्रशेखर सीमा से 1.44 गुणा से ज्यादा है, तो गुरुत्वाकर्षण का दबाव, आंतरिक विकिरण के बहिर्गामी दबाव से ज्यादा रहेगा। तारा सिकुडने की प्रणाली में आकर, आखिर में न्यूट्रोन स्टार में परिवर्तित हो जायेगा।

यदि तारे का द्रव्यमान चन्द्रशेखर सीमा 1.44 गुणा से कई गुणा ज्यादा हो तो वह तारा आखिर में एक कृष्ण विवर (Black hole) बन जायेगा।

(इ) ब्रह्माण्ड का घनत्वः-

दिक् में संकेन्द्रित पदार्थ बहुत विरलता में मौजूद है। ब्रह्माण्ड में पदार्थ के घनत्व (Ω) के हिसाब से ब्रह्माण्ड की समतलता या उसके स्वरूप का निर्धारण होता है। घनत्व का एक मान 'क्रांतिक' (Ω) माना गया है। घनत्व के मान के अनुसार दिक् के 3 भिन्न-भिन्न रूप हो सकते हैं। यदि घनत्व क्रांतिक से ज्यादा है- ब्रह्माण्ड का विस्तार रुकेगा और वह सिकुड़ने लगेगा। फिर पुनः वह उसी तरह के लगभग शून्य परिमाण के बिन्दु में समाहित हो

जायेगा। (यानी घनत्व Ω बढ़ता है, तो बढ़ता ही जायेगा) ऐसे ब्रह्माण्ड में एक त्रिभुज के कोणों का योग 180^0 से अधिक होगा तथा उसकी वक्रता 'धनात्मक' कहलाती है।

ऐसा दिक् एक गोल की तरह बंद होगा। अर्थात् मानो कि दिक् स्वयं ही पलटकर, लौटकर वापस जुड़कर अपने आप को बंद कर लेता है। ऐसे दिक् को 'संवृत' या 'अंडाकार' (eliptical) आकाश कहते हैं। ऐसा दिक् अनन्त तो नहीं होगा, किन्तु अपरिबद्ध (unbounded) या परिसीमित होगा। त्रिआयामी गोले की तरह।

- घनत्व Ω के मान पर दिक् की समतलता या उसका रूप निर्भर करता है। यह घनत्व निर्धारित करता है कि दिक् समतल है या वक्र है। किसी गोले की तरह परिसीमित है या समतल की तरह खुला है।
- यदि ब्रह्माण्ड का घनत्व Ω C से कम है, तो ब्रह्माण्ड फैलता ही जायेगा, और लगभग शून्य में परिणत हो जायेगा। ऐसे ब्रह्माण्ड में एक त्रिभुज के कोणों का योग 180^0 से कम होगा। उसकी वक्रता ऋणात्मक कहलायेगी। ऐसा दिक् अनन्त होगा। ऐसे दिक् को खुला या विवृत दिक् या अति परवलय दिक् कहते हैं।
- अभी के ब्रह्माण्ड का घनत्व क्रांतिक के लगभग बराबर है। अतः दिक् लगभग समतल माना जा रहा है।

(ई) विज्ञान की मान्यता में सौर-मण्डलः-

1. पृथ्वीः-

यह सौर-परिवार का एक ग्रह माना गया है, जो अपनी धुरी पर भी घूमती है। यह नारंगी की तरह गोल पिंड है।

(1) इसके ऊपर की पपड़ी या भूपटल कुछ सौ किलोमीटर मोटा माना गया है। इसमें खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। (चित्र-1)

(2) उसके नीचे ठोस और सख्त चट्टानों का ऊपरी कवच है, जो 1000 कि.मी. मोटा है। इसके भीतर के पदार्थों का तापक्रम 1600^0c तक हो सकता है। जहाँ लोहा भी पिघला हुआ रहता है।

(3) इस कवच के आगे, 1900 कि.मी. मोटाई का भीतरी गर्म कवच है। इसमें पाये जाने वाले पदार्थ बहुत अधिक दबाव व तापक्रम पर होने के कारण, लई के रूप में हो सकते हैं। (कीचड़ की तरह अर्धठोस)। इनका तापक्रम $2000-2500^0$C तक होगा।

(4) उसके 2100 कि.मी. नीचे तक एक मोटा बाहरी गुदा है, जो पिघले हुए पदार्थों से बना है। इसका तापक्रम 5000^0C तक हो सकता है। कई पदार्थों का दबाव व तापक्रम तो, उसके क्रांतिक बिन्दु तक पहुँच जाता है।

(5) उसके नीचे केन्द्र में करीब 2740 कि.मी. व्यास का, घनी ठोस चट्टानों का एक क्षेत्र है। यह अत्यधिक दबाव का क्षेत्र है।

2. सूर्यः-

इस विशाल आकाशीय पिंड पर आण्विक क्रियाओं द्वारा सतत ऊर्जा पैदा होती रहती है। इसके परिवार में कई ग्रह और उपग्रह हैं, जो इसका चक्कर लगाते हैं। इसके धरातल पर पदार्थ अपनी चौथी अवस्था, 'प्लाज्मा' रूप में पाया जाता है। यहाँ हाइड्रोजन गैस निरन्तर हीलियम गैस में परिवर्तित होती रहती है। विकिरण द्वारा यह ऊर्जा, ब्रह्माण्ड में विसर्जित होती रहती है। इसकी भट्टी में नीचे गहराई से ईंधन के रूप में, नये पदार्थों की आपूर्ति होती रहती है। फिर उसके नीचे, पदार्थ अपनी अन्य अवस्थाओं में, यथा ठोस, तरल आदि में उपलब्ध होता है। यहाँ तक कि

उसका केन्द्र या मूल तो अत्यधिक दबाव के चलते, ठोस, जमी हुई घनीभूत चट्टानों से बना हो सकता है।

3. अंतरिक्ष में दूरियाँ:-

ब्रह्माण्ड में कई निहारिकाएँ, जो एक दूसरे से लाखों प्रकाश-वर्ष दूर हैं, गमन कर रही हैं। एक-एक निहारिका में अरबों तारे हैं, जिनके अपने-अपने सौर-मंडल या परिवार हैं। परिवार के सदस्यों का, साधारण-तया अपना ऊर्जा स्रोत नहीं होता है। इन तारों व ग्रहों की रचना अधिकतर अपने सूर्य-परिवार की तरह ही है।

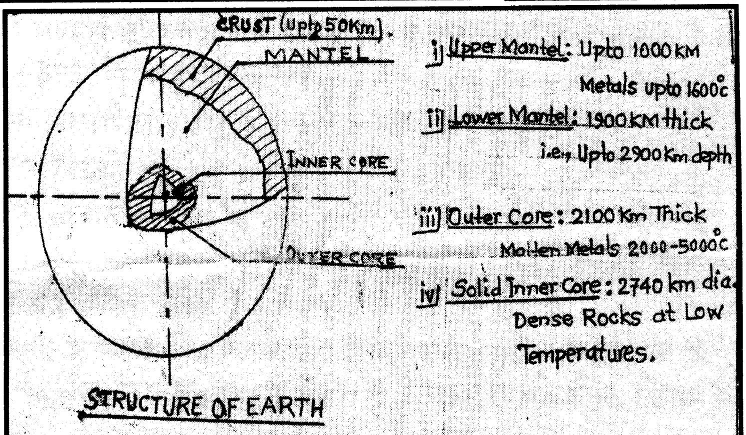

चित्र: 1 पृथ्वी की आंतरिक संरचना

लेकिन इस ब्रह्माण्ड में ऐसे भी असंख्य तारे हैं, जिन पर पदार्थ अपनी उच्च अवस्था में, यानी आइंस्टीन-बोस संघनित, फरमियोन-डेरेक संघनित और पारदर्शी-स्फटिक अवस्था में पाया जाता है। ये अवस्थाएँ पृथ्वी पर केवल प्रयोगशालाओं में पैदा की जा सकती हैं।

अभी भी ब्रह्माण्ड में ऐसे अनेक तारा-पुंज हैं, जो सबसे शक्तिशाली, हब्बल जैसी दूरबीनों से भी नहीं देखे जा सकते हैं। फिर ग्रहों का तो कहना ही क्या? असंख्य सूर्य और ग्रह यहाँ से इतने दूर हैं कि उनका असली अवस्थान निर्धारित करना, आज के वैज्ञानिक के लिए भी दुष्कर है।

4. बिना दूरबीन का ब्रह्माण्ड (आज से 500 वर्ष पहले तक):-

रात्रि में असंख्य चमकते हुए तारे दिखाई देते थे, जिनमें या तो-

(1) स्वयं में ऊर्जा पैदा होती थी (आण्विक भट्टी) या

(2) ये चमकते तारे/ग्रह, दूसरे सितारों से आये प्रकाश और ताप को सोखते या परावर्तित करते हैं।

(3) इनमें बहुत सी ऐसी पृथ्वियाँ हो सकती हैं, जहाँ हमारी जैसी सभ्यताएँ होंगी या कोई अन्य प्रकार के तिर्यंच होंगे।

फिर भी असंख्य तारे मानव दृष्टि के बाहर ओझल रहते थे। इस परिप्रेक्ष्य में यदि कोई साधारण आदमी, किसी सर्वज्ञ से पूछता कि इस विशाल ब्रह्माण्ड में कहाँ-कहाँ, किन-किन पृथ्वियों या तारों पर प्राणी उपलब्ध हैं, तो एक अनगिनत पृथ्वियों और तारों की भीड़ में, जिनमें से कई दृष्टिगम्य भी नहीं थे, वे सर्वज्ञ सभी कुछ देखते/जानते हुए भी, उस साधारण बुद्धि वाले मानव को कैसे, एक बोधगम्य भाषा में, समझायें कि अमुक जगह पर जीव विचरण कर रहे हैं। ऐसा निर्धारित अवस्थान दिखाना दुर्गम्य ही लगता है।

ऐसी समस्या आज के वैज्ञानिकों के सामने भी आने वाली है। हालांकि उन्होंने कई आधुनिक मानक तैयार किये हैं, नामकरण के लिए कि एक वैज्ञानिक, दूसरे को गम्य भाषा में जानकारी दे सके।

फिर भी जैसे-जैसे असंख्यात या अनन्त संख्या की ओर बढ़ेंगे, तो आज के वैज्ञानिक उपकरण और प्रणालियाँ भी छोटी पड़ सकती हैं।

(A) वैज्ञानिक दृष्टि से पृथ्वी की सतह की प्राकृतिक संरचना:

नारंगी की तरह गोल पृथ्वी का तीन चौथाई भाग समुद्रों से घिरा हुआ है। शेष एक चौथाई हिस्सा द्वीपों और महाद्वीपों की सतह का है। इस सतह पर प्राकृतिक नदियों, महानदियों, पहाडों और मैदानों का जाल बिछा हुआ है।

(1) महाद्वीप:-

पूर्वार्द्ध में एशिया और यूरोप नाम के दो महाद्वीप पूर्व से पश्चिम तक फैले हुए हैं। ये दोनों आपस में जुड़े हुए हैं। अतः एक ही पृथ्वीखण्ड बनाते हैं। इस खण्ड से सटा हुआ दक्षिण की तरफ फैला हुआ तीसरा महाद्वीप है, जिसको अफ्रीका कहते हैं। इसके ठीक विपरीत दिशा में, यानी पृथ्वी के दूसरे अर्धभाग में, उत्तर से दक्षिण तक फैला हुआ दूसरा पृथ्वीखण्ड है, जिसको उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका कहते हैं।

पृथ्वी जिस धुरी पर घूमती है, उसके उत्तरी और दक्षिणी छोर के आसपास के क्षेत्र को उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव कहते हैं। उत्तर का क्षेत्र पानी से घिरा हुआ है, तथा दक्षिणी क्षेत्र ठोस जमीन का है, जिस पर बर्फ जमी हुई है। इस भूखण्ड को अंटार्टिक महाद्वीप कहते हैं। इस महाद्वीप और एशिया के बीच एक बड़ा द्वीप अवस्थित है, जिसे आस्ट्रेलिया कहते हैं। (चित्र-1)

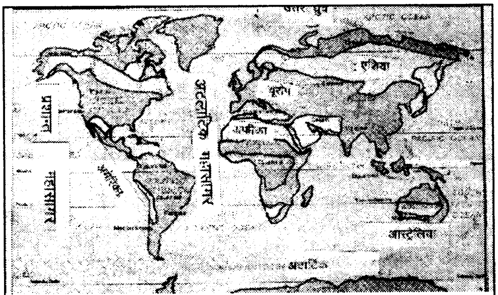

चित्र-1 विश्व का भौगोलिक मानचित्र

(2) महासागर:-

यूरोप और अफ्रीका के पश्चिम में फैली जलराशि को अंधमहासागर (अटलांटिक) कहते हैं। एशिया के दक्षिण में फैली जलराशि को हिन्द-महासागर कहते हैं।

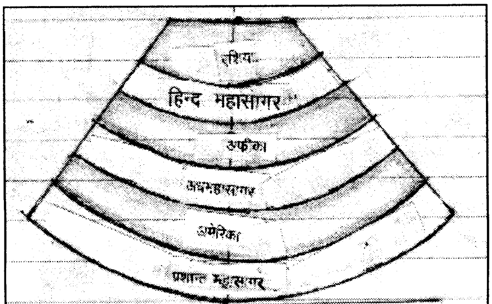

चित्र-1a विश्व का समूह रेखाचित्र

एक दृष्टि से **एशिया, यूरोप और अफ्रीका** आपस में जुड़े हुए नजर आते हैं। उसके चारों ओर जो जल राशि है, उसके दक्षिणी भाग को हिन्द-महासागर, पश्चिमी भाग को अंधमहासागर, पूर्वी भाग को प्रशान्त महासागर तथा उत्तरी जल राशि को उत्तरी-सागर कहते हैं। इसी तरह अमेरिकी पृथ्वी पिंड के पूर्व में अंध महासागर है तथा पश्चिम में प्रशान्त महासागर अवस्थित है।

अंटार्टिक महाद्वीप एक बर्फीला ध्रुवीय प्रदेश है, जिसके चारों ओर अंध, प्रशांत और हिन्द महासागर की दक्षिणी जल-राशि फैली हुई है। इस द्वीप के ऊपर हिम खण्ड (ग्लेशियर), पहाड़ और मैदान हैं। इन सब महाद्वीपों और महासागरों को सजावटी तरीके से एक समूह रेखाचित्र (चित्र 1a) द्वारा दर्शाया जा सकता है।

(3) पहाड़ और नदियाँ:-

एशिया के मध्य-दक्षिण में हिमालय पर्वत है, जो पूर्व से पश्चिम में फैला हुआ है। यह पामीर की गांठ से उत्तर-पूर्व की तरफ भी निकला हुआ है। इस पर्वत से कई **नदियों के युग्म** निकलते हैं, जो महासमुद्रों में मिलते हैं।

यूरोपीय पृथ्वीखण्ड पर जो पूर्व से पश्चिम की तरफ पर्वत माला है, उसे आल्पस पर्वत कहते हैं। यूरोप और एशिया के बीच उत्तर से दक्षिण तक अराल पर्वत फैला हुआ है। अफ्रीका के मध्य पूर्व में काली मंजारो का महापर्वत है।

अमेरिकी महाद्वीप पर उत्तर से दक्षिण तक, उसके पश्चिमी किनारे पर एण्डीज का **महापर्वत** है।

उपर्युक्त महापर्वतों से जो मुख्य **महानदियाँ** निकलती हैं, वे नीचे की तालिका में बताई गई हैं।

क्र.सं.	नदी युग्म	कहाँ पर बहती हैं	कहाँ पर गिरती हैं
1.	गंगा-सिंधु	हिमालय, शिवालिक/भारत	हिन्द महासागर
2.	दजला-फरात	पश्चिम एशिया	हिन्द महासागर
3.	इरावदी-मिकांग	दक्षिणी-पूर्वी एशिया	हिन्द महासागर
4.	यांग्त्से-सिकियांग	पूर्वी एशिया	प्रशान्त महासागर
5.	ह्वांग्हो	पूर्वी एशिया	प्रशान्त महासागर
6.	ऑब-येनिशि	उत्तरी एशिया	उत्तरी सागर
7.	लीना-वोल्गा	पश्चिम/उत्तरी एशिया	उत्तरी सागर
8.	कृष्णा-गोदावरी	भारत	बंगाल की खाड़ी (हिन्द महासागर)
9.	नर्मदा-ताप्ती	भारत	बंगाल की खाड़ी (हिन्द महासागर)

एशिया के बाहर महानदियाँ

क्र.सं.	नदी युग्म	कहाँ पर बहती हैं ?	कहाँ पर गिरती हैं ?
	यूरोप		
1.	वोल्गा यूराल	पूर्वी यूरोप	केस्पियन सागर
2.	एल्बे-राइन	उत्तरी यूरोप	उत्तरी सागर
3.	डेन्यूब-प्रूट/नेपर	पूर्व-दक्षिणी यूरोप	काला सागर
4.	टीबरोन-पो	मध्य-यूरोप	मेडिटेरियन/अंध महासागर
5.	साइन-तेजो	उत्तर-पश्चिम	अंध महासागर
	दक्षिण अमेरिका		
1.	अमेजोन-तोकांटिंस	उत्तर में एण्डीज से	अटलांटिक महासागर
2.	पराना-यूरेग्वे	मध्य से पूर्व की ओर	अटलांटिक महासागर
3.	कोलाराड़ो-नेग्रो	दक्षिण-पूर्व	अटलांटिक महासागर
4.	ओरिनोको	उत्तर में	अटलांटिक महासागर
	उत्तरी अमेरिका		
1.	मिसीसिपी-मिसूरी	मध्य से पूर्व की ओर	अटलांटिक महासागर
2.	मेकेन्जी-यूकोन	(एण्डीज से)	अटलांटिक महासागर
	अफ्रीका		
1.	झेइरे-नाइजर	उत्तर-पश्चिम	अंध महासागर
2.	क्वांझा-ओरेंज	दक्षिण-पश्चिम	अंध महासागर
3.	लिंपापा-झांबेजी	दक्षिण-पूर्व	हिन्द महासागर
4.	नील (श्वेत-नील)	उत्तर-पूर्व	भूमध्य/अंधसागर

(B) **मानव सभ्यताएँ:-**

प्राचीन काल में नदियों के किनारे और उनके मैदानी क्षेत्रों में कई मानव सभ्यताओं का विकास हुआ। चूँकि मानव सभ्यताओं में **कृषि** ही प्रमुख **समृद्धि का स्रोत** रहा है, अतः इसके लिए नदी सभ्यताएँ ही विकसित हो पाई। इनका मुख्य आधार निम्नलिखित था-

1. मजबूत राजाओं/शासकों के आ जाने पर उन सभ्यताओं के विकास में तेजी आ जाती थी।
2. जब किसी शासक ने दूसरों को अपने अधीन किया, तब उनसे अपने वैभव/दौलत में इजाफा किया।
3. जिन शासकों ने अपने राज्यों में कला, विद्या, सदाचार और संस्कृति को सम्मान दिया, यानी धर्म के साथ लोगों में सर्जनात्मकता को बढ़ावा दिया और जो मद-मदिरा में डूबने से बचे रहे उनके शासनकाल में सभ्यता का विकास हुआ।
4. यह सब विकास उन्हीं मैदानों में हुआ, जहाँ कृषि योग्य जमीन, वातावरण और प्रचुर मात्रा में जल उपलब्ध रहा तथा जहाँ प्राकृतिक आपदाएँ कम आती थीं।

विश्व की मुख्य प्राचीन सभ्यताएँ

क्र.सं.	**प्राचीन सभ्यता**	**वरदान**	**वर्ष पूर्व**
1.	मोहनजोदड़ो व हडप्पा	सिंधु नदी का	5000
2.	आर्य सभ्यता	गंगा सिंधु नदियाँ	3000
	द्रविड़ सभ्यता	गंगा सिंधु नदियाँ	4000
3.	चीनी सभ्यता	ह्वांग-हो व यांगत्से-सीकियांग नदियाँ	4500
4.	मिश्र (फाराओ) आदि	नील महानदी	5000
5.	बेबीलोन व सुमेर सभ्यता	दजला-फरात नदियाँ	5000
6.	रोमन सभ्यता	इटेली की नदियाँ और तीन तरफ का समुद्र तट	2500
7.	ग्रीक सभ्यता	चारों ओर का समुद्र तट और शासकों की महत्त्वाकांक्षा तथा दर्शनिकों का सम्मान	2700

(C) जैन विज्ञान के अनुसार ब्रह्माण्ड:-

जैन दर्शन के अनुसार यह लोक जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल- इन छह द्रव्यों से व्याप्त है। आकाश द्रव्य के जितने क्षेत्र में उक्त छहों द्रव्य पाये जाते हैं, उसे लोक कहते हैं। उसके बाहर के आकाश को अलोक कहते हैं। यानी जिस आकार से धर्म और अधर्म द्रव्य लोकाकाश में स्थित है, उसी आकार से 'लोक' स्थित है।

यह सुप्रतिष्ठक आकार यानी 'त्रिशराव सम्पुटाकार' है। एक शिकोरा उल्टा, उस पर एक सिकोरा सीधा, फिर उस पर एक उल्टा रखने से जो आकार बनता है, उसे सुप्रतिष्ठक कहते हैं। दूसरे शब्दों में यह दोनों पैर फैलाकर, कमर पर हाथ रखे पुरुष के आकार के समान है। (चित्र-2,3)

लोक के तीन भेद हैं:-

1. **अधोलोक:** लोक के निचले हिस्से को अधोलोक कहते हैं। इसकी ऊँचाई सात राजू है। इसमें नारकी और

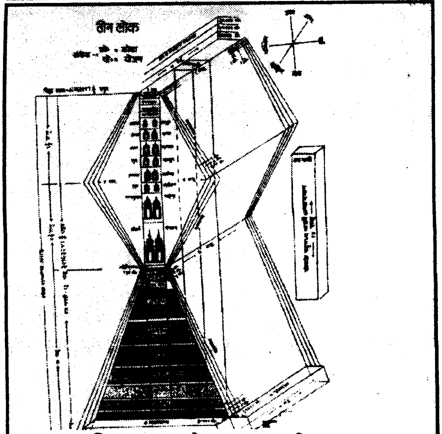

चित्र–3 लोक का परिमाण

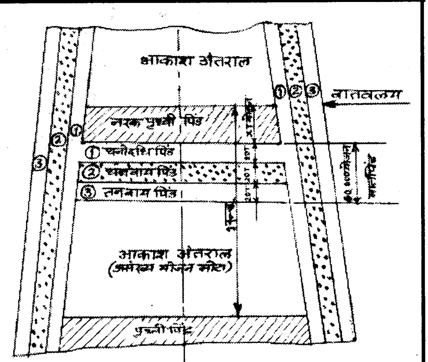

चित्र–4 अधोलोक (ऊपरी भाग)

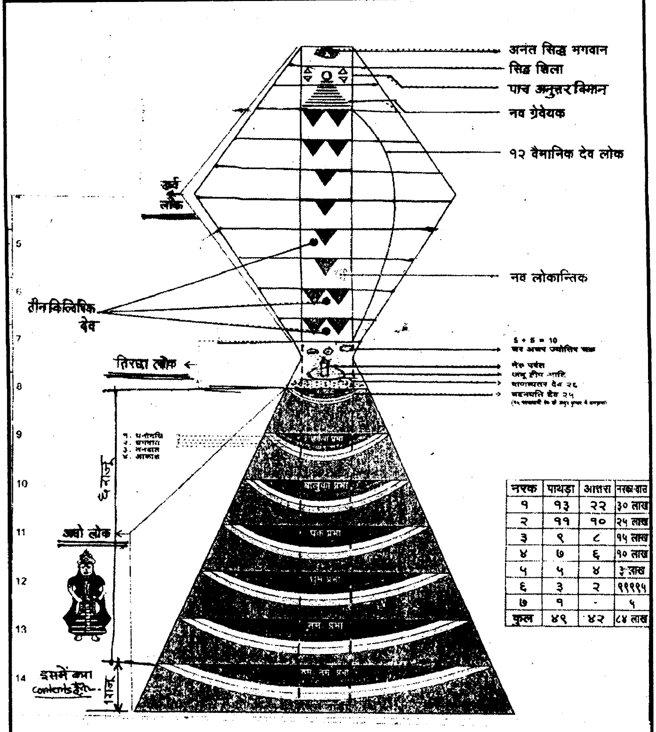

नरक	पाथड़ा	आत्तरा	नरकावास
१	१३	२२	३० लाख
२	११	१०	२५ लाख
३	९	८	१५ लाख
४	७	६	१० लाख
५	५	४	३ लाख
६	३	२	९९९९५
७	१	-	५
कुल	४९	४२	८४ लाख

चित्र–2 अलंकार शैली में ब्रह्माण्ड का मानचित्र

भवनपति देवों का निवास है।(चित्र 4)

2. मध्यलोक: लोक का मध्यभाग है। इसमें मनुष्य और तिर्यंचों का आवास है। व्यंतर और ज्योतिषी देवों का आवास भी मध्य लोक में होता है। यह असंख्यात द्वीपों और समुद्रों से परिवेष्टित है। मध्यलोक की ऊँचाई **1 लाख 40 योजन** है।

3. ऊर्ध्वलोक: मध्यलोक से लोकान्त तक। इसमें वैमानिक देवों का वास स्थान है। मुक्त जीव ऊर्ध्वलोक के शिखर पर विराजमान हैं। ऊर्ध्वलोक की ऊँचाई 7 राजू है। मध्यलोक की ऊँचाई इसी में शामिल है। अधोलोक का घनफल 196 R^3, **ऊर्ध्वलोक** का 147 घनरज्जू है। समग्र लोक 343 R^3 है। चित्रः(3)

(श्वेताम्बर और दिगम्बर परम्परा के गणितीय विवेचन में कुछ फर्क है।)

1 रज्जू के नाप में भी कुछ भिन्नता है।

महेन्द्रमुनिजी ने 1 रज्जू को=$(10^{10})^{196}$ माइल बताया है। जब कि अन्य विधि से गणना करने पर 1 रज्जू 40,000 प्रकाश–वर्ष की ही दूरी को इंगित करता है।

(D) वातवलय:

यह संपूर्ण लोक, ऊपर–नीचे चारों तरफ 3 प्रकार के वात वलयों/वायुमंडलों से वेष्टित है। यथा–घनोदधि, घनवाय और तनुवाय। लोक के तल में इनकी मोटाई 20–20 हजार योजन है। बाकी पार्श्व भागों में 7 योजन से लगाकर लोक शिखर पर कुछ कोस तक रह जाती है। (चित्र–3, 4)

(इस विषय में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित लेखक की 'लोकाकाश एक वैज्ञानिक अनुशीलन' पुस्तक द्रष्टव्य है।)

-40, कमानी सेण्टर, दुसरा माला, बिस्तापुर, जमशेदपुर-831001

युवा-स्तम्भ

विज्ञान और धर्म

डॉ. धर्मचन्द जैन

विज्ञान और धर्म दोनों हमारे जीवन के लिए उपयोगी हैं। विज्ञान के दो पक्ष हैं- एक तो कारण-कार्य सिद्धान्त के आधार पर प्रयोगधर्मिता और दूसरा उसके आधार पर विकसित तकनीकी। विज्ञान के इन दोनों पक्षों का अपना महत्त्व है, किन्तु कार्य-कारण सिद्धान्त के आधार पर जो प्रयोगधर्मिता है वह जीवन के वैचारिक विकास के लिए अधिक उपयोगी है और तकनीकी विकास से जो साधन उपलब्ध हुए हैं, उनसे जीवन सुकर हुआ है।

वैज्ञानिक सोच और धर्म एक-दूसरे के विरोधी नहीं, अपितु पूरक हैं। विज्ञान ने जहाँ परम्परागत धार्मिक अन्धविश्वासों को दूर किया है वहाँ धर्म ने विज्ञान एवं तकनीकी के कारण उपलब्ध भोग-सामग्रियों के प्रति उत्पन्न इच्छाओं पर नियन्त्रण का पाठ पढ़ाया है। वैज्ञानिक सोच जहाँ व्यक्ति को प्रयोगधर्मी बनाती है वहाँ धार्मिक आस्था व्यक्ति को तनाव की विभिन्न अवस्थाओं से राहत पहुँचाती है। विज्ञान के कारण जहाँ शारीरिक रोगों के निवारण हेतु चिकित्सा केन्द्र सुलभ हुए हैं (तथा अत्यल्प संख्या में मनोचिकित्सा केन्द्र भी उपलब्ध हैं) वहाँ धर्म से आत्मिक और मानसिक रोगों की सहज चिकित्सा होती है।

धर्म और विज्ञान के कार्यों में महान् भेद है। विज्ञान जीवन-मूल्यों की बात नहीं करता, धर्म जीवन-मूल्यों को महत्त्व देता है। नैतिकता, ईमानदारी, प्रामाणिकता, सहनशीलता, स्वावलम्बन, स्वदोष दर्शन, आत्म-परिष्कार आदि मूल्य धर्माचरण से आगे बढ़ते हैं। वैज्ञानिक सुख-सुविधाओं का उपभोग करने वाला भ्रष्टाचारी, बेईमान और दुराचारी भी हो सकता है। धर्म में जहाँ 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' का सिद्धान्त कार्य करता है वहाँ वैज्ञानिक सुख-सुविधाओं का उपभोक्ता अत्यन्त स्वार्थी भी हो सकता है। वैज्ञानिक सोच का अपना महत्त्व है। किन्तु वैज्ञानिक सोच वाले व्यक्ति बहुत कम मिलते हैं। अधिकतर व्यक्ति तो विज्ञान और तकनीकी के द्वारा विकसित सुख-सुविधाओं का अधिकतम उपभोग करने की मानसिकता वाले हैं। उपभोग की इन वस्तुओं का साधन तो धन है। जिसके पास जितना अधिक धन है वह उतने ही अधिक साधन जुटा सकता है। उसे यह जानने की आवश्यकता नहीं होती कि सुख-सुविधा के साधन का निर्माण कैसे हुआ है।

विज्ञान के साथ तकनीकी का संबंध है। तकनीकी के विकास के साथ विभिन्न प्रकार की सुख-सुविधा प्रदान करने वाली वस्तुओं का विकास हुआ है। इन वस्तुओं के प्रति आम उपभोक्ता का आकर्षण बढ़ा है। क्योंकि इनके उपयोग से उसे सुविधाओं का अनुभव हुआ है। आज विज्ञान के द्वारा प्रदत्त विद्युत-प्रयोग आम व्यक्ति की आवश्यकता बन गई है। वाहनों की सड़कों पर रेलमपेल है। वायुयान की यात्रा सुकर लगने लगी है। हाथ से मोबाइल छूटता नहीं है। तात्पर्य यह है कि विज्ञान ने मानव को बहुत कुछ दिया है। जीवनशैली निरन्तर बदलती जा रही है। पहले सैकड़ों वर्षों में जीवनशैली में इतना बदलाव नहीं आता था, जितना आज हर दशक में देखा जा रहा है। वैज्ञानिक उपकरणों ने जीवन को सुविधा-सम्पन्न तो बनाया है, किन्तु परावलम्बन की ओर भी धकेला है, जबकि धर्म स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाता है। परावलम्बन सुख का नहीं दुःख का स्रोत है।

धर्म के साथ भी प्रज्ञा का होना आवश्यक है। मात्र रूढ़िवाद धर्म नहीं है, मात्र कर्मकाण्ड धर्म नहीं है, उसके साथ आत्मिक शुद्धि के भावों का जुड़ना आवश्यक है। धर्म बाह्य सुख-सुविधाओं और जीवन की नश्वरता

का बोध कराता है तथा आत्मिक शाश्वत सुख को प्राप्त करने की ओर अग्रसर करता है। इस दृष्टि से 'धर्म' विज्ञान से बढ़कर है। विज्ञान के प्रयोग मूर्त्त पदार्थों तक सीमित हैं जबकि धर्म अमूर्त आत्मा को विषय करता है। वह आत्मा का स्वभाव भी है। जब कोई सत्-असत् के बोध के साथ आत्म-धर्म में स्थित होता है तो वह अपने कर्त्तव्य रूपी धर्म का भी सम्यक् पालन करता है।

धर्म के भी दो रूप हैं- एक वह धर्म जो सीधा आत्मा के साथ जुड़ा हुआ है, आत्मशुद्धि और कर्मक्षय ही जिसका कार्य है। धर्म का दूसरा रूप व्यावहारिक जगत् से जुड़ा हुआ है। यह धर्म देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित भी हो सकता है। यह धर्म धारण किया जाता है। 'धार्यते असौ इति धर्मः'। यह परिवार, समाज, राष्ट्र आदि के प्रति कर्त्तव्यों का भी बोध कराता है। इसीलिए शास्त्र में ग्राम-धर्म, नगर-धर्म, राष्ट्र-धर्म आदि का उल्लेख आता है। धर्म का यह रूप बाह्य या व्यावहारिक है। उसका पारमार्थिक रूप तो आत्मशुद्धि या मुक्ति है।

धर्म का स्वरूप विभिन्न युगों में कैसा भी हो रहा हो उसमें विकृतियाँ भी आती रही हों, किन्तु उसने मानव जाति का बहुत बड़ा उपकार किया है। आज भी भारत में यदि धार्मिक आस्था न हो तो मानसिक रूप से विक्षिप्त व्यक्तियों की संख्या पचासों गुनी हो सकती है। कष्ट, वियोग, हानि, पीड़ा आदि के समय व्यक्ति सोचता है कि यह मेरे पूर्व कर्मों का फल है और ऐसा सोचकर वह अपने में उनको सहन करने की शक्ति का विकास कर लेता है।इसी प्रकार ईश्वर में आस्था रखने वाला धार्मिक व्यक्ति उसे ईश्वर का प्रसाद समझकर सहर्ष सहन कर लेता है। कोई इसे अपने भाग्य का फल मानकर बिना किसी उद्विग्नता के सहन करता है। इस प्रकार धार्मिक आस्थाओं ने एवं दार्शनिक सिद्धान्तों ने मनुष्य को कठिन परिस्थितियों में भी मानसिक बल प्रदान किया है। विज्ञान ने तो मानसिक तनाव को ही बढ़ाया है।

वैज्ञानिक विकास के साथ मनुष्य की इच्छाओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इच्छा की पूर्ति नहीं होने पर तनाव और दुःख के अवसर बढ़ते हैं। शारीरिक रूप से भी व्यक्ति अधिक अस्वस्थ होते जाते हैं। उच्च रक्तचाप, हृदयाघात, मधुमेह, केन्सर आदि रोगों से ग्रस्त व्यक्तियों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। धर्म के साथ यम-नियम जुड़ें हुए हैं, जिनमें इच्छाओं पर नियन्त्रण होता है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के प्रति आस्था और पालन के प्रति सजगता होती है जिससे व्यक्ति को अनुपम आनन्द का अनुभव होता है।

विज्ञान जहाँ व्यक्ति को क्षणिक और नश्वर सुखों के प्रति आकृष्ट कर रहा है वहाँ धर्म स्थायी सुख एवं अपरिमित आनन्द का मार्ग प्रशस्त करता है। विज्ञान एक स्वच्छन्द जीवन की ओर प्रलोभित करता है, वहाँ धर्म उस पर संयम की लगाम लगाता है। धर्मरहित विज्ञान व्यक्ति एवं विश्व के विनाश का निमित्त हो सकता है , क्योंकि विज्ञान ने अत्यन्त शक्तिशाली बमों का भी विकास किया है।

विज्ञान के तकनीकी विकास ने व्यक्ति के जीवन में इतना अधिक प्रवेश कर लिया है कि व्यक्ति आत्मिक चिन्तन, योग और साधना के लिए भी समय नहीं निकाल पा रहा है। विज्ञान के द्वारा दी गई सुविधाएँ निश्चित रूप से आश्चर्यकारी हैं। सूचना तकनीक का भी जबरदस्त विकास हुआ है। नई पीढ़ी का ज्ञान भी समृद्ध हुआ है, किन्तु इसके साथ ही संयम, नैतिकता, इच्छा-नियन्त्रण, दूसरों के प्रति आत्मवद् भाव, पारस्परिक सहयोग का भाव आदि का भी प्रशिक्षण अनिवार्य है।

शिक्षा जगत् में विज्ञान का तो स्थान है, किन्तु धर्म-शिक्षण का कोई स्थान नहीं है। धर्म के साथ जीवन-मूल्यों का शिक्षण नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के रूप में दिया जाना आवश्यक है। इंजीनियरिंग, मेडीकल विज्ञान के कई छात्र-छात्राओं का आज एकांगी विकास हो रहा है। यही कारण है कि वे उच्छृंखलता और असंयम की ओर

अधिक बढ़ते हैं। बड़े होकर भी उनमें भ्रष्टाचार का प्रवेश शीघ्र हो जाता है। भावी पीढ़ी विज्ञान के साथ धर्म का भी महत्त्व समझे, उसे प्रज्ञापूर्वक आचरण में स्थान दे तो विभिन्न पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है। (जिनवाणी, नवम्बर-2004 का सम्पादकीय)

-3 के 24-25, कुडी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-342008 (राज.)

ईस्वी सन् 2017 के घोषित अहिंसक अगते

(जो प्रतिवर्ष प्रभावी है)

राजस्थान सरकार स्वायत्त शासन विभाग के नोटिफिकेशन संख्या एफ. 1/609/एल.ए.जी./49 दिनांक 14.01.50, 20.11.67, 12.09.74, 29.09.88 एवं एफ.-29/विविध/डी.एल.बी./2000/1394-1617 दिनांक 18.5.2000 एवं स्वायत शासन विभाग 2001/7740 दिनाँक 28.08.02 के अनुसार ईस्वी सन् 2017 में राज्य में घोषित अहिंसक अगताओं की माहवार सूची नीचे दी जा रही है। इन दिनों बूचड़खाने, कसाई खाने व पशुओं को कत्ल कर मांसादि का विक्रय करना कानूनन निषिद्ध है।

क्र.सं.	दिनांक	नाम अगता	वार	घोषित तिथि/दिनांक
1.	26 जनवरी	गणतन्त्र दिवस	गुरुवार	26 जनवरी
2.	30 जनवरी	गांधी निर्वाण दिवस	सोमवार	30 जनवरी
3.	24 फरवरी	महाशिवरात्रि	शुक्रवार	फाल्गुन कृष्णा 13
4.	28 मार्च	अग्रसेन जयंती	मंगलवार	चैत्र शुक्ला 1
5.	05 अप्रेल	(स्था.)महा.ज्योतिराव फूले ज.	बुधवार	चैत्र शुक्ला 9
6.	05 अप्रेल	रामनवमी	बुधवार	चैत्र शुक्ला 9
7.	09 अप्रेल	भ. महावीर जयंती	रविवार	चैत्र शुक्ला 13
8.	14 अप्रेल	(स्था.) अम्बेडकर जयंती	शुक्रवार	14 अप्रेल
9.	06 मई	आ.देवेन्द्रमुनि निर्वाण दिवस	शनिवार	वैशाख शुक्ला 11
10.	10 मई	बुद्ध पूर्णिमा	बुधवार	वैशाख शुक्ला 15
11.	15 अगस्त	स्वतन्त्रता दिवस	मंगलवार	15 अगस्त
12.	15 अगस्त	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	मंगलवार	भादवा कृष्णा 8
13.	25 अगस्त	गणेश चतुर्थी	शुक्रवार	भादवा शुक्ला 4
14.	26 अगस्त	ऋषि पंचमी	शनिवार	भादवा शुक्ला 5
15.	05 सितम्बर	अनन्त चतुर्दशी	मंगलवार	भादवा शुक्ला 14
16.	02 अक्टूबर	गाँधी जयंती	सोमवार	2 अक्टूबर
17.	15 अक्टूबर	पेडा ग्यारस	रविवार	कार्तिक कृष्णा 11
18.	18 अक्टूबर	छोटी दीपावली	बुधवार	कार्तिक कृष्णा 14
19.	19 अक्टूबर	दीपावली	गुरुवार	कार्तिक कृष्णा 30 (अमावस)
20.	04 नवम्बर	कार्तिक पूर्णिमा	शनिवार	कार्तिक शुक्ला 15

नोट-1. राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर खण्डपीठ के निर्णय रिट याचिका सं. 1170/88 दिनांक 26.07.88 तथा श्रम विभाग के आदेश सं. एफ.11/9/श्रम/86 दिनांक 22.12.88 के अनुसार **प्रत्येक शुक्रवार को भी अहिंसक अगता घोषित** है।

2. अगतों की पालनार्थ कृपया संबंधित पालिकाधिकारी, जिला कलेक्टर, उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार व पुलिस अधीक्षक, थानाधिकारी व श्रम विभाग अधिकारी से सम्पर्क करें।

-प्रेमचन्द कोठारी, बून्दी (राज.)

अनुरोध

पाठकों से अनुरोध है कि प्रस्तुत अंक **'जैन धर्म और विज्ञान'** को समर्पित है। आप अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करावें।**-सम्पादक**

नारी-स्तम्भ

चित्त की अचिन्त्य शक्ति

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

चित्त की शक्ति अचिन्त्य है। जो कार्य चित्त नहीं कर सकता वह अन्य किसी से भी नहीं हो सकता। भाव के ही प्रभाव से व्यक्तित्व व परिस्थितियों का निर्माण होता है। जीवन का विकास व विनाश सब भावना के ही विविध खेल हैं। भाव के प्रभाव को प्रकट करने वाली एक सुन्दर लोक कथा है।

फारस के एक शहर के बाहर एक बूढ़ा फकीर बैठा रहता था। वह बड़ा तत्ववेत्ता था। उसने एक बार देखा कि एक भीषण आकृति वाली नारी शहर की ओर आ रही है। फकीर ने उससे पूछा, 'तुम कौन हो? और किधर जा रही हो?

उसने कहा-मैं महामारी हूँ और इस शहर में दुष्ट-प्रकृति-व्यक्तियों को भक्षण करने जा रही हूँ।

फकीर ने कहा-'नगर में सज्जन भी तो हैं।'

महामारी ने कहा-मैं नगर के केवल एक हजार दुर्जनों का ही भक्षण करूँगी।

दूसरे दिन फकीर ने सुना कि नगर के कितने ही हजार नर-नारी महामारी के शिकार हो गये हैं। दूसरे दिन शाम को महामारी नगर से निकल कर जा रही थी, तो फकीर ने उसको कहा-तुमने तो कल नगर में प्रवेश करते समय मुझे कहा था कि तुम केवल एक हजार लोगों को ही खाओगी, परन्तु तुमने तो कितने ही हजार लोगों का सफाया कर दिया। तुमने फकीर के सामने भी झूठ बात कही।

महामारी ने बड़े विनम्र भाव से उत्तर दिया- "महाशयजी, मैंने कल आप से सच ही कहा था तथा सचमुच मैंने केवल एक हजार मनुष्यों का ही भक्षण किया है। शेष तो सब भय के मारे मरे हैं। इसमें मेरा क्या कसूर है।"

वस्तुत: उपर्युक्त लोक कथा बड़ी अर्थ पूर्ण है। यह सच है कि व्यक्ति पर जितना प्रभाव भौतिक प्रकृति का पड़ता है, उससे कितने ही गुना प्रभाव मानसिक प्रकृति का पड़ता है। इस संबंध में और भी उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

मृत्युदंड दिए गए एक व्यक्ति को कहा गया कि उस पर कोई वैज्ञानिक प्रयोग किया जायेगा जिसके फलस्वरूप उसकी मृत्यु होगी। उसके नेत्रों पर पट्टी बांध दी गई फिर उसका प्रत्येक अंग सूई से इस प्रकार विद्ध दिया गया कि रक्त की एक बूँद भी न निकले। जल का नल खोल दिया गया तथा उससे कहा गया कि तुम्हारे शरीर से रक्त निकल कर बह रहा है। कुछ ही काल में वह व्यक्ति रक्त बहने की भावना में बहकर मर गया।

भावना प्राण-दान भी करती है। बनारस स्टेशन की बात है। रेलवे का एक प्वाइण्ट्समैन रेल से नीचे गिर पड़ा और उसका मेरूदण्ड टूट गया। डाक्टरों ने कह दिया कि वह अब दो घंटे से अधिक जीवित नहीं रह सकता। किन्तु वह बार-बार दोहराता रहा, डाक्टर साहेब मैं नहीं मरूँगा, मैं नहीं मरूँगा। आप मेरे पट्टी बांधिये। डॉक्टरों ने उसकी तृप्ति के लिए पट्टी बांधी और चले गए। वह व्यक्ति नहीं मरा।

डाक्टर ने उससे पूछा-तुम कैसे बच गये?

उसने उत्तर दिया-मेरा विवाह हुए तीन माह हुए हैं। मेरे तीन पुत्र हैं। यदि मैं मर जाऊँ तो उनका पालन-पोषण कौन करेगा?

वास्तव में इस कथन में बहुत सच्चाई है कि यदि किसी का मन अपने किसी प्रियजन में अटक रहा होता है

तो उसकी मृत्यु भी अटक जाती है।

प्रथम महायुद्ध के समय, सन् 1915 की बात है। जब पेरिस नगर पर आकाश से बम फैंके जा रहे थे, उस समय एक दिन पांचवी मंजिल पर रहने वाली पक्षाघात से पीड़ित एवं चल सकने में सर्वथा असमर्थ एक महिला ने अपने को नीचे रहने वाले नौकर के घर में पाया। वहाँ वह कैसे आई इसका उसे कुछ भी ज्ञान न था। वास्तव में, उसके पास एक बम गिरा था और वह तत्क्षण नीचे भाग आयी थी। येनकेन प्रकारेण प्राण-रक्षा करने की तीव्र भावना ने उसकी सभी चित्त-वृत्तियों को वश कर लिया था और उसी भावना या तीव्र प्रवृत्ति के अनुरूप भागने की क्रिया भी हो गई थी। विशेष आश्चर्य की बात तो यह है कि वह महिला पक्षाघात के रोग से सदा के लिए मुक्त भी हो गई।[1]

भावों के प्रभाव के कभी कभी आश्चर्यजनक उदाहरण भी सामने आते हैं। भयभीत होने पर हिंसक पशु तक अपना स्वभाव भूल जाते हैं। दार्शनिक जेम्स द्वारा लिखित इस सम्बन्ध में एक घटना यहाँ प्रस्तुत की जाती है।

बंगाल में एक नदी में बाढ़ आई और मीलों तक पानी ही पानी फैल गया। उस असीम जल-राशि के बीच में केवल एक टीला जल के ऊपर उठा हुआ बचा था। आसपास के लोग उसी पर एकत्र हुए थे। थोड़े समय पश्चात् एक सिंह भी तैरता हुआ वहां पहुँचा और लोगों के बीच बिना किसी प्रकार गुर्राये व हानि पहुंचाये हाँफते-हाँफते लेट गया। भय के मारे सिंह अपनी हिंसक प्रकृति भूल चुका था।[2]

ऐसी ही एक घटना लेखक की जन्म भूमि के क्षेत्र में भी घटी। विक्रम संवत् 2000 के श्रावण बदि चतुर्दशी को खारी नदी में भयंकर बाढ़ आई। हजारों मनुष्य व पशु बाढ़ में बहे। उनमें से जिन मनुष्यों को जल में खड़े पेड़ों पर चढ़ने का अवसर मिला उन पेड़ों पर सैकड़ों विषधर सर्प भी बैठे थे और लगभग 24 घंटे उन सबको साथ-साथ बिताने पड़े, परन्तु किसी भी सर्प ने किसी मनुष्य को डसने का प्रयास नहीं किया और न मनुष्यों से डर कर ही भागे। बाढ़ के बीच के टीलों पर भी हिंसक पशु अपने बैर भाव को भुलाकर शान्त भाव से बैठे देखे गये। आज भी इन आश्चर्यजनक घटनाओं के दर्शक व साक्षी पचासों व्यक्ति विद्यमान हैं।

मनोभाव और भूत-प्रेत

भूत, प्रेत, डाकिन लगना आदि व्याधियों में से अधिकांश का कारण भी विचारों की भ्रान्ति ही है। जिन बालकों व बालाओं को इसकी काल्पनिक कहानियाँ सुनने को मिलती हैं वे उनके विचारों में घर कर लेती हैं। जब वे अंधेरे में या अकेले होते हैं तो उनके विचार छाया-चित्रों के रूप में मूर्तिमन्त होने लगते हैं और उनको पेड़-पौधों आदि पर स्थित भूतों के प्रतिबिंब या वे साकार रूप में दिखाई देने लगते हैं। दुर्बल मन या दुर्बल बुद्धि वाले व्यक्ति के हृदय में जब वे प्रगाढ़ रूप धारण कर लेते हैं तो समय व अवसर पाकर सिर पर सवार हो जाते हैं तथा उसे नाना नाच नचाने लगते हैं। ऐसे व्यक्ति विचित्र प्रकार की हरकतें व प्रलाप करने लगते हैं। उनका ऐसा विश्वास बन जाता है कि उन्हें भूत, प्रेत आदि किसी बाहरी या ऊपरी तत्त्व ने अपने अधीन कर लिया है, जबकि वास्तविकता इससे विपरीत है। उनके भूत-प्रेतों ने उनके अंदर ही जन्म लिया है। उनका बाहरी तत्त्व से कोई संबंध नहीं है।

इसी प्रकार जब किसी निर्बल मन या निर्बुद्धि व्यक्ति के हृदय में यह विचार जम जाता है कि कोई उसे मारने के लिए उस पर टोना कर रहा है या मूठ चला रहा है तो उसकी आंखों के सामने मृत्यु नाचने लगती है। वह सदा भयभीत व आशंकापरस्त रहता है। फलत: मानसिक व शारीरिक निर्बलता बढ़ती जाती है। उसका यह भ्रमात्मक विचार जितना-जितना विश्वास में बदलता जाता है, उतना ही उतना वह अपने में क्षीणता व दुर्बलता अनुभव करता है। 'वहम की दवा नहीं' कहावत उस पर चरितार्थ होती है और अंत में वह एक दिन काल के गाल में चला जाता है, जब कि उस पर कोई टोना किया ही न जा रहा हो।

विचारणीय तो यह है कि ऐसे भूतात्मक व भ्रमात्मक विचारों से ग्रस्त व्यक्ति अपनी बुद्धि का इतना ही

उपयोग नहीं करते कि यदि भूत-प्रेत या जादू-टोने में ऐसी असीम व अलौकिक शक्ति है तो वह असाधारण उच्च स्तरीय शक्ति है और ऐसी उच्च स्तरीय शक्ति के धारक व्यक्ति अपनी कार्यसिद्धि के लिए उच्च कोटि के ही साधन अपना सकते हैं अकारण ही दूसरों को दु:ख पहुंचाने वाले जघन्य साधन व नीच कर्म वे कभी नहीं अपना सकते। आशय यह है कि भूत-प्रेत, जादू-टोना तद्नुरूप विचारों के ही प्रतिबिंब व परिणाम हैं।

प्रस्तुत लेख का विषय न होते हुए भी प्रसंगवशात् यह बतला देना अनुपयुक्त न होगा कि रोग के समान आकस्मिक दुर्घटनाओं के मूल कारणों में भी मनोभाव ही मुख्य हैं। प्रारम्भ में दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति के मन में तीव्र कषाय व विषयेच्छा रूप दुर्भावों का प्रादुर्भाव होता है और किन्हीं कारणों से उनकी पूर्ति असंभव हो जाती है। फलत: वह निराश हो जाता है। संसार से उसे घृणा हो जाती हैं, और वह इतना ऊब जाता है कि उसे जीने में कोई रस नहीं रहता है। जीवन के प्रति निराशा, नीरसता व उदासीनता के भाव उसके अचेतन मन, अंतर्मन में घर कर जाते हैं और वह जीवन रक्षक शक्तियों में शिथिलता ला देता है। अत: वह मरणान्तक भय उपस्थित होने पर भी उपेक्षित रहता है तथा सद्बुद्धि, दुस्साहस व तत्क्षण उचित निर्णय देकर उसे सावधान करने तथा बचाने के लिए यथेष्ट प्रयत्न नहीं करता। यही कारण है कि वह व्यक्ति उस समय सम्भल नहीं पाता। असाधारण साहस नहीं दिखाकर बच नहीं पाता है। अत: दुर्घटनाओं से बचने के लिए निराशाजनक विचारों से दूर रहना होगा। परामनोविज्ञान भी उसमें निहित कार्य-कारण सम्बन्ध का उद्घाटन कर रहा है। भविष्य में इस पर विशेष प्रकाश पड़ने की संभावना है। (जिनवाणी, मार्च-1969 से गृहीत)

संदर्भ:-

1. C.Bandonin : Suggestion and auto-suggestion, P. 116
2. The Varieties of Religions Experience.

-जयपुर (राज.)

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के दिसम्बर-2016 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत **'स्वावलम्बी लीवर शुद्धिकरण चिकित्सा'** के प्रश्नों के उत्तर 20 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि-	**नाम**	
प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.)	श्रीमती विजयाजी कोठारी-अजमेर (राज.)	(69/70)
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	सौ. जयश्री मंगेशकुमारजी छोरिया-मालेगांव-नाशिक (महा.)	(68.5/70)
तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)	1. श्री वीरेन्द्रजी कुम्भट-जोधपुर	(68/70)
	2. श्री राणूलाल माणिकचन्दजी कोचर-नाशिक (महा.)	(68/70)

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो श्री चंचलमल जी चोरड़िया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व फोन मय पूर्ण पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें। पता नहीं लिखे जाने पर उसे प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जाएगा।

प्रचारक की आवश्यकता

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक जोधपुर को मारवाड़ व अन्य क्षेत्रों में परीक्षा सम्बन्धी गतिविधियों के प्रचार-प्रसार एवं गुणात्मक स्तर में सुधार करने हेतु योग्य एवं अनुभवी प्रचारक की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें। **-नवरतन गिड़िया,** सचिव-अ. भा. श्री आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) मो.- 94141-00759, कार्यालय- 0291-2630490

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः101)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(गमा-नाणत्ता)

जिज्ञासा- पृथक्त्व वर्ष से लेकर एक करोड़ पूर्व वर्ष तक की आयु वाले सन्नी मनुष्य वैक्रिय के किन-किन घरों में आकर उत्पन्न होते हैं?

समाधान- पृथक्त्व वर्ष से लेकर एक करोड़ पूर्व वर्ष तक की आयु वाले सन्नी मनुष्य वैक्रिय के सभी 34 घरों में आकर उत्पन्न होते हैं। (34 घर हैं- सात नारकी के 7, दस भवनपति के 10, वाणव्यन्तर का 1, ज्योतिषी का 1, बारह देवलोक के 12, नव ग्रैवेयक का 1, चार अनुत्तर विमान का 1 तथा सर्वार्थसिद्ध विमान का 1)।

जिज्ञासा- पृथक्त्व वर्ष से लेकर एक करोड़ पूर्व वर्ष तक की आयु वाले सन्नी मनुष्य यदि वैक्रिय के उपर्युक्त 34 घरों में आते हैं तब कौन-कौन से नाणत्ते पड़ते हैं?

समाधान- पृथक्त्व वर्ष से लेकर एक करोड़ पूर्व वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य यदि वैक्रिय के 15 घरों में (पहली नारकी का 1, दस भवनपति के 10, वाणव्यन्तर का 1, ज्योतिषी का 1, पहले-दूसरे देवलोक के 2 घर) आते हैं, तब उनमें जघन्य गमे तथा उत्कृष्ट गमें दोनों में ही तीन-तीन नाणत्ते पड़ते हैं। वे तीन नाणत्ते हैं- 1. अवगाहना, 2. आयु, 3. अनुबन्ध।

इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि यदि उक्त 15 घरों में पृथक्त्व मास की स्थिति वाले सन्नी मनुष्य आते हैं तो उनमें जघन्य गमे से ज्ञान तथा समुद्घात इन दो बोलों का भी नाणत्ता पड़ता है, किन्तु पृथक्त्व वर्ष की स्थिति वाले सन्नी मनुष्य यदि इन 15 घरों में आते हैं तो उनमें ज्ञान तथा समुद्घात का नाणत्ता नहीं पड़ता है।

जिज्ञासा- जघन्य गमे वाले (पृथक्त्व वर्ष की आयु वाले) सन्नी मनुष्यों में अवगाहना का नाणत्ता क्यों पड़ता है?

समाधान- यहाँ पृथक्त्व वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य जघन्य गमे वाले होते हैं। जब ये जघन्य गमे से वैक्रिय से उपर्युक्त 34 घरों में आते हैं तब उन सन्नी मनुष्यों की अवगाहना पृथक्त्व हाथ (2 हाथ से 9 हाथ के लगभग) की ही होती हैं, इससे अधिक अवगाहना नहीं हो पाती। जबकि पृथक्त्व वर्ष से लेकर एक करोड़ पूर्व वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्यों की अवगाहना सामान्यतः पृथक्त्व हाथ से लेकर पाँच सौ धनुष तक की होती है पृथक्त्व हाथ से अधिक अवगाहना नहीं होने के कारण जघन्य गमे वाले इन मनुष्यों में अवगाहना का नाणत्ता पड़ता है।

जिज्ञासा- पृथक्त्व वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य जब वैक्रिय के 34 घरों में आते हैं, तब उनमें लेश्या, दृष्टि, ज्ञान, योग, समुद्घात तथा अध्यवसाय इन छह बोलों का नाणत्ता क्यों नहीं पड़ता है?

समाधान- पृथक्त्व वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य जब वैक्रिय के 34 घरों में आने वाले होते हैं, तब उन सन्नी मनुष्यों में लेश्या, दृष्टि, ज्ञान, योग, समुद्घात तथा अध्यवसाय का नाणत्ता इसलिए नहीं

पड़ता है कि इन सन्नी मनुष्यों की जघन्य गमे में भी 2 से 9 वर्ष के लगभग आयु तो होती ही है। इतनी लम्बी स्थिति में उन सन्नी मनुष्यों में छहों लेश्याएँ, तीनों दृष्टियाँ, चारों ज्ञान (तीनों अज्ञान), तीनों योग, छहों समुद्घात तथा दोनों अध्यवसाय मिल जाते हैं।

जिज्ञासा– क्या 9 वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य को मनःपर्याय ज्ञान तथा आहारक समुद्घात हो सकती है?

समाधान– छेद सूत्रों में उल्लेख मिलता है कि (साइरेग अट्ठवास) आठ वर्ष झाझेरी अर्थात् गर्भकाल तथा 8 वर्ष का बचपन काल व्यतीत होने के पश्चात् वह मनुष्य संयम अंगीकार कर सकता है। पूर्व भवों की विशिष्ट साधना, विशिष्ट क्षयोपशम तथा पूर्व लब्धि आदि के प्रभाव से वह संयम अंगीकार करने के कुछ समय बाद (अन्तर्मुहूर्त बाद भी संभव है) भी विशिष्ट अध्यवसायों की प्राप्ति हो जाने से मनःपर्याय ज्ञान, 14 पूर्वों का ज्ञान तथा आहारक लब्धि प्राप्त कर सकता है तथा आहारक लब्धि का प्रयोग करने के लिए आहारक समुद्घात भी कर सकता है।

जिज्ञासा– जघन्य गमे में आयु तथा अनुबन्ध का नाणत्ता क्यों पड़ता है?

समाधान– जघन्य गमा अर्थात् पृथक्त्व वर्ष की आयु वाला सन्नी मनुष्य है। इन सन्नी मनुष्य की आयु पृथक्त्व वर्ष से अधिक नहीं होती। जबकि ऐसे सन्नी मनुष्य की औधिक (सामान्य) आयु पृथक्त्व वर्ष से लेकर एक करोड़ पूर्व वर्ष तक की होती है। औधिक आयु से जघन्य गमे वाले सन्नी मनुष्य की आयु में अन्तर होने के कारण आयु का नाणत्ता पड़ता है।

आयु के समान ही गति, जाति, स्थिति, अवगाहना, अनुभाग और प्रदेश इन छह बोलों का अनुबन्ध होता है। आयु जघन्य होने से ये छह बोल भी जघन्य ही होते हैं, मध्यम तथा उत्कृष्ट नहीं होते अतः जघन्य गमे में आयु के समान अनुबन्ध का भी नाणत्ता पड़ता है।

जिज्ञासा– उत्कृष्ट गमे से वैक्रिय के घरों में आने वाले सन्नी मनुष्य में अवगाहना का नाणत्ता क्यों माना जाता है?

समाधान– उत्कृष्ट गमे से वैक्रिय के घरों में आने वाले सन्नी मनुष्य की अवगाहना 500 धनुष की होती है, इससे कम अवगाहना नहीं होती। जबकि संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य की औधिक अवगाहना पृथक्त्व हाथ से लेकर 500 धनुष तक की होती है। जघन्य तथा मध्यम अवगाहना उत्कृष्ट गमे से आने वाले इन सन्नी मनुष्यों में नहीं मिलती, इसीलिए अवगाहना का नाणत्ता माना जाता है।

जिज्ञासा– उत्कृष्ट गमे से वैक्रिय के घरों में आने वाले सन्नी मनुष्य में आयु तथा अनुबन्ध का नाणत्ता क्यों पड़ता है?

समाधान– उत्कृष्ट गमे से वैक्रिय के घरों में आने वाले सन्नी मनुष्यों की आयु एक करोड़ पूर्व वर्ष की ही होती है, इससे कम आयु नहीं होती। जबकि इन संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्यों की औधिक आयु पृथक्त्व वर्ष से लेकर एक करोड़ पूर्व वर्ष तक की होती है। जघन्य तथा मध्यम आयु उत्कृष्ट गमे वाले इन सन्नी मनुष्यों में नहीं मिलने के कारण आयु का नाणत्ता पड़ता है। आयु के समान ही अनुबन्ध होने के कारण अनुबन्ध का भी नाणत्ता पड़ता है।

-रजिस्ट्रार- अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

स्वास्थ्य-विज्ञान

अध्यात्म की उपेक्षा करने वाला स्वास्थ्य विज्ञान अपूर्ण

डॉ. चंचलमल चोरडिया

आज भौतिक विज्ञान के चमत्कारों से प्रभावित अधिकांश व्यक्ति वैज्ञानिक तथ्यों को ही सुनना, मानना, समझना और ग्रहण करना पसंद करते हैं, भले ही वे विज्ञान के मौलिक सिद्धान्तों से अपरिचित ही क्यों न हों। इसी कारण आज सनातन सिद्धान्तों की उपेक्षा विज्ञान के नाम पर हो रही है। आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान भी आज भ्रामक विज्ञापनों एवं मायावी आंकड़ों से प्रभावित हो रहा है।

विज्ञान क्या है?

विज्ञान का मतलब है विशिष्ट ज्ञान, जो क्रमबद्ध एवं सूत्रबद्ध ढंग से प्राप्त किया जाये अथवा विज्ञान ज्ञान प्राप्त करने की वह विधि है, जिसमें तार्किक विधियों एवं प्रयोगों अथवा परिणामों के आधार पर सत्य के निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है।

किसी भी वस्तु के सूक्ष्मावलोकन व विश्लेषण से प्राप्त यथार्थ ज्ञान को विज्ञान कहते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का मतलब ऐसी क्षमता से कार्य करना होता है, जिसमें कम से कम निवेश में लाभ अधिक से अधिक हो तथा हानि और दुष्प्रभाव भी कम से कम हो। सत्य की खोज का नाम विज्ञान है अर्थात् विज्ञान का मतलब पूर्ण ज्ञान, सम्यक् ज्ञान होता है। विज्ञान सत्य को स्वीकारता है और झूठ को नकारता है। उसका एकमात्र आग्रह पूर्ण सत्य पर होता है। जैसे-जैसे आंशिक अथवा अधूरे सत्य की पोल खुलने लगती है, वर्तमान की वैज्ञानिक मान्यता को भविष्य में अवैज्ञानिक करार दे दिया जाता है अर्थात् जो सत्य को परिभाषित करता है, वही विज्ञान होता है। विज्ञान का आधार होता है सच्चा सो मेरा न कि मेरा सो सच्चा। वास्तव में जो सत्य है उसको स्वीकारने में किसको आपत्ति हो सकती है। परेशानी तो तब होती है जब विज्ञान के नाम पर आंशिक तथ्यों पर आधारित अधूरे सत्य को पूर्ण बतलाने हेतु मायावी आंकड़े, झूठे भ्रामक विज्ञापनों एवं संख्या बल का सहयोग लिया जाता है तथा वास्तविकता एवं सनातन सत्य को नकारा जाता है। अपनी पद्धतियों को वैज्ञानिक तथा अन्य पद्धतियों को अवैज्ञानिक बतलाने का दुष्प्रचार किया जाता है। हमारा दृष्टिकोण संकुचित हो जाता है। विज्ञान के मूल मापदण्ड गौण होने लगते हैं। किसी भी तथ्य को वैज्ञानिक मानने के लिये अंतिम परिणामों की एकरूपता भी आवश्यक होती है, भले ही वह प्रयोग किसी के द्वारा कहीं पर भी क्यों न किया गया हो? अज्ञान का अर्थ ज्ञान का अभाव नहीं, परन्तु अल्प ज्ञान अथवा मिथ्याज्ञान भी होता है। अज्ञान से अविश्वास और भ्रान्ति पैदा होती है।

अधिकांश आधुनिक चिकित्सकों का अपनी खोजों की वैज्ञानिकता सिद्ध करने का दावा प्रायः ऐसा ही लगता है। विशेषकर स्वास्थ्य के नाम पर आयोजित होने वाले अधिवेशनों में प्रस्तुतीकरण का ऐसा ही आधार होता है। वैज्ञानिक शोध का आधार होना चाहिये अंतिम परिणामों का स्पष्ट प्रकटीकरण। अर्थात् लाभ और हानि का सही विश्लेषण। प्रत्येक चिकित्सक अपनी उपलब्धियों को तो बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करते हैं, प्रचारित करते हैं, परन्तु जहां अपेक्षित परिणाम नहीं मिलते अथवा जो दुष्प्रभाव होते हैं, उनकी उपेक्षा करते हैं, छिपाते हैं, प्रकट नहीं करते हैं तथा उनके कारणों का विश्लेषण तक नहीं करते हैं। स्वास्थ्य विज्ञान की शोध के आधार में एकरूपता होनी चाहिए अर्थात् जिन रोगियों अथवा प्राणियों पर दवाओं अथवा उपचार के जो प्रयोग किये जाते हैं, उसका खान-पान,

रहन-सहन, स्वभाव, मानसिकता, आचार-विचार, सोच, चिन्तन-मनन की प्रक्रिया, पारिवारिक समस्याएं तथा शरीर में अप्रत्यक्ष एवं सहयोगी रोगों की एकरूपता भी होनी चाहिए, क्योंकि यही कारण रोग से संबंधित होते हैं। ऐसी परिस्थितियां सभी रोगियों में एक सी होना कभी भी सम्भव नहीं होती। अत: उसके अभाव में प्रस्तुत परिणाम कैसे वैज्ञानिक और सत्य पर आधारित समझे जा सकते हैं, चिन्तन का प्रश्न है।

चैतन्य ऊर्जा का महत्त्व

सारा शरीर मुख्यतः दो प्रकार की ऊर्जाओं से संचालित होता है- 1. भौतिक ऊर्जा 2. चैतन्य ऊर्जा। किसी एक के पूर्ण अभाव में मानव जीवन चल ही नहीं सकता। भौतिक ऊर्जा शरीर के अंगों, उपांगों, अवयवों, तंत्रों आदि के निर्माण हेतु आवश्यक साधन उपलब्ध करने में सहायक होती है और चैतन्य ऊर्जा उन उपलब्ध साधनों से उनका निर्माण, संचालन और नियंत्रण करती है। चैतन्य ऊर्जा के अभाव में न तो शारीरिक अवयवों आदि का निर्माण ही सम्भव है और न ही जीवन। आधुनिक चिकित्सकों को आज तक नाखून, आंसू एवं पसीने की एक बूंद आदि का भी निर्माण करने में सफलता नहीं मिली। इसी कारण भौतिक विज्ञान के विकास के बावजूद चैतन्य ऊर्जा के अभाव में अभी तक शरीर के लिये आवश्यक कोशिकाओं, रक्त, वीर्य अस्थियों, मांस पेशियों, नाड़ियों आदि अवयवों तथा आँख, कान, नाक जैसी इन्द्रियों एवं हृदय, फेंफड़े, गुर्दे, लीवर जैसे अंगों का निर्माण प्रयोगशालाओं में सम्भव नहीं हो सकता। चैतन्य ऊर्जा का विकास आत्मा की पवित्रता के अनुसार होता है। अत: उपचार करते समय जो चिकित्सा पद्धतियाँ भौतिक और चैतन्य ऊर्जाओं को ठीक रखने, सन्तुलित रखने के सिद्धान्तों पर कार्य करती हैं, वे ही वैज्ञानिक कही जा सकती हैं।

जड़ विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान में भेद-

भौतिक ज्ञान विज्ञान के लिये आवश्यक है। फिर भी भौतिक ज्ञान तो वहीं तक हमारा साथ दे सकता है जहां तक वह जानता है और सिद्ध कर सकता है। इन्द्रिय ज्ञान से परे अतीन्द्रिय ज्ञान का भी अस्तित्व होता है, जिसे आध्यात्मिक विज्ञान अथवा आत्म ज्ञान कहा जा सकता है। टेप से आवाज ग्रहण कर पुन: सुना जा सकता है। रेडियो, टी.वी., वी.सी.आर, कम्प्यूटर, रोबोट आदि मनुष्य की आज्ञानुसार कार्य करते हैं, परन्तु स्वत: संचालित नहीं होते। आपत्तिकाल में आवश्यक स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम नहीं होते।

जड़ विज्ञान का कार्य क्षेत्र होता है भौतिक विकास, भौतिक सफलताएं, भौतिक उपलब्धियाँ आदि। उसका आधार होता है परावलम्बन, जबकि आध्यात्मिक विज्ञान से आत्मविकास का मार्ग प्रशस्त होता है। उसका आधार होता है स्वावलम्बन अर्थात् स्वयं के द्वारा स्वयं का निरीक्षण,परीक्षण, नियंत्रण, संचालन। उसका परिणाम होता है आत्मानुभूति। मनोबल और आत्मबल का विकास, अर्थात् भौतिक विज्ञान व्यक्ति को विशिष्ट बनाता है, जबकि आध्यात्मिक ज्ञान मानव को स्वाभाविक बनाता है।

भौतिक-विज्ञान प्रयोग में विश्वास करता है, जबकि अध्यात्म-विज्ञान योग-साधना में। विज्ञान शक्ति की खोज करता है, जबकि अध्यात्म शान्ति की। जिस प्रकार बिजली का तार और उसमें प्रवाहित विद्युत अलग-अलग होती है उसी प्रकार जड़ से संबंधित शरीर और चेतना से संबंधित आत्मा अलग-अलग होती है। अत: दोनों से संबंधित ज्ञान का लक्ष्य भी अलग-अलग होता है।

आध्यात्मिक साधकों की प्राथमिकता

स्वास्थ्य एवं जीवनयापन की दृष्टि से आत्म-साधकों का जीवन प्राणिमात्र के प्रति करुणा, दया और अनुकम्पा, सर्व जीव हिताय, सर्व जीव सुखाय की लोकोक्ति को सार्थक करने वाला होता है। उनके शोध और

साधना का मूल उद्देश्य आत्मा को निर्मल, शुद्ध, पवित्र बनाना होता है। अर्थात् आत्म पोषण का होता है, भले ही उन्हें कभी-कभी उसके लिए शरीर का कष्ट ही क्यों न सहना पड़े। उनके जीवन में क्रोध, मान, माया, लोभ रूपी कषायों की मन्दता होने से वे अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में परेशान नहीं होते। उनमें प्राय: मानसिक आवेग नहीं आते, जो हमारी ग्रन्थियों को प्रभावित कर रोग का मुख्य कारण होते हैं। आचरण में अहिंसा, सत्य, नैतिकता, संयम की प्राथमिकता होती है। प्राय: ऐसे व्यक्ति सहनशील, निर्भीक और धैर्यवान होते हैं। वाणी में विवेक और मधुरता का सदैव खयाल रखते हैं। उनका उद्देश्य होता है जीवन में चिरस्थायी आनन्द, शक्ति एवं स्वाधीनता की प्राप्ति। वे स्वयं के द्वारा स्वयं का आत्मावलोकन, निरीक्षण परीक्षण करते हैं। वे स्वयं के द्वारा स्वयं से अनुशासित होते हैं। उनका जीवन, शान्त, संतोषी, संयमी, सहज, संतुलित एवं सरल होता है। विचारों में अनेकान्तता, भावों में मैत्री, करुणा, प्रमोद तथा मध्यस्थता अर्थात् सहजता, स्वदोष-दृष्टि, सजगता, सहनशीलता, सहिष्णुता, दया, सरलता, सत्य, विवेक, संयम, नैतिकता आदि गुणों का प्रादुर्भाव होता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति के जीवन में अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में समभाव, निस्पृहता, अनासक्ति विकसित होती है। व्यक्ति निर्भय एवं तनाव मुक्त बन सकता है। वाणी में सत्य के प्रति निष्ठा, सभी जीवों के प्रति दया, करुणा, मैत्री, परोपकार जैसी भावना और मधुरता प्रतिध्वनित होने लगती है। व्यक्ति का मनोबल और आत्मबल विकसित होने लगता है। व्यक्ति स्वावलम्बी, स्वाधीन बनने लगता है।

अध्यात्म से शून्य स्वास्थ्य विज्ञान अपूर्ण

जिस चिकित्सा में शारीरिक स्वास्थ्य ही प्रमुख हो, मन, भावों अथवा आत्मा के विकार जो अधिक खतरनाक, हानिकारक होते हैं, गौण अथवा उपेक्षित होते हों या बढ़ते हों, ऐसी चिकित्सा पद्धतियों को ही वैज्ञानिक समझने वाले विज्ञान के मूल सिद्धान्तों से अपरिचित लगते हैं। वे विज्ञान शब्द का अवमूल्यन करते हैं। सनातन सत्य पर आधारित प्राकृतिक सिद्धान्तों को नकारते हैं।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.) फोन: 0291-2641454, मो- 094141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.in

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के इस अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित उपर्युक्त आलेख पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर **15 मार्च 2017** तक डॉ. चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं डाक पते सहित सीधे प्रेषित करें। विलम्ब से प्राप्त उत्तरों को प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

प्रश्न:-

1. क्या स्वास्थ्य के सनातन सिद्धान्तों की उपेक्षा उचित है?
2. स्वास्थ्य विज्ञान क्या है?
3. क्या स्वास्थ्य विज्ञान और भौतिक विज्ञान में अन्तर है?
4. क्या आधुनिक स्वास्थ्य-विज्ञान वैज्ञानिक मापदण्डों पर खरा उतरता है?
5. ऊर्जाएँ कितने प्रकार की होती हैं और वे स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करती हैं?
6. अध्यात्म की उपेक्षा करने वाला स्वास्थ्य विज्ञान अपूर्ण क्यों है?

(दिसम्बर-2016 के स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम पृष्ठ संख्या 50 पर देखें।)

बाल-जिनवाणी

जिनवाणी मासिक पत्रिका में नियमित रूप से बाल-स्तम्भ प्रकाशित किया जा रहा है। इस वर्ष इस पत्रिका के 75 वें वर्ष में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा की भावना का समादर करते हुए आठ बाल-जिनवाणी के कतिपय पृष्ठ इस अंक से प्रारम्भ किए जा रहे हैं। यदि बालक-बालिकाओं एवं किशोर-किशोरियों की ओर से अच्छी प्रतिक्रिया मिलेगी तो बाल-जिनवाणी का पृथक् से प्रकाशन किए जाने की योजना है। अतः आप अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करावें।-**सम्पादक**

परमेष्ठी वन्दना

संकलित

पंच परमेष्ठी को वन्दना-वन्दना,
मेरे प्राणों के भगवन तेरी अर्चना।।टेर।।
प्रभु अरिहंत से ज्ञान ज्योति मिली,
सिद्ध बनने की अंतर में चाह खिली।
भेद मिट जाए तुमसे यही चाहना।।1।।
संघ के प्राण आचार्य श्री को नमन,
उपाध्याय जी शासन के सुरभित सुमन।
धन्य निर्ग्रंथ गुरु की परम साधना।।2।।
प्रभु कहते हैं 'गौतम' ये उत्तम शरण,
जिनके आश्रय से मिट जाते जन्म-मरण।
पाँच पद के गुणों की करूँ फरसना।।3।।

जोड़ी मिलाइए

1.	भगवान महावीर	A.	चक्रवर्ती
2.	भगवान शांतिनाथ	B.	समभाव
3.	गौतम स्वामी	C.	तीर्थंकर
4.	आचार्य हस्ती	D.	दशवैकालिक सूत्र
5.	आचार्य शय्यम्भव	E.	द्वारिका
6.	आचार्य हीरा	F.	पंडित रत्न
7.	उपाध्याय मान	G.	पीपाड़
8.	अमर कुमार	H.	व्यसनमुक्ति
9.	सामायिक	I.	नवकार मंत्र
10.	श्री कृष्ण	J.	गणधर

उत्तरः- 1. (C), 2. (A), 3. (J), 4. (G), 5. (D), 6. (H), 7. (F), 8. (I), 9. (B), 10. (E)

टी.वी. (टेलीविजन)

श्री मुदित मेहता

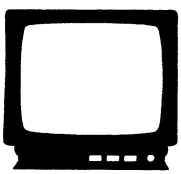

जब से घर में टी.वी. आया, बंद नहीं फिर हो पाया।
जागते हैं कम सोते हैं, अपनी आँखें खोते हैं।
खाते-पीते, चलते-फिरते बस रिमोट ही लेते हैं,
तंग हो जाते मम्मी-पापा फिर भी दिनभर टी.वी. भाता,
बंद हो गया है पढ़ना-लिखना, कक्षा में आगे बढ़ना।
मत टी.वी. से मेल करो, जीवन से मत खेल करो।
तभी बनेगा जीवन सच्चा, मम्मी कहेगी अच्छा बच्चा।।

जैन धर्म को जानें

श्री प्रमोद महनोत

प्रश्न– जैन या जैनी कौन?

उत्तर– जिन भगवान या जिन देव का उपासक हो, उसे जैन या जैनी कहते हैं। जिनदेव राग-द्वेष के विजेता होते हैं, अतः राग, द्वेष के विजेता की उपासना से तात्पर्य राग-द्वेष को घटाना है अर्थात् जो राग-द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि विकारों को घटाने के लिए प्रयत्नशील रहता है, वह जैन या जैनी है। जैन धर्म के सिद्धान्तों में जो दृढ़ विश्वास रखता है और उसके अनुसार ही आचरण करता है, वही जैनी कहलाता है। संक्षेप में जिनदेव को अपना आराध्य मानने वाला या जिनदेव द्वारा बतलाये हुए धर्म को मानने वाला उसके अनुसार आचरण करने वाला व्यक्ति जैन कहलाता है।

प्रश्न– समण (श्रमण) का क्या अर्थ है?

उत्तर– यह शब्द सम (श्रम) से बना है। जिसका अर्थ होता है समभाव, विकारों पर विजय एवं तपश्चर्या। वह आत्मा जो विकारों को दूर करने में श्रम करती है, श्रमण कहलाती है। भगवान महावीर ने श्रमण (समण) की भाव प्रधान व्याख्या की है। जो साधक शरीर आदि में आसक्ति नहीं रखता है, किसी प्रकार की सांसारिक कामना नहीं करता है, किसी प्राणी में हिंसा नहीं करता है, झूठ नहीं बोलता है, चोरी, मैथुन और परिग्रह के विकार से रहित है, इसी प्रकार जो इन्द्रियों का विजेता है, संयमी है, मोक्षमार्ग का सजग यात्री है, वह श्रमण कहलाता है।

प्रश्न– क्या जैन कुल में जन्म लेने मात्र से ही हम जैनी हैं?

उत्तर– हाँ, लौकिक दृष्टि से तो जैन माने जायेंगे किन्तु वास्तव में तो हिंसा, झूठ, चोरी आदि एवं शराब, गुटखा, जुआ, मांसाहार आदि व्यसनों को छोड़ने पर ही हम जैन कहला सकते हैं।

Activity- दिये गये चित्र से शब्दों को चुनकर रिक्त स्थान भरिए

1. ....को जीवन में स्थान न दें।
2. माँस सेवन से............में वृद्धि होती है।
3. जुआ खेलने से ....चौपट हो सकता है।
4. .... से धन व धर्म दोनों का नाश होता है।
5. शिकार से मूक पशुओं को ....होती है।
6. व्यसन सेवन से मनुष्य धर्म से...........हो जाता है।
7. व्यसन व्यक्ति और समाज को ....की ओर ले जाते हैं।
8. अपनी आत्मा के .... के लिए .... करें।
9. दूसरों की आज्ञा से बिना उनकी ....लेना चोरी है।
10. व्यसनी व्यक्ति ....का पात्र नहीं होता है।
11. व्यसन समाज को .... करते हैं।

Story of Monkey

Once there was a magical lake named kaamik-tirth. There was a tree next to the lake named Vanjul.

It was said that if any animal or bird would jump from the tree into the lake, then it would become a human, and any human jumped into the lake from the tree then he/she would become God. But if they jumped again in the lake, they would come back to their original form.

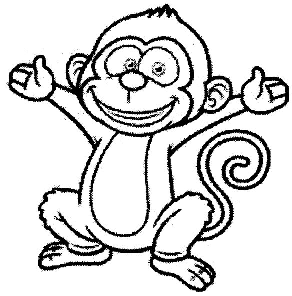

Once a man and a woman jumped into the lake from the tree and they became God and Goddess respectively. This was seen by a monkey and his wife and they did the same. The monkey and his wife became man and woman respectively. But the monkey was not satisfied, he was greedy. He thought of jumping again and becoming God. His wife tried to stop him but he did not listen to her. He jumped in the lake again and turned back into a monkey. His wife saw this and did not jump again in the lake.

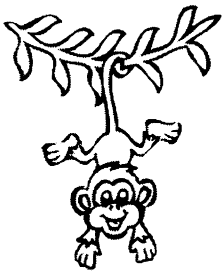

Monkey's wife was very beautiful. One day a king saw her and made her his queen. A madari took away monkey and trained him and earned money.

Once the madari, along with the monkey went to the king's palace to entertain him. There the monkey saw his wife and tried to talk to her. The queen then explained to him that because of his greed they had to part ways. The monkey regretted his decision and had to live an animal's life.

Moral:- Never become greedy in life and be satisfied.

हम जीते हैं किसलिए....?

श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया

हर रोज एक रोटी गाय के लिए।
एक लोटा पानी पेड़ के लिए।
जिन्दगी धर्म और समाज के लिए।
उठें हाथ प्रार्थना के लिए।
एक मुट्ठी दाना चिड़ियों के लिए।
सेवा का भाव सभी के लिए।
हम जियें ईमानदारी के लिए।
खुशियाँ बटोरने व खुशियाँ बांटने के लिए।

-52, कालार्थी पिल्लै स्ट्रीट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)

अच्छे बच्चों की अच्छी बातें

संकलित

1. अच्छे बच्चे सुबह जल्दी उठते हैं।
2. अच्छे बच्चे सुबह उठते ही पाँच नवकार मंत्र बोलते हैं।
3. अच्छे बच्चे सुबह उठकर माता-पिता और बड़ों को प्रणाम करते हैं।
4. अच्छे बच्चे स्वच्छ रहते हैं।
5. अच्चे बच्चे अपना काम ठीक समय पर स्वयं करते हैं।
6. अच्छे बच्चे रोज स्कूल जाते हैं।
7. अच्छे बच्चे बड़ों की आज्ञा का पालन करते हैं।
8. अच्छे बच्चे प्रेम से रहते हैं।
9. अच्छे बच्चे अच्छे बच्चों से मित्रता करते हैं।
10. अच्छे बच्चे अच्छे शब्द बोलते हैं।
11. अच्छे बच्चे जो मिले, उसमें सुख मानते हैं।
12. अच्छे बच्चे मन लगाकर पढ़ाई करते हैं।
13. अच्छे बच्चे दूसरों की चीजें पूछकर लेते हैं।
14. अच्छे बच्चे हमेशा सच बोलते हैं।
15. अच्छे बच्चे बड़ों का आदर करते हैं।
16. अच्छे बच्चे सत्संग करते हैं।
17. अच्छे बच्चे दूसरों की अच्छी बातें अपनाते हैं।
18. अच्छे बच्चे किसी को नहीं सताते हैं।
19. अच्छे बच्चे किताबें पढ़ते हैं।
20. अच्छे बच्चे अच्छे काम करते हैं।
21. अच्छे बच्चे दूसरों की मदद करते हैं।
22. अच्छे बच्चे अपनी गलती को मान लेते हैं।
23. अच्छे बच्चे रात को सोते समय नवकार मंत्र जपते हैं।
24. अच्छे बच्चे रात को जल्दी सोते हैं।
25. अच्छे बच्चे सदैव प्रसन्न रहते हैं।

बाल-स्तम्भ [दिसम्बर-2016] का परिणाम

जिनवाणी के दिसम्बर-2016 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'पाँच माशा स्वर्ण' के प्रश्नों के उत्तर 22 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	अभिषेक पालरेचा-जोधपुर (राज.)	28
द्वितीय पुरस्कार-300/-	अरिष्ट कोठारी-अजमेर(राज.)	27.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	अरिष्ट दीगड़-जयपुर (राज..)	27
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	अनिकेत जैन-जयपुर (राज.)	26.5
	दीक्षा छोरिया-नाशिक (महा.)	26.5
	नमन श्रेणिक छाजेड़-भुसावल (महा.)	25.5
	कुसुम मुरड़िया-बल्लारी (कर्नाटक.)	25.5
	अमीषा कोठारी-अजमेर (राज.)	25.5

कृत्रिम प्रकाश से फैलता प्रदूषण

श्री प्रदीप कुमार मुखर्जी

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 मार्च 2017 तक **जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003(राज.)** के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

आज शनिवार था यानी विज्ञान गोष्ठी का दिन। अनन्य कुलश्रेष्ठ के यहाँ बच्चों की भीड़ जुटी थी। वे विज्ञान के अध्यापक थे तथा स्कूल में अध्यापन के बाद बचने वाले समय में वे बच्चों में वैज्ञानिक जागरूकता पैदा करने के लिए हर शनिवार को अपने यहाँ विज्ञान गोष्ठियाँ आयोजित किया करते थे।

सभी बच्चे आ गए थे, बस जया के आने का ही इंतजार था। थोड़ी देर बाद जया भी आ पहुँची। वह बुरी तरह हाँफ रही थी। उसे हाँफते देखकर अनन्य ने पूछा-'क्या हुआ जया! हाँफ क्यों रही हो?'

जवाब में जया बोली- 'अंकल, मेरी आँख आज जरा देर से खुली थी। समय बचाने के लिए मैंने बिना हाथ धोए ही परांठा खा लिया। पापा ने यह देखकर मुझे बहुत डांटा। मम्मी ने भी पापा का साथ दिया। उनकी डांट खाते-खाते देर हो गई। तभी मैं भागते-भागते यहाँ आई हूँ। इसी कारण मुझे देर हो गई, अंकल।'

सुनकर गम्भीर हो गए अनन्य। बोले- 'यह ठीक है कि सुबह-सुबह आँख खुलने में कभी-न-कभी देर तो हो सकती है। लेकिन बिना हाथ धोए खाना स्वास्थ्य के लिए बड़ा हानिकारक है। इसलिए, बच्चों आप सभी लोगों को अच्छी तरह से हाथ धोकर ही खाना खाना चाहिए।'

श्वेता बोली- 'आपने ठीक कहा अंकल। अपने आसपास के परिवेश की स्वच्छता का पहला पाठ तो हाथ धोकर ही सीखा जाता है। हमारे स्कूल में सभी अध्यापक यही कहते हैं।'

अनन्य बोले- 'तुमने बिल्कुल ठीक कहा श्वेता। इन छोटे-छोटे पाठों को न पढ़ने के कारण ही हमारा पर्यावरण भी अब अस्वच्छ होता जा रहा है।'

राजन बोला- 'इसी को ही हम पर्यावरण प्रदूषण कहते हैं न अंकल।' जवाब में अंकल बोले-'हाँ राजन! पर्यावरण में किसी अवांछित बाहरी तत्त्व के पहुँचने को ही हम पर्यावरण प्रदूषण का नाम देते हैं, पर्यावरण प्रदूषण के अनेक प्रकार होते हैं; जैसे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण आदि।'

अब तक चुप बैठे सिद्धान्त ने मुँह खोला- 'अंकल, यह तो समझ में आया कि कूड़े-कचरे आदि से हमारे परिवेश के अस्वच्छ होने की तरह किसी अवांछित बाह्य तत्त्व के कारण हमारा पर्यावरण भी अस्वच्छ हो सकता है। इसी को हम पर्यावरण प्रदूषण कहते हैं। यह बताइए अंकल कि क्या प्रकाश से भी प्रदूषण हो सकता है? हमारे विज्ञान के अध्यापक अवस्थी सर ने हमें ऐसा बताया है।'

सिद्धान्त की बात सुनकर जया बोली– 'अंकल, प्रकाश तो अंधेरे की कालिमा को छांटकर उजाला देता है। उजाले को स्वच्छता का पर्याय मानने पर प्रकाश 'स्वच्छता' उत्पन्न करता है। फिर हम प्रकाश को प्रदूषण यानी 'अस्वच्छता' से कैसे जोड़ सकते हैं?'

सुनकर गम्भीर हो गए अनन्य। बोले– 'जया, जिस तरह तुम समझ रही हो, असल में बात उतनी सरल नहीं है। सिद्धान्त का कहना भी सही है। प्रकाश से भी प्रदूषण हो सकता है। तुम लोग जानना चाहोगे कि प्रकाश प्रदूषण क्या होता है?'

सबके हामी भरने पर अनन्य ने कहना शुरू किया–'तुम लोग जानते ही हो कि रात को प्रकाश हमें कृत्रिम प्रकाश स्रोतों से प्राप्त होता है। घरों के अलावा कार्यालयों, हवाई अड्डों, सड़क के किनारों, व्यावसायिक क्षेत्रों एवं अन्यान्य स्थलों पर इन कृत्रिम प्रकाश स्रोतों को लगे देखा जा सकता है। होता यह है कि इन कृत्रिम प्रकाश स्रोतों से उत्सर्जित होने वाला प्रकाश वायुमण्डल में मौजूद जल वाष्प के अणुओं तथा धूल कणों से परावर्तित होकर धरती की ओर लौटता है। इससे आसमान और धरती के बीच रोशनी की एक चादर सी बिछ जाती है। असल में यह अवांछित प्रकाश है जो एक किस्म के प्रदूषण को जन्म देता है जिसे प्रकाश प्रदूषण के नाम से जाना जाता है।'

स्वाति ने पूछा–'अंकल, आपने रोशनी की चादर को अवांछित प्रकाश बताया। इसी से ही प्रकाश प्रदूषण उत्पन्न होता है। अब वायु प्रदूषण से वायु अस्वच्छ होती है यानी उसकी गुणवत्ता प्रभावित होती है। उसी तरह जल प्रदूषण से जल की गुणवत्ता प्रभावित होती है। यह बताइए कि प्रकाश प्रदूषण से किसकी गुणवत्ता प्रभावित होती है?'

जवाब में अनन्य बोले–'स्वाति, धरती से अगर आकाश को देखना हो तो यह रोशनी की चादर बाधक बनती है। तभी इसे अवांछित प्रकाश कहते हैं। पहले मेरी आँखों से ही कुछ तारामण्डल, जैसे कि मृग तारामण्डल, सप्तर्षि मंगल तथा शुक्र, शनि आदि कुछ ग्रहों को पृथ्वी से ही बिना दूरबीन के देख पाना संभव था। लेकिन, प्रकाश प्रदूषण के कारण इन्हें देख पाना अब धीरे-धीरे मुश्किल होता जा रहा है। शहरी बच्चे तो प्रकाश प्रदूषण के कारण सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। आलम यह है कि ये बच्चे आकाशगंगा यानी मिल्की वे, सप्तर्षि मंगल तथा ध्रुव तारे तक को नहीं पहचान पाते।'

रिंकु बोली–' अंकल, मैं समझ गई। प्रकाश प्रदूषण के कारण आकाश, जो एक प्राकृतिक ताराघर यानी प्लेनेटोरियम का काम करता है, के अन्य एवं आकर्षक दृश्यों को देखने से हम धीरे-धीरे वंचित होते जा रहे हैं। यह तो सचमुच बहुत बुरा है।' अनन्य बोले–'तुमने ठीक कहा रिंकु। हमारे पूर्वज रात के आकाश में जिन मनोरम और मनभावन दृश्यों को देख पाते थे, उनसे हम वंचित होते जा रहे हैं और इसी कारण हमें कृत्रिम प्लेनेटोरियम की ओर रूख करना पड़ रहा है। लेकिन ये प्लेनेटोरियम प्राकृतिक आकाश के नजारों का भला कहाँ मुकाबला कर सकते हैं?'

सिद्धान्त ने पूछा– 'यानी प्रकाश प्रदूषण का सीधा असर आकाश दर्शन यानी स्काई वाचिंग पर पड़ रहा है। अंकल, यह बताइए कि प्रकाश प्रदूषण से केवल हमारा देश ही प्रभावित है या अन्य देशों पर भी इसका प्रभाव देखने को मिल रहा है?' अनन्य बोले–'सिद्धान्त, इस बारे में कुछ वैज्ञानिक अध्ययन किए गए हैं। उन अध्ययनों से यह नतीजा सामने आया है कि आज विश्व का कोई भी देश कृत्रिम प्रकाश से उत्पन्न प्रदूषण के प्रभाव से अछूता नहीं है। अध्ययन यह बताते हैं कि भू-मण्डलीय जनसंख्या का लगभग दो तिहाई हिस्सा प्रकाश प्रदूषण की चपेट में है।'

काफी देर चुप बैठी स्वाति ने पूछा– 'अंकल, यह बताइए कि प्रकाश प्रदूषण से निपटने के लिए क्या कोई प्रयास नहीं किए जा रहे हैं?'

जवाब में अंकल बोले– 'तुमने बड़ा अर्थपूर्ण प्रश्न किया है, स्वाति। असल में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका,

यूरोप तथा जापान में कृत्रिम प्रकाश से उत्पन्न प्रदूषण की बहुत पहले ही पहचान कर ली गई थी। तभी वहाँ प्रकाश प्रदूषण से सम्बन्धित कुछ कानून भी बने हैं। लेकिन, भारत के लिए प्रकाश प्रदूषण की अवधारणा फिलहाल नई ही है। हालांकि हमारे यहाँ भी प्रकाश प्रदूषण से उत्पन्न समस्या को, खासकर शहरों में महसूस किया जा रहा है जहाँ चकाचौंध करने वाली रोशनी के कारण सुदूर टिमटिमाते अधिकतर तारे नज़र नहीं आते हैं। असल में भारत के सभी प्रमुख शहरों की कमोबेश एक ही स्थिति है। यही कारण है कि शहरों से रात के आकाश को देखने पर मुश्किल से छह-सात दर्जन तारे ही नजर आते हैं जबकि शहरों से दूर के खुले या ग्रामीण अंचलों में आसमान में 2000 के करीब तारे दिखाई पड़ते हैं।'

सभी बच्चे अनन्य अंकल की बातों को बड़े मनोयोग से सुन रहे थे। श्वेता बोली- 'अंकल, यह बताइए कि जैसे स्वच्छ भारत अभियान के लिए जागरूकता फैलाने का काम किया जा रहा है, क्या प्रकाश प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए भी ऐसा कुछ हुआ है या कुछ होने की संभावना है?'

जवाब में अनन्य बोले- 'तुमने बड़ा अच्छा सवाल पूछा है, श्वेता। अमेरिका में सन् 1988 में आकाश दर्शन में रुचि रखने वाले एक दल के द्वारा इस दिशा में पहल करते हुए 'इंटरनेशनल डार्क स्काई एसोसिएशन' की स्थापना की गई थी। इस एसोसिएशन का उद्देश्य लोगों में समीचीन डिजाइन वाले प्रकाश स्रोतों के बारे में जानकारी देना था ताकि विद्युत ऊर्जा की बर्बादी पर अंकुश लगाने के साथ-साथ प्रकाश प्रदूषण की समस्या से भी निपटा जा सके।'

बहुत देर चुप बैठे राजन ने पूछा-' समीचीन डिजाइन वाले प्रकाश स्रोतों से आपका तात्पर्य क्या है, अंकल।' अनन्य ने बताया- 'राजन, सही डिजाइन वाले प्रकाश स्रोतों का अर्थ है ऊर्जा दक्ष प्रकाश स्रोत। ऐसे प्रकाश स्रोतों से न केवल बिजली की बचत होती है, बल्कि प्रकाश प्रदूषण की समस्या से भी इनकी मदद से काफी हद तक निपटा जा सकता है। तकनीकी उन्नति के चलते वैद्युत इंजीनियरों को अधिक दक्षता तथा समीचीन डिजाइन वाले कृत्रिम प्रकाश स्रोतों को विकसित करने में सफलता मिली है। हमारे देश में भी प्रकाश प्रदूषण के प्रति जागरूकता उत्पन्न कर ऐसे ऊर्जा दक्ष प्रकाश स्रोतों के इस्तेमाल को बढ़ावा मिलना चाहिए।'

जया बोली-'अंकल, प्रकाश प्रदूषण के बारे में इतनी अच्छी जानकारी आपने हमें दी। आपने बताया कि आकाश दर्शन, जो खगोलविज्ञान से सम्बन्धित है, को प्रकाश प्रदूषण प्रभावित करता है जिसके चलते रात्रि आकाश में नजारे अस्पष्ट या धुंधले नजर आते हैं। क्या प्रकाश प्रदूषण के कोई अन्य प्रभाव भी हैं?'

जवाब में अंकल बोले- 'हाल ही में किए गए अध्ययन यह बताते हैं कि मनुष्यों, पेड़-पौधों तथा पशु-पक्षियों के जीवन तथा उनके क्रिया-कलापों को भी प्रकाश प्रदूषण प्रभावित करता है।'

'ऐसा पाया गया है कि तेज रोशनी में पेड़-पौधों तथा पशु-पक्षियों के व्यवहार में परिवर्तन होता है। मनुष्यों के स्वास्थ्य को भी प्रकाश की तीव्रता तथा उसकी तरंगें प्रभावित करती हैं। ठण्डे प्रदेशों में ग्रीन हाउस में रखे पौधों तथा मुर्गियों के बाड़ों में आजकल एलईडी लैंपों से उत्पन्न प्रकाश का इस्तेमाल किया जा रहा है। इससे पेड़-पौधों की बढ़त तथा मुर्गियों के अण्डे देने एवं उनके प्रजनन की प्रक्रिया पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने के नतीजे सामने आए हैं।' कहकर रुक गए अनन्य। बच्चों के चेहरों को उन्होंने गौर से देखा। सभी संतुष्ट दिख रहे थे। लेकिन, सिद्धान्त के चेहरे पर कुछ उलझन के भाव थे। यह देखकर अनन्य ने पूछा-' क्या बात है सिद्धान्त? तुम्हारे चेहरे पर यह उलझन के भाव क्यों हैं?'

सिद्धान्त बोला-'अंकल, मैं सोच रहा था कि आज जब प्रदूषण का चारों तरफ इतना बोलबाला है तो क्या अंतरिक्ष भी इसकी चपेट में आने से बचा होगा?'

सुनकर गंभीर हो गए अनन्य। बोले- 'तुम ठीक सोच रहे हो सिद्धान्त। अंतरिक्ष भी अब प्रदूषण का मारा

है। चलो, इसके बारे में चर्चा अगली गोष्ठी में करेंगे।'

स्वाति बोली-'अंकल, आपने यह बात छेड़कर हमारी उत्सुकता बढ़ा दी है। संक्षेप में इसके बारे में हमें बताइए न।' स्वाति की बात सुनकर हँस दिए अनन्य। बोले-'चलो, आज संक्षेप में बता देता हूँ। धरती पर कचरे से प्रदूषण फैलता है, यह बात तो तुम सभी अच्छी तरह जानते हो। पर सोचो, क्या कचरे से अंतरिक्ष में भी प्रदूषण फैल सकता है?'

सवाल पूछकर अनन्य ने सब बच्चों की ओर देखा। उनके चेहरों पर घोर आश्चर्य का भाव था। यह देखकर अनन्य बोले-'तुम्हें आश्चर्य हो रहा है न। लेकिन, अंतरिक्ष भिन्न होता है। दरअसल, अंतरिक्ष में तैरते हुए पिण्ड और कण तथा बेकार हो गए रॉकेट, कृत्रिम उपग्रह आदि का कचरा या मलबा भी वहाँ प्रदूषण फैलाता है। इनमें से कई पिण्ड और कण तो आकार में मुश्किल से एक से लेकर दस सेंटीमीटर तक के भी होते हैं, लेकिन ये लघु पिण्ड और कण भी अंतरिक्षयानों और कृत्रिम उपग्रहों आदि को नुकसान पहुँचा सकते हैं क्योंकि स्थिर न रहकर ये पिण्ड अंतरिक्ष में तेज गति से यहाँ-वहाँ मंडराते रहते हैं। कभी कभार अंतरिक्ष में घूमता कोई उपग्रह भी विस्फोट से अचानक फट जाता है। विस्फोट से उड़े उपग्रह के टुकड़े अंतरिक्ष में छोटे-बड़े कचरे या मलबे को फैलाने में अपना योगदान देते हैं।

श्वेता ने पूछा-'अंकल, यह बताइए कि अंतरिक्ष में कचरे की समस्या से निपटने के लिए क्या कोई कारगर उपाय किए गए हैं?' जवाब में अनन्य बोले-'हाँ, श्वेता। इस दिशा में वैज्ञानिकों ने अपने कुछ सुझाव रखे हैं। इनमें से एक सुझाव अंतरिक्षयानों के बाह्य ढांचों के चारों तरफ धात्विक कवच को लगाए जाने का है ताकि अंतरिक्ष में तैरते कणों और पिण्डों आदि से उनका बचाव हो सके। अंतरिक्षयानों के अन्दर बचावकारी उपकरण आदि लगाए जाने के बाद में भी वैज्ञानिकों ने अपने सुझाव पेश किए हैं ताकि ये यान अंतरिक्ष में तैरते कणों का पता लगा सकें और उनसे बच निकलने में काफी हद तक सक्षम हो सकें। यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी यानी ई एस ए इस दिशा में विशेष रूप से सक्रिय है। सन् 2014 में ई एस ए ने क्लीनसैट प्रोग्राम शुरु किया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य अंतरिक्ष में कचरे की समस्या से प्रभावी रूप से निपटना है। हाल ही में, मार्च 2015 में ई एस ए ने एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन भी आयोजित किया था जिसमें अंतरिक्ष के कचरे से निपटने के नए-नए उपायों पर गहन चर्चा हुई थी। इस सम्मेलन द्वारा सर्वोपरि सुझाव जो उभर कर आया वह यह कि अंतरिक्ष में कचरे की सृष्टि ही कम से कम हो, इस दिशा में राष्ट्रों द्वारा पर्याप्त सावधानी बरते जाने एवं उचित कार्यवाही किए जाने की आवश्यकता है।'

राजन बोला-'अंकल, अंतरिक्ष में कचरे की सृष्टि ही कम से कम हो इससे बढ़िया विचार और क्या हो सकता है। अपने घरों में भी हमें इस पर पूरा-पूरा अमल करना चाहिए। तभी तो हमारा 'स्वच्छ भारत अभियान' सफल हो पाएगा।' सुनकर गर्व से भर उठे अनन्य। बच्चों में सुविचार एवं जागरूकता पैदा करने में उन्हें सफलता मिल रही थी।

प्रश्नः-

1. विज्ञान गोष्ठी कौन आयोजित करता था और क्यों?
2. जया को क्यों देरी हो गई?
3. प्रकाश प्रदूषण किसे कहते हैं?
4. प्रकाश प्रदूषण को कम करने के लिए हम क्या उपाय कर सकते हैं?
5. खगोल विज्ञान किससे सम्बन्धित होता है?
6. अन्तरिक्ष में कैसा प्रदूषण फैल रहा है।
7. आपको यह संवाद कैसा लगा? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

-बाल भारती, नई दिल्ली, जून-2015 से साभार

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

बोलती घटनाएँ- डॉ. दिलीप धींग, ***प्रकाशक***- रिसर्च फाउण्डेशन ऑफ जैनोलोजी, सुगन हाउस, 18, रामनुजा अय्यर स्ट्रीट, साहूकार पेट, चेन्नई-600079, दूरभाष-044-25298082, 25296557, ***पृष्ठ***-224, ***मूल्य***- 100 रुपये, सन् 2016

''गौरेया परात में गूँथे हुए आटे में निडर होकर चोंचे मारती और चहकती हुई अपना आहार करती। यदि भीगे हुए गरणे से आटे को ढँक दिया जाता तो गरणे के सिरे को ऊपर करके आटा चुरा ले जाती'' गौरेया की ये शरारत लेखक के मन को तो गुदगुदाती थी, अब शब्दों में गूंथे जाने से पाठक के मन को भी गुदगुदा रही है। यूँ अपने जीवन के हल्के गहरे रंगों को कवि डॉ. धींग ने शब्दों की कूची से चित्रित कर भावों की चमक के साथ उकेरा है। पुस्तक की कतिपय रचनाएँ जिनवाणी, जैन प्रकाश, मोक्षद्वार, आनन्दसुधा, विमल विवेक, दैनिक भास्कर आदि पत्र-पत्रिकाओं में पूर्व में प्रकाशित हुई हैं। कई-कई प्रसंग बहुत ही रोचक हैं, कुछ प्रसंग कवि के परिवार से जुड़े हुए हैं तो कुछ मुनिराजों से, कुछ अन्य विषयों से जुड़े हैं। लेखक द्वारा कथानक के शीर्षक बहुत ही आकर्षक एवं रोचक दिए गए हैं। यथा- नाम से काम, स्वतन्त्रता का आनन्द, शब्द दान, लहू से खत, कलम के प्रेमी, अमावस की उजाली रात आदि। यह पुस्तक दो भागों में विभाजित है। प्रथम भाग में 85 कथानक और द्वितीय भाग में 29 कथानक हैं। 'कविताएँ नहीं बिकी' शीर्षक में कवि के मुक्तक काव्य के प्रकाशन से सम्बद्ध घटना क्रम के अन्तर्गत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा 'मुक्तक-मुक्ता' के नाम से पुस्तक प्रकाशित किये जाने का उल्लेख भी प्राप्त होता है। प्रस्तुत कृति कवि के व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों को रेखांकित करती है।

जय श्री शोभाचार्य- संकलन एवं सम्पादन - सौभाग्यमल जैन एवं नौरतनमल मेहता, ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302002 (राज.), फोनः- 0141-2575997, ***पृष्ठ***-296+22, ***मूल्य***- 40 रुपये मात्र, सन् 2016

रत्नसंघ के षष्ठ पट्टधर एवं देदीप्यमान नक्षत्र आचार्य शोभाचन्द्र जी म.सा. के जीवन वृत्तान्त एवं तत्कालीन दीक्षित संतों के परिचय का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने वाली यह पुस्तक ऐतिहासिक दस्तावेज है। आचार्य श्री के जन्म से लेकर वैराग्यकाल, दीक्षा, गुरु सेवा, शास्त्राभ्यास, 56 चातुर्मास की सूची, आचार्य काल के चातुर्मासों का वर्णन एवं अन्तिम विदाई तक आद्योपान्त वर्णन है। इससे पूर्व युगप्रधानाचार्य श्री हारिल सूरि, आचार्य भद्रबाहु, आचार्य मल्लवादी सूरि, धर्मदासगणि, जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण, वृद्धवादी, आर्य समित, आर्य वज्रसेन, आर्य रक्षित, देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण, आचार्य विजयऋषिजी, आचार्य जिनशेखरसूरि, अभयदेवसूरि, हेमचन्द्रसूरि, आचार्य गजसेन, श्री लोकाशाह, आचार्य धर्मदासजी, आचार्य धन्नाजी, आचार्य भूधरजी, पूज्य श्री जयमलजी, पूज्य श्री कुशलचन्द्रजी म.सा. की संक्षिप्त जीवन झांकी है।

आचार्य श्री की परम सहिष्णुता का परिचय उनके जीवन में आए एक के बाद एक शारीरिक कष्टों में समत्व भाव से होता है। विभिन्न सम्प्रदायों के साधु-साध्वी के प्रति उनका वात्सल्य भाव अनूठा था। आपश्री की वत्सलता से प्रभावित होकर अक्सर अन्य धर्मावलम्बी जन भी दुःख-दर्द की घड़ियों में आपकी सद्प्रेरणा और सहानुभूति प्राप्त

करने के लिए आते ही रहते थे। मारवाड़ के विविध सम्प्रदायों के साथ आपका मधुर सम्बन्ध था, यही कारण है कि समाज में अनेकता होते हुए भी उस समय मारवाड़ में एक ही पक्खी पर्व मनाया जाता था। आप नित्य आगम का पाठ करते थे तथा संस्कृत एवं प्राकृत भाषा में भी आपका प्रवेश था। आप सर्वप्रिय, अप्रमत्त, गम्भीर, धर्म का मर्म समझने व जीवन में उतारने पर बल देने के साथ विवेकशीलता, जीवनयापन में प्रामाणिकता के पक्षधर थे। आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. के सहयोगी मुनि पुंगव इस प्रकार थे- स्वामी श्री चन्दनमलजी म.सा., मुनिश्री भगवानदासजी, मुनिश्री सुजानमलजी म.सा., स्वामी श्री भोजराज जी म.सा., स्वामी श्री अमरचन्दजी म.सा. एवं श्री लाभचन्द्रजी म.सा.। सेवाभावी श्री सागरमलजी म.सा., मुनिश्री लालचन्द्रजी, मुनिश्री हस्तीमलजी, मुनिश्री चौथमलजी, मुनिश्री बड़े लक्ष्मीचन्दजी म.सा. आपके शासनकाल में दीक्षित हुए। उपर्युक्त सभी संतों का परिचय दिया गया है।

धर्म के सम्बन्ध में आचार्य श्री फरमाते थे कि दुनियाँ में सब लोग धर्म-धर्म करते हैं, किन्तु विरले ही धर्म के मर्म से परिचित होते हैं। धर्म को बताने वाला यह श्लोक विचारणीय है-

सत्येनोत्पद्यते धर्मः दयादानेन विवर्धते।
क्षमया च स्थाप्यते धर्मः क्रोध-लोभाद् विनश्यति।।

आचार्य शोभाचन्द्रजी म.सा. द्वारा लोक भाषा में रचित पद्यावली हितशिक्षा देने वाली है। उन्होंने संत जीवन की कठिनाइयाँ, कषाय-निषेध, धर्म की महिमा, संत-सेवा का महत्त्व, संतोष का माहात्म्य, क्षमा, मन बनाम देह, दान, पुण्य आदि विषयों पर अपने विचारों को छन्दोबद्ध किया है। समय के महत्त्व को बताते हुए वे लिखते हैं-

एक सांस खाली मत, खोइए खलक बीच।
कीचक कलंक अंग, धोयले तो धोयले।।
उर अंधियार, पुर पाप सूँ भर्यो है तामें।
ज्ञान की चिराग चित्त, जोयले तो जोइले।।

अन्त में 'आचार्य गुण गीतिका' में श्रद्धांजलि स्वरूप षड्गुण पदावली, हिन्दी-संस्कृत पद्य, स्तवन, लावणी, भजन आदि दिए गए हैं।

मैं महावीर बोल रहा हूँ- दुलीचन्द जैन, ***प्रकाशक***- प्रभात पेपरबेक्स, 4/19, आसफ अली रोड़, नई दिल्ली-110002, फोन नं. 011-23289555, 23289666, ***पृष्ठ***-168, ***मूल्य***- 150 रुपये मात्र, सन् 2017, ***विशेष***- 10 प्रतियों पर 33 प्रतिशत कमीशन।

श्वेताम्बर और दिगम्बर आगम साहित्य में से चयनित सूक्तियों के हिन्दी अनुवाद का संकलन (सन्दर्भ सहित) उपर्युक्त पुस्तक में किया गया है। आत्मा, ज्ञान, कषाय-विजय, मनोनिग्रह, कर्म सूत्र, बारह भावना, धर्म मार्ग, ध्यान सूत्र, शिक्षा के सूत्र विषयक सूक्तियों का नियोजन कर अन्त में उत्तराध्ययन सूत्र से दृष्टान्त और कथाओं को संक्षिप्त में प्रस्तुत किया गया है। अध्येताओं के लिए यह पुस्तक संग्रहणीय है।

सामायिक उपकरण संघ कार्यालय में उपलब्ध

आपको सूचित करते हुए हर्ष है कि सामायिक उपकरण का सेट जिसमें दुपट्टी, चोलपट्टा, आसन, पूँजणी, मुँहपत्ती, माला तथा प्रतिक्रमण की पुस्तक सम्मिलित है, संघ कार्यालय में लागत मूल्य से भी कम रियायती दर पर 200/- रुपये में उपलब्ध है। जोधपुर से बाहर मंगवाने पर पार्सल खर्च अतिरिक्त देय होगा।

-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. 0291-2636763

हिण्डौन चातुर्मास के पश्चात् से निमाज चातुर्मास तक शीलव्रतधारकों की सूची

उत्कृष्ट साधक पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का भी अपने गुरुदेव पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की भांति यह संकल्प है कि वे जितने वर्षों के होंगे, उतने आजीवन शीलव्रती तैयार करेंगे। उन्हें अपने संकल्प में आशातीत सफलता प्राप्त हुई हैं। 78 वर्ष की वय में चार गुणे से भी अधिक 322 सदार आजीवन शीलव्रती बने हैं।

शीलव्रतधारियों के नाम (26 नवम्बर 2015 से 12 नवम्बर 2016 तक)

क्यारदा कलाँ– 1. श्रीमती एवं श्री रामस्वरूपजी जाटव, 2. श्रीमती एवं श्री श्यामलालजी जाटव, 3. श्रीमती एवं श्री रामप्रसादजी जाटव, 4. श्रीमती एवं श्री सरदारजी जाटव, 5. श्रीमती एवं श्री रूपसिंहजी जाटव, 6. श्रीमती एवं श्री लक्कीजी जाटव, 7. श्रीमती एवं श्री मोहनजी जाटव, 8. श्रीमती एवं श्री नेमीजी जाटव, 9. श्रीमती एवं श्री हरचरणजी जाटव, 10. श्रीमती एवं श्री धनफूलजी जाटव, 11. श्रीमती एवं श्री दीपरामजी जाटव, 12. श्रीमती एवं श्री सिरमोजी जाटव, 13. श्रीमती एवं श्री दीपचन्दजी जाटव, 14. श्रीमती एवं श्री धनफूलजी जाटव, 15. श्रीमती एवं श्री बिरजूजी जाटव, 16. श्रीमती एवं श्री गोरधनजी जाटव, 17. श्रीमती एवं श्री भँवरलालजी जाटव, 18. श्रीमती एवं श्री फिरंगीजी जाटव, 19. श्रीमती एवं श्री माँगीसिंहजी जाटव, 20. श्रीमती एवं श्री हरीचरणजी जाटव, 21. श्रीमती एवं श्री वृंदावनजी जाटव, 22. श्रीमती एवं श्री जंगलीजी जाटव, 23. श्रीमती एवं श्री किशोरीजी बणजारा, 24. श्रीमती एवं श्री करणसिंहजी बणजारा, 25. श्रीमती एवं श्री मवाशीजी जाटव, 26. श्रीमती एवं श्री रामसुखाजी, 27. श्रीमती एवं श्री भम्बलजी जाटव, 28. श्रीमती एवं श्री रूग्गीजी जाटव, 29. श्रीमती एवं श्री प्रभातीजी खटीक, **जटनंगला–** 1. श्रीमती एवं श्री रामस्वरूपजी ब्राह्मण, 2. श्रीमती एवं श्री मोहनलालजी प्रजापत, 3. श्रीमती एवं श्री प्रमोलीजी जाटव, **अलावारा–** 1. श्रीमती एवं श्री रामसिंहजी जाटव, 2. श्रीमती एवं श्री समयसिंहजी जाटव, 3. श्रीमती एवं श्री राजारामजी जाटव, 4. श्रीमती एवं श्री रामजीतजी जाटव, 5. श्रीमती एवं श्री भत्तीसिंहजी जाटव, 6. श्रीमती एवं श्री समयसिंहजी जाटव, **पनवेरा–** 1. श्रीमती एवं श्री नत्थीजी जाटव, **मुंडिया का पुरा–** 1. श्रीमती एवं श्री भरोसीजी जाटव, 2. श्रीमती एवं श्री धनसिंहजी जाटव, 3. श्रीमती एवं श्री रूपसिंहजी जाटव, 4. श्रीमती एवं श्री प्रतापजी जाटव, 5. श्रीमती एवं श्री सोहनलालजी जाटव, **सिसवाड़ा–** 1. श्रीमती एवं श्री धूपसिंहजी फौजदार, 2. श्रीमती एवं श्री सोहनसिंहजी फौजदार, 3. श्रीमती एवं श्री लक्ष्मणसिंहजी फौजदार, 4. श्रीमती एवं श्री पदमसिंहजी फौजदार, **समसपुरा–** 1. श्रीमती एवं श्री राम खिलाड़ीजी जाटव, **करसौली–** 1. श्रीमती एवं श्री भूरमलजी जाटव, **रेवई–** 1. श्रीमती एवं श्री भोदनसिंहजी जाटव, 2. श्रीमती एवं श्री अर्जुनलालजी जाटव, 3. श्रीमती एवं श्री विशनवाजी जाटव, 4. श्रीमती एवं श्री रामधनजी जाटव, 5. श्रीमती एवं श्री मोहनजी जाटव, 6. श्रीमती एवं श्री रामगोपाल जी जाटव, 7. श्रीमती एवं श्री रेवतीलालजी जाटव, 8. श्रीमती एवं श्री हरीकिशनजी जाटव, 9. श्रीमती एवं श्री अमरसिंहजी जाटव, 10. श्रीमती एवं श्री जंगलयाजी जाटव, 11. श्रीमती एवं श्री मंगतीजी जाटव, 12. श्रीमती एवं श्री चेतरामजी जाटव, 13. श्रीमती एवं श्री मवासीजी जाटव, 14. श्रीमती एवं श्री हरीरामजी जाटव, 15. श्रीमती एवं श्री प्रेमलालजी जाटव, 16. श्रीमती एवं श्री सामन्ताजी जाटव, 17. श्रीमती एवं श्री लज्जारामजी जाटव, 18. श्रीमती एवं श्री भरोसीजी जाटव, 19. श्रीमती एवं श्री रामेश्वरजी जाटव, 20. श्रीमती एवं श्री रामजी जाटव, 21. श्रीमती एवं श्री कल्लाजी जाटव, 22.

श्रीमती एवं श्री रामस्वरूपजी जाटव, 23. श्रीमती एवं श्री नत्थी जी जाटव, 24. श्रीमती एवं श्री गरीबाजी जाटव, 25. श्रीमती एवं श्री बादामजी जाटव, 26. श्रीमती एवं श्री शिवरामजी जाटव, **हिण्डौन**- 1. श्रीमती एवं श्री गोपालजी अग्रवाल, **वर्धमान नगर-हिण्डौन**- 1. श्रीमती एवं श्री रामजीलालजी जैन, **बाजनाँकला**- 1. श्रीमती एवं श्री मोतीजी प्रजापत, 2. श्रीमती एवं श्री प्रहलाद जी प्रजापत, 3. श्रीमती एवं श्री धर्मसिंहजी जाटव, 4. श्रीमती एवं श्री रम्मूजी प्रजापत, 5. श्रीमती एवं श्री शेरसिंहजी जाट, 6. श्रीमती एवं श्री जगदीशजी, 7. श्रीमती एवं श्री रामसिंहजी प्रजापत, 8. श्रीमती एवं श्री बक्शीजी प्रजापत, 9. श्रीमती एवं श्री नत्थी जी जाटव, 10. श्रीमती एवं श्री बच्चूजी प्रजापत, 11. श्रीमती एवं श्री मोहनजी प्रजापत, **खेरली**- 1. श्रीमती एवं श्री राजहंसजी जाटव, **अटकोली**- 1. श्रीमती एवं श्री कल्लाजी भंगी, 2. श्रीमती एवं श्री राम खिलाड़ीजी प्रजापत, 3. श्रीमती एवं श्री नसरुद्दीन मुसलमान, 4. श्रीमती एवं श्री बाबूजी प्रजापत, 5. श्रीमती एवं श्री मंगतरामजी प्रजापत, 6. श्रीमती एवं श्री हेतनजी गुर्जर, 7. श्रीमती एवं श्री प्रतापजी गुर्जर, 8. श्रीमती एवं श्री बुद्धिजी प्रजापत, 9. श्रीमती एवं श्री चाँदजी मुसलमान, 10. श्रीमती एवं श्री कल्हाजी गुर्जर, 11. श्रीमती एवं श्री ब्रजवासी, 12. श्रीमती एवं श्री रमेशजी प्रजापत, 13. श्रीमती एवं श्री सुरेशजी जाटव, 14. श्रीमती एवं श्री नत्थोलीजी प्रजापत, **भोंदु का पुरा**- 1. श्रीमती एवं श्री सुगरसिंहजी प्रजापत, **हरीनगर**- 1. श्रीमती एवं श्री जीवनजी जाटव, **अलीपुरा**- 1. श्रीमती एवं श्री रामजीलाल जाटव, 2. श्रीमती एवं श्री भाबूताजी जाटव, 3. श्रीमती एवं श्री सिरमोहरजी जाटव, 4. श्रीमती एवं श्री रमेशजी जाटव, 5. श्रीमती एवं श्री रामस्वरूपजी जाटव, 6. श्रीमती एवं श्री रामदासजी जाटव, 7. श्रीमती एवं श्री ब्रजमोहनजी जाटव, 8. श्रीमती एवं श्री सुबुद्धिजी जाटव, **फाजिलाबाद**- 1. श्रीमती एवं श्री लक्ष्मीनारायणजी सैन, 2. श्रीमती एवं श्री रामस्वरूपजी शर्मा, 3. श्रीमती एवं श्री रामजी शर्मा, 4. श्रीमती एवं श्री रामसहायजी शर्मा, **समसपुर**- 1. श्रीमती एवं श्री शोभारामजी जाटव, 2. श्रीमती एवं श्री यादरामजी जाटव, 3. श्रीमती एवं श्री भरोसीजी जाटव, 4. श्रीमती एवं श्री पलटूजी जाटव, 5. श्रीमती एवं श्री रामलालजी जाटव, 6. श्रीमती एवं श्री सुरेशजी जाटव, 7. श्रीमती एवं श्री बुद्धुजी जाटव, 8. श्रीमती एवं श्री भजनलालजी जाटव, 9. श्रीमती एवं श्री राजूलालजी जाटव, 10. श्रीमती एवं श्री शत्रूजी जाटव, 11. श्रीमती एवं श्री रामप्रसादजी जाटव,12. श्रीमती एवं श्री माँगीजी जाटव, 13. श्रीमती एवं श्री रामेश्वरजी जाटव, 14. श्रीमती एवं श्री चनियाजी जाटव, 15. श्रीमती एवं श्री हीरालालजी जाटव, **ढहरा**- 1. श्रीमती एवं श्री जगरामजी जाटव, 2. श्रीमती एवं श्री घण्टीजी जाट, 3. श्रीमती एवं श्री जुगलारामजी जाटव, **पीलवा**- 1. श्रीमती एवं श्री लसणाजी जाटव, 2. श्रीमती एवं श्री सुबुद्धिजी जाटव, 3. श्रीमती एवं श्री भगवानसिंहजी जाटव, 4. श्रीमती एवं श्री रामजीलालजी जाटव, 5. श्रीमती एवं श्री मानवदासजी जाटव, 6. श्रीमती एवं श्री मोहनसिंहजी जाटव, 7. श्रीमती एवं श्री रामसिंहजी जाटव, **करमपुरा**- 1. श्रीमती एवं श्री हरिचंदजी जाटव, 2. श्रीमती एवं श्री यादरामजी जाटव, 3. श्रीमती एवं श्री रामदयालजी जाटव, 4. श्रीमती एवं श्री तोतारामजी जाटव, 5. श्रीमती एवं श्री गोरधनजी जाटव, 6. श्रीमती एवं श्री दीपूजी जाटव, 7. श्रीमती एवं श्री रतनलालजी जाटव, 8. श्रीमती एवं श्री मूलचन्दजी जाटव, 9. श्रीमती एवं श्री भभूताजी जाटव, 10. श्रीमती एवं श्री बतारयाजी जाटव, 11. श्रीमती एवं श्री रामविलासजी जाटव, 12. श्रीमती एवं श्री मनोहरीलालजी जाटव, 13. श्रीमती एवं श्री धनदौलीजी जाटव, **देवरेन**- 1. श्रीमती एवं श्री बुद्धिजी जाटव, **मेहम्मदपुरा**- 1. श्रीमती एवं श्री रामप्रसाद जी महावर, 2. श्रीमती एवं श्री बद्रीप्रसादजी महावर, 3. श्रीमती एवं श्री चिरमौलीजी महावर, 4. श्रीमती एवं श्री माँगीलालजी महावर, 5. श्रीमती एवं श्री मूलचन्दजी महावर, 6. श्रीमती एवं श्री लल्लूजी महावर, 7. श्रीमती एवं श्री बिस्सूजी महावर, 8. श्रीमती एवं श्री बाबूलालजी महावर, 9. श्रीमती एवं श्री धन्नूजी महावर, 10. श्रीमती एवं श्री सिटोलीजी महावर, 11. श्रीमती एवं श्री निरोतीजी महावर, 12. श्रीमती एवं श्री मूल्याजी कोली, 13. श्रीमती एवं श्री रमेशजी महावत, **लपावली**- 1. श्रीमती एवं श्री गोरेलालजी गुर्जर, **जगदीशपुरा**- 1. श्रीमती एवं श्री रामलालजी जाटव, 2. श्रीमती एवं श्री प्रेमजी जाटव, 3. श्रीमती एवं श्री बुद्धरामजी जाटव, 4. श्रीमती एवं श्री नत्थी जी

जाटव, 5. श्रीमती एवं श्री घनश्यामजी जाटव, 6. श्रीमती एवं श्री मिट्ठूजी जाटव, 7. श्रीमती एवं श्री शिवलालजी गुर्जर, 8. श्रीमती एवं श्री तौफानीजी जाटव, 9. श्रीमती एवं श्री भूरमलजी गुर्जर, 10. श्रीमती एवं श्री देवीलालजी जाटव, 11. रामलालजी जाटव, 12. श्रीमती एवं श्री मिश्रीलालजी जाटव, **नाँगल शेरपुर**– 1. श्रीमती एवं श्री शिवजी पण्डित, 2. श्रीमती एवं श्री देवकीजी सोनी, 3. श्रीमती एवं श्री विरमाजी सोनी, 4. श्रीमती एवं श्री गंगासहायजी मीणा, 5. श्रीमती एवं श्री रामभरोसीजी प्रजापत, 6. श्रीमती एवं श्री भरत्याजी मीणा, **बालघाट**– 1. श्रीमती एवं श्री रामखिलाड़ी जांगड़, **माचड़ी**– 1. श्रीमती एवं श्री घनश्यामजी अग्रवाल, 2. श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाशजी अग्रवाल, 3. श्रीमती एवं श्री हक्कुलूजी मीणा, 4. श्रीमती एवं श्री काडू जी मीणा, 5. श्रीमती एवं श्री लोहड़रामजी मीणा, **खानपुर करीरी**– 1. श्रीमती एवं श्री दौजीजी कौली, 2. श्रीमती एवं श्री जलसिंहजी प्रजापत, 3. श्रीमती एवं श्री रामविलासजी मीणा, 4. श्रीमती एवं श्री माँगीलालजी प्रजापत, 5. श्रीमती एवं श्री मनोहरजी महावर, 6. श्रीमती एवं श्री बद्रीजी महावर, 7. श्रीमती एवं श्री रामकिशनजी जाटव, 8. श्रीमती एवं श्री ठण्डीजी जाटव, 9. श्रीमती एवं श्री रामकिशोरजी जाटव, 10. श्रीमती एवं श्री रूरूजी जाटव, 11. श्रीमती एवं श्री मंगतीजी जाटव, 12. श्रीमती एवं श्री सूखाजी जाटव, 13. श्रीमती एवं श्री सुगराजी जाटव, 14. श्रीमती एवं श्री लक्ष्मणजी कौली, 15. श्रीमती एवं श्री रमेशजी जाटव, 16. श्रीमती एवं श्री श्रीचंदजी जाटव, 17. श्रीमती एवं श्री जिन्सीजी प्रजापत, 18. श्रीमती एवं श्री हरभानजी जोगी, 19. श्रीमती एवं श्री भरोसीजी जाटव, 20. श्रीमती एवं श्री लालचन्दजी कौली, 21. श्रीमती एवं श्री रामदयालजी जाटव, 22. श्रीमती एवं श्री रामकिशोरजी जाटव, 23. श्रीमती एवं श्री बच्चूजी कोली, 24. श्रीमती एवं श्री शिरमोरजी जाटव, 25. श्रीमती एवं श्री बतूजी कौली, 26. श्रीमती एवं श्री भम्बलजी कौली, **निमाज**– 1. श्रीमती एवं श्री डूँगरमलजी खांडप्पा, 2. श्रीमती एवं श्री घनश्यामजी सुमन, 3. श्रीमती एवं श्री पुखराजजी प्रजापत, 4. श्रीमती एवं श्री भँवरलालजी प्रजापत, 5. श्रीमती एवं श्री भागचन्दजी सैन, 6. श्रीमती एवं श्री नाथूरामजी खटीक, 7. श्रीमती एवं श्री पुखराजजी प्रजापत, 8. श्रीमती एवं श्री पूरणराज जी वैष्णव, 9. श्रीमती एवं श्री कांतारामजी कुमावत, 10. श्रीमती एवं श्री लाबूरामजी कुमावत, 11. श्रीमती एवं श्री गेपररामजी कुमावत, 12. श्रीमती एवं श्री छोटालालजी हरिजन, 13. श्रीमती एवं श्री रंगलालजी मेघवाल, 14. श्रीमती एवं श्री गबरुरामजी मेघवाल, 15. श्रीमती एवं श्री रतनलालजी सरगरा, 16. श्रीमती एवं श्री मंगलारामजी मेघवाल, 17. श्रीमती एवं श्री भोलारामजी कुमावत, 18. श्रीमती एवं श्री हापूरामजी कुमावत, 19. श्रीमती एवं श्री रघुनाथजी गुर्जर, 20. श्रीमती एवं श्री लादूसिंहजी राजपूत, 21. श्रीमती एवं श्री पोकररामजी सरगरा, 22. श्रीमती एवं श्री कानारामजी मेघवाल, 23. श्रीमती एवं श्री भँवरलालजी कुमावत, 24. श्रीमती एवं श्री शंकररामजी कुमावत, 25. श्रीमती एवं श्री योगेन्द्रजी धमामी, 26. श्रीमती एवं श्री हापूरामजी कुमावत, 27. श्रीमती एवं श्री मेवारामजी मेघवाल, 28. श्रीमती एवं श्री बगारामजी माली, 29. श्रीमती एवं श्री भँवरुजी लुहारा, 30. श्रीमती एवं श्री छोगारामजी गुर्जर, 31. श्रीमती एवं श्री पूसारामजी सरगरा, 32. श्रीमती एवं श्री बचनारामजी कुम्हार, 33. श्रीमती एवं श्री देवारामजी मेघवाल, 34. श्रीमती एवं श्री रामरतनजी जाँगिड़, 35. श्रीमती एवं श्री माधुरामजी कुमावत, 36. श्रीमती एवं श्री चन्द्रारामजी माली, 37. श्रीमती एवं श्री पुखराजजी माली, 38. श्रीमती एवं श्री दुर्गारामजी कुमावत, 39. श्रीमती एवं श्री भँवरलालजी कुमावत, 40. श्रीमती एवं श्री माँगीलालजी कुमावत, 41. श्रीमती एवं श्री गुलारामजी कुमावत, 42. श्रीमती एवं श्री दसारामजी कुमावत, 43. श्रीमती एवं श्री माँगीलालजी कुमावत, 44. श्रीमती एवं श्री भँवरलालजी माली, 45. श्रीमती एवं श्री लादूरामजी चौकीदार, 46. श्रीमती एवं श्री माँगू खाँ, 47. श्रीमती एवं श्री पूणारामजी माली, 48. श्रीमती एवं श्री कालूरामजी लबार, 49. श्रीमती एवं श्री नारायण मावी, 50. श्रीमती एवं श्री लादूरामजी कुम्हार, 51. श्रीमती एवं श्री भीखारामजी माली, 52. श्रीमती एवं श्री लेखलीरामजी सिरवी, 53. श्रीमती एवं श्री सुतारामजी सिरवी,54. श्रीमती एवं श्री झूमरलालजी कुमावत।

(क्रमशः)

समाचार विविधा

पूज्य आचार्यप्रवर का बिलाड़ा से रणसीगाँव होते हुए पीपाड़ पदार्पण, 9 फरवरी को है दीक्षा का उत्सव

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, ज्ञान सुधाकर, गुण रत्नाकर, जिनशासन गौरव, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** प्रभृति संतवृन्द ठाणा के बाण गंगा की यशस्वी धरा बिलाड़ा में विराजने से धर्मोद्योत का सुन्दर परिदृश्य रहा। यहाँ का स्थानक भवन एवं परिसर विशाल है। विपुल संख्या में सामायिक साधना तथा दर्शनार्थियों के नियमित आवागमन विशेष रूप से जोधपुर के श्रद्धालु भाई-बहनों एवं युवकों के पधारते रहने से समूचे प्रवासकाल में धर्ममय वातावरण बना रहा।

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति के छात्र-छात्राओं के चार दिवसीय आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का 29 दिसम्बर 2016 को समापन हुआ। पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगलमय उद्‌बोधन में फरमाया-''हर शिविरार्थी रोजाना नियमित सामायिक करने का लक्ष्य रखे साथ ही पाँच अणुव्रतों में से एक या अधिक व्रत ग्रहण कर गुणग्राही बने।'' प्रेरणा प्राप्त कर अधिकांश शिविरार्थियों ने यथायोग्य नियम ग्रहण किए। जयपुर संघ के सदस्य चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुए।

30 दिसम्बर को मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा का जोधपुर से विहार कर पूज्य आचार्यप्रवर की सेवा में पदार्पण हुआ। ऋषभ विहार संघ, दिल्ली के श्रावकों ने चातुर्मास हेतु भावपूर्ण विनति प्रस्तुत की। राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा ने तीन दिवसीय चरण सन्निधि का लाभ लिया। 31 दिसम्बर को श्रद्धाशील गुरुभगवन्तों का नववर्ष के अवसर पर दर्शन एवं मांगलिक-श्रवण हेतु आवागमन प्रारम्भ हो गया। रात्रिकालीन संवर, साधना एवं आराधना का गुरुभक्तों ने विशेष लाभ लिया। संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत भी पधार आये। हाउसिंग बोर्ड संघ-सवाईमाधोपुर ने पूज्यश्री के पावन चरणों में चातुर्मास हेतु विनति प्रस्तुत की।

01 जनवरी 2017 को पूज्य आचार्यप्रवर एवं संतवृन्द के दर्शन-वन्दन का सैकड़ों गुरुभक्तों ने लाभ लिया। जोधपुर, भोपालगढ़, मेड़तासिटी, गोटन, सूरत व धनोप संघ विनति लेकर एवं चेन्नई, बैंगलोर, मुम्बई, सैलाना, जयपुर, कोटा, सवाईमाधोपुर शहर, हाउसिंग बोर्ड, महावीर नगर, बजरिया, कुश्तला, मुई, अलीगढ़-रामपुरा, चौथ का बरवाड़ा, सुमेरगंजमण्डी, जरखोदा, देई, हिण्डौनसिटी, पीपाड़सिटी, पाली, निमाज, ब्यावर, अजमेर, किशनगढ़-मदनगंज, दूदू, हैदराबाद, पालनपुर, हरसाना, खोह, खेड़ली, रणसीगाँव, सोजत, खारिया मीठापुर आदि विभिन्न ग्रामनगरों के श्रावक-श्राविका इस दिन उपस्थित थे। दोपहर दो बजे पश्चात् बिलाड़ा से पूज्य गुरुदेव का संत मण्डल के साथ चोयलों का डेरा के लिए विहार हो गया। गुरुदेव के बिलाड़ा में 11 दिवसीय प्रवास से श्री कन्हैयालालजी हिरण, श्री मोहनलालजी मुथा, श्री नेमीचन्दजी कटारिया, श्री शान्तिलालजी कांकरिया आदि श्रावकों की वर्षों की अभिलाषा साकार हुई। 02 जनवरी को पूज्यप्रवर खारिया मीठापुर पधारे। यहाँ से 2.30 बजे पश्चात् विहार कर उदलियावास में रात्रि साधना की। 03 जनवरी को झाक पधारे। दिनभर दर्शनार्थियों का क्रम बना रहा। लासुर संघ ने भी दर्शन-वन्दन-सेवा का लाभ लिया। गाँव के जैन-जैनेतर एवं मुस्लिम बिरादरी के भाई-

बहिनों ने दर्शन लाभ कर श्रद्धाभक्ति का परिचय दिया। किशनगढ़ के मूल निवासी एवं लासुर स्टेशन में कर्मरत उदारमना गुरुभक्त श्री अजय जी मुणोत ने दर्शनों का लाभ लिया। उन्होंने अपनी सुपुत्री का विवाह सादगी से करते हुए एक बड़ी धनराशि से 90 फ्लेट बनाकर गरीबों को वितरित किए। 04 जनवरी को मुरकासनी में विराजकर 05 को रणसीगाँव की मंगलधरा पर पधारे। पहले से ही रणसीगाँव विराज रहे मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. विहार के मध्य गुरुभगवन्त के समक्ष पधारे। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा भी क्षेत्र फरसते हुए रणसी गाँव पधारे। 06 जनवरी को श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा जोधपुर से उग्र विहार करते हुए जीवन निर्माता पूज्य गुरुदेव की सन्निधि में पधारे तथा सुख-शान्ति की पृच्छा की। 07 जनवरी को नागौर संघ विनति लेकर उपस्थित हुआ। 08 जनवरी को मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया गुरुदेव की सेवा में पधारे। टाटिया साहब वर्ष में 2-3 बार व्यस्त समय में भी पधारने की भावना रखते हैं। 10 जनवरी को पुष्कर रोड़, अजमेर संघ ने चातुर्मास हेतु विनति रखी।

रणसीगाँव में 11 जनवरी को **पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 107 वां जन्मदिवस** तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। संतप्रवरों द्वारा पूज्य गुरुदेव के उत्कृष्ट जीवन एवं उपकारों पर प्रकाश डाला गया। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने फरमाया कि गुरु का स्मरण भी परमेष्ठी का स्मरण है। पूज्य गुरुदेव ने जीवन भर श्रमण वर्ग एवं श्रावक-श्राविकावर्ग सभी का यथायोग्य मार्गदर्शन कर नई दिशा दी एवं आचरण पक्ष को सरल बनाया। स्मृति पटल पर हैं वे दिन जब हम उनके चरणों में बैठकर स्तुति करते एवं जीवन निर्माण के सूत्र सुनते थे। आज हम उन्हें अप्रत्यक्ष रूप से याद कर आगे बढ़ने की प्रेरणा ले रहे हैं। उस कल्पवृक्ष की बृहच्छाया शब्दातीत है। इस पावन प्रसंग पर रणसीगाँव में श्रद्धालु भाई-बहनों का विशेष आगमन रहा। तप-त्याग के साथ सामूहिक साधना करने वालों से प्रवचन स्थल भरा हुआ था। यहाँ के ग्रामवासियों ने भी धर्म लाभ लिया। एकाशनव्रत की आराधना हुई। बोरून्दा, खेजड़ला, हरियाढाणा, मादलिया संघ ने क्षेत्र फरसने की विनति श्री चरणों में प्रस्तुत की।

12 जनवरी को जयपुर संघ के पदाधिकारी साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुए। 13 जनवरी तक प्रवचन का लाभ रणसीगाँव को प्रदान कर पूज्य प्रवर दोपहर 2 बजे बाद विहार कर श्रीकृष्ण मिल पधारे। रणसी गाँव के 9 दिवसीय प्रवास में श्री पदमचन्दजी कोठारी, वीरपिता श्री इन्दरचन्दजी गाँधी, श्री उगमराजजी चोरडिया की सेवाएँ एवं सार सभाल प्रमोदकारी रहे। ग्राम वासी भाई-बहनों ने प्रवचन-श्रवण के साथ तप-त्याग के क्षेत्र में भी पुरुषार्थ किया। यहाँ की स्वधर्मी वात्सल्य भावना सराहनीय रही। हिण्डौन संघ व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के एवं मेड़ता संघ पूज्य आचार्यप्रवर के चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुए।

मकरसक्रांति 14 जनवरी को आपश्री का खेजड़ला पदार्पण हुआ। गुरुदेव के पधारने से खेजड़ला संघ उल्लसित था। यहाँ के सुश्रावक श्री अशोक जी गाँधी निःशक्त होते हुए भी सेवा-सन्निधि में तत्पर रहे। उनके सुपुत्र अरिहन्त जी (13 वर्षीय) देवेशजी (11 वर्षीय), गणेशजी (9 वर्षीय) ने अहोभाव से गुरुभगवन्तों एवं आगतों की जो सेवा भक्ति की वह वर्णनातीत है। आज की युवा पीढ़ी इन बालकों के सेवा गुण से सीख ग्रहण कर सकती है। शीतलहर के वातावरण में भी इन बालकों ने आगतों को लाने ले जाने में एवं सम्भालने में हर्षित मन से सेवाएँ दीं। 15 जनवरी को रुणकिया तथा 16 को चिरडाणी पधारे। यहाँ भोपालगढ़ एवं भीलवाड़ा संघ विनति-पत्र सहित चातुर्मास की प्रार्थना लेकर उपस्थित हुए। 17 जनवरी को भूतड़ा फार्म हाउस में रात्रि साधना कर 18 को पीपाड़ पधारे।

पुण्यधरा पीपाड़ में परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी

म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 14 एवं व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., तपस्विनी महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 10 के विराजने से चतुर्विध संघ का सुन्दर संयोग बना हुआ है। मुमुक्षु श्री कल्पेशजी कवाड़, मुमुक्षु सुश्री मधुजी कवाड़ सहित परिवारजन गुरुदेव की पावन सन्निधि का लाभ ले रहे हैं। दर्शन-वन्दन हेतु श्रावक-श्राविकाओं का आवागमन निरन्तर जारी है। प्रार्थना, प्रवचन एवं दोपहर के समय निशीथ सूत्र की वाचनी चल रही है।

24 जनवरी को जयपुर से श्राविका मण्डल की बहनों ने पूज्य गुरुदेव के दर्शन, वन्दन एवं सेवा का लाभ लिया। 25 जनवरी को मुमुक्षु सुश्री हिमांशीजी कांकरिया का पीपाड़ शहर की ओर से बहुमान किया गया। यह 06 फरवरी को जलगाँव में व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. की निश्राय में दीक्षा अंगीकार कर रही हैं।

पीपाड़ की पावन भूमि पर 09 फरवरी को मुमुक्षु आत्माओं का संयम जीवन में प्रवेश हो रहा है। पीपाड़ शहर के अध्यक्ष, मंत्री, संयोजक, पदाधिकारी, कार्यकर्त्तागण एवं श्रावक-श्राविका उत्साह एवं उमंग से उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कवाड़ परिवार पीढ़ियों से संघ के प्रति समर्पित एवं आस्थावान रहा है। श्रावकरत्न श्रेष्ठीवर्य श्री पृथ्वीराजजी कवाड़, श्राविकारत्न श्रीमती सुन्दरबाईजी कवाड़ द्वारा सिंचित सुसंस्कारों का ही सुफल है कि इस परिवार से एक साथ दो दीक्षाएँ हो रही हैं। चतुर्विध संघ के लिए उनका प्रवज्या ग्रहण गौरव का विषय है। *-जगदीश जैन*

जोधपुर में पूज्य आचार्य हस्ती, श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के जन्म-दिवस पर तप-त्याग तथा 24 जनवरी को मुमुक्षुओं का अभिनन्दन

शान्त-दांत-गम्भीर उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा 6 सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा में सुख-शांतिपूर्वक विराज रहे हैं। व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा पावटा स्थित सिद्धान्तशाला में सुखसातापूर्वक विराज रहे हैं। विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5, व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा का जोधपुर के उपनगरों को फरसने के पश्चात् पीपाड़ पदार्पण हो गया है। महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 7 का 25 जनवरी को पीपाड़ की ओर विहार हुआ है।

पौष शुक्ला चतुर्दशी 11 जनवरी 2017 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा में अध्यात्मयोगी युगमनीषी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का जन्मदिवस तप-त्याग एवं धर्मध्यान के साथ मनाया गया। श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा., महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री शान्तिप्रभाजी म.सा., श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रजी म.सा., सेवावभावी श्री नन्दीषेणजी म.सा. ने पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के विभिन्न गुणों का भावपूर्ण कथन किया। उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य हस्ती के उपकार कहने के नहीं जीने के हैं। इनके अनेक गुणों में से एक गुण हम अपने जीवन में उतारेंगे तो उनका जन्मदिन मनाना हमारे लिये सार्थक होगा। श्रावकों में पूर्व राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने अपने भक्तिभावपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। इस दिन सामायिक-साधना के साथ दया-संवर, एकाशन, उपवास, पौषध आदि प्रर्याप्त संख्या में हुए।

विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. के सान्निध्य में पूज्य आचार्यप्रवर हस्ती का जन्मदिवस सामायिक-स्वाध्याय भवन, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड के 16वें सेक्टर में तप-त्याग एवं धर्म साधना के साथ मनाया गया। लगभग 100 श्रावक-श्राविकाओं ने एकाशन, उपवास एवं दया-संवर का लाभ लिया। श्रावक-श्राविकाओं ने भी पूज्य आचार्यप्रवर पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 83 वां जन्मदिवस 16 जनवरी 2017 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा में तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी, श्रद्धेय श्री अभयमुनिजी, श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी, साध्वी लक्षितप्रभाजी, साध्वी सुव्रतप्रभाजी, व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी, व्याख्यात्री महासती श्री शान्तिप्रभाजी, विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी, श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रजी, सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणजी म.सा. ने श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर की सरलता, साधना के प्रति निष्ठा आदि विभिन्न गुणों पर प्रकाश डाला। रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्दजी जैन, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता ने भी अपनी भावना व्यक्त की। स्थानीय संघ के अध्यक्ष एवं उपाध्यायप्रवर के सांसारिक लघुभ्राता श्री धनपतजी सेठिया ने कहा कि उपाध्याय प्रवर का 83 वां जन्मदिवस मना रहे हैं, किन्तु संयम ग्रहण करने के पूर्व भी उनका जीवन संयममय था। आपने कभी अपने लिए गृहस्थ जीवन में भी वस्त्र नहीं सिलवाए, अपने बड़े भ्राता के वस्त्रों से ही काम चलाते थे। भोजन करने बैठते तो जो थाली में आता उसे खाकर उठ जाते। कभी अपने मुख से मांगते नहीं थे, ऐसा संयमी जीवन आपने गृहस्थ अवस्था में जीया। आप दीर्घायु एवं शतायु हों तथा स्वास्थ्य में समाधि रहे, यही कामना करते हैं। श्री मितेश सुराणा सुपुत्र श्री महेन्द्रजी सुराणा ने अठाई तप के प्रत्याख्यान कर उपाध्यायप्रवर के जन्मदिवस पर सुन्दर भेंट दी। अन्य कई प्रत्याख्यान हुए। सभा का संचालन श्री सुभाषजी हुण्डीवाल ने किया।

24 जनवरी को 4 मुमुक्षु आत्माओं का पावटा स्थानक में उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में अभिनन्दन किया गया। संतों एवं महासतीवृन्द के उद्गारों के पश्चात् मुमुक्षु बहिन सुश्री हिमांशी कांकरिया, मुमुक्षु बहिन सुश्री मधुबालाजी कवाड़, मुमुक्षु बहिन श्रीमती उजास जी डाकलिया एवं मुमुक्षु भाई श्री कल्पेशजी कवाड़ ने अपने वैराग्यपरक विचार प्रकट करते हुए जलगांव एवं पीपाड़ में आयोज्य दीक्षा हेतु निमंत्रित किया। कल्पेशजी कवाड़ ने अपने विचार अभिव्यक्त करते हुए कहा कि वर्ष 2011 में व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., महासती श्री चारित्रलताजी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. का चेन्नई में चातुर्मास हुआ तब से मेरे जीवन को एक नया मोड़ मिला। मेरी भावना को जानकर पिताश्री अशोकजी कवाड़ ने मुझे कहा कि तुम्हारे सामने दो रास्ते हैं एक संसार का तथा दूसरा संयम का। अब तुम्हें तय करना है कि कौनसा रास्ता चुनना है। मैंने श्रेष्ठ रास्ता संयम का चुना, परिवार का सहयोग मिला और मैं इस मार्ग पर आगे बढ़ता गया। अंत में उपाध्यायप्रवर ने सभी मुमुक्षुओं को आशीर्वाद प्रदान करते हुए फरमाया कि आप सब ने श्रेष्ठ मार्ग चुना है। इसमें आगे बढ़ते जायें, यही मेरी मंगल कामना है। संघ की ओर से सभी मुमुक्षु आत्माओं का अभिनन्दन एवं सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री सुभाषजी हुण्डीवाल ने किया। *-धनपत सेठिया, अध्यक्ष*

अध्यात्मयोगी आचार्य हस्ती के 107 वें जन्मदिवस पर तथा उपाध्यायप्रवर के 83 वें जन्मदिवस पर विभिन्न ग्राम-नगरों में गुणानुवाद सभाएँ एवं तप-त्याग

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में रणसी गाँव में, श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में जोधपुर में तथा इसी प्रकार जहाँ-जहाँ संत-सती विराजमान थे, वहाँ-वहाँ पौष शुक्ला चतुर्दशी 11 जनवरी 2017 को पूज्य आचार्य हस्ती के महान् गुणों का स्मरण किया गया तथा तप-त्याग एवं धर्म साधनापूर्वक उनका 107 वां जन्मदिन मनाया गया। इसी प्रकार उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 83 वें जन्मदिवस पर तप-त्याग एवं गुणानुवाद किए गए। कतिपय विवरण यहाँ प्रकाशित हैं:-

महुवा (दौसा)- साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में सामायिक-

स्वाध्याय भवन में पूज्य गुरुदेव आचार्य हस्ती का जन्मदिवस तप-त्याग एवं गुणानुवाद के साथ मनाया गया। महासती श्री चैतन्यप्रभाजी, व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा. के प्रभावी गुणानुवाद के पश्चात् संघमंत्री श्री अशोकजी जैन ने कहा कि आचार्य भगवन्त का पल्लीवाल क्षेत्र पर बड़ा उपकार है। इस अवसर पर उपवास, एकाशन, संवर, सामायिक-साधना पर्याप्त संख्या में हुए। निकटवर्ती ग्राम-नगरों सहित लगभग 300 श्रद्धालु गुणानुवाद सभा में उपस्थित थे। *-अशोककुमार जैन, मंत्री*

बैंगलुरू- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (कर्नाटक) बैंगलुरू एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ट्रस्ट (कर्नाटक) बैंगलुरू के संयुक्त तत्त्वावधान में शूले-अशोकनगर के महावीर भवन में आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. का 107 वां जन्मदिवस तथा श्रमणसूर्य मरूधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म.सा. का 33 वां स्मृतिदिवस तथा उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 83 वां जन्म-दिवस श्रद्धाभक्ति के साथ दो-दो सामायिक साधना एवं विभिन्न प्रत्याख्यानों पूर्वक मनाया गया। इस प्रसंग पर समर्थगच्छाधिपति पूज्य श्री उत्तमचन्दजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी विदुषी महासती श्री जयश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5 का शुभ सान्निध्य प्राप्त हुआ। वक्ताओं ने तीनों महापुरुषों के जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। पूज्य महासती जी ने अपने मंगल उद्गारों में कहा कि जिनशासन को तीन दुर्लभ अनमोल अद्वितीय रत्न प्राप्त हुए- 1. पूज्य आचार्यश्री आत्मारामजी म.सा., 2. पण्डितरत्न श्री समर्थमलजी म.सा., 3. इतिहासमार्तण्ड पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा.। पूज्य श्री घासीलालजी म.सा. ने पूज्य हस्ती के अहमदाबाद पधारने पर उन्हें नवकोटि मारवाड़ के धर्मशासक रूप में सम्बोधित कर स्वागत किया था। इस अवसर पर अनेक भाई-बहनों ने 107 दिन, 83 दिन एवं 33 दिन के लिए अनेक छोटे-बड़े त्याग-प्रत्याख्यान किए। विभिन्न संघों के पदाधिकारियों इस अवसर पर उपस्थित होकर अपनी श्रद्धा अर्पित की। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन संघमंत्री श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने किया। *-गौतमचन्द ओस्तवाल, मंत्री*

चेन्नई- साधुमार्गी शान्त-क्रान्ति संघ के आचार्यप्रवर श्री विजयराजजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तरुणतपस्वी मधुरव्याख्यानी श्री विनोदमुनिजी म.सा., श्री अभिनवमुनिजी म.सा. एवं विदुषी महासती श्री नेहाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में दया-संवर, एकाशन, उपवास, पौषध, व्रत-नियम एवं तीन सामायिक के साथ पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 107 वां जन्मदिवस मनाया गया। लगभग 700 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। श्रद्धेय श्री विनोदमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि गुरुदेव आचार्यश्री नानालालजी म.सा. के साथ, आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के मधुर सम्बन्ध रहे। उन्होंने भोपालगढ़ में आत्मीय मिलन के संस्मरण सुनाये तथा यह भी कहा कि आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. ने आचार्य श्री नानालालजी म.सा. को गुरुदेव श्री विजयराजजी म.सा. को विशेष ज्ञानार्जन करवाने हेतु प्रेरणा की थी। श्रमणसूर्य श्री मिश्रीमल जी म.सा. संगठन के लिए समर्पित महापुरुष थे। उनकी प्रेरणा से अनेक शिक्षण संस्थान, छात्रावास, गोशालाएँ एवं अस्पताल बने। श्री सुभाष जी कांठेड़ ने मासक्षपण के प्रत्याख्यान लिए। कार्यक्रम का संचालन संघमंत्री श्री गौतमचन्दजी लोढ़ा ने किया।

16 जनवरी 2017 को श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 83 वां जन्मदिवस तप-त्यागपूर्वक ज्ञानदिवस के रूप में स्वाध्याय भवन साहुकारपेट में मनाया गया। *-आर. नरेन्द्र कांकरिया, प्रचार-प्रसार सचिव*

जयपुर- लाल भवन, चौड़ा रास्ता में विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. के सान्निध्य में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्ती का जन्मदिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया। प्रवचन के पूर्व एक घण्टे का नवकारमंत्र का जाप हुआ एवं बाद में आचार्यप्रवर पर प्रश्नोत्तरी रखी गई। अनेक श्रद्धालुओं ने पूज्य गुरुदेव के गुणगान किए। इस अवसर पर 36 बकरों को अभयदान दिया गया। उन बकरों को कत्लखानों से छुड़ाकर मांगलिक के पश्चात् भोपालगढ़ बकराशाला

भेजा गया। इस दिन अनेक उपवास, दया, एकाशन, पौषध आदि हुए। लगभग 25 भाइयों एवं 25 बहनों ने रात्रि पौषध का लाभ लिया।

उपाध्यायप्रवर के जन्मदिवस पर व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. के सान्निध्य में तप-त्याग एवं गुणानुवाद हुए। उपाध्यायप्रवर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके शतायु होने की कामना की गई तथा उनके सेवाभाव, विनयशीलता, समर्पण आदि गुणों को ग्रहण करने की प्रेरणा की गई। संचालन श्री सुरेशचन्दजी कोठारी, संयुक्त मंत्री ने किया। *-सुरेशचन्द कोठारी*

सूरत- 11 जनवरी को यहाँ अखिल भारतीय श्री जैन युवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी दुधेड़िया की उपस्थिति में दो-दो सामायिक की आराधना की गई। श्री दुधेड़ियाजी ने गुरु-भक्ति का सुन्दर विवेचन किया। व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. के सान्निध्य में गुरुदेव का जन्मदिवस वासन्दा में तप-त्याग के साथ मनाया गया। जिसमें 45 श्रावक-श्राविकाओं ने एकाशन तप किया एवं सामायिक साधना की। *-सुनील नाहर, मंत्री*

हिण्डौनसिटी- व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में भयंकर शीत में भी 25 सामूहिक तेले हुए तथा सामूहिक सामायिक के साथ 30 उपवास एवं 80 एकाशन तप हुए। दया, आयंबिल, संवर, पौषध आदि की भी साधना हुई। लगभग 350 श्रावक-श्राविकाओं, युवकों एवं बालकों की उपस्थिति रही। इसी दिन श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 70 युवा बन्धुओं ने रक्तदान किया। उपाध्यायप्रवर का जन्मदिवस ज्ञानदिवस के रूप में मनाया गया, जिसमें सामायिक, एकाशन, उपवास आदि की साधना हुई। *-मुकेशचन्द जैन*

सवाईमाधोपुर में रत्नसंघ का क्षेत्रीय पारिवारिक सम्मेलन सानन्द सम्पन्न

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सवाईमाधोपुर द्वारा सामायिक स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक अध्यात्मयोगी, युगमनीषी प्रातः स्मरणीय पूज्य गुरुदेव 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के 107 वें जन्म-दिवस के पावन प्रसंग पर पोरवाल क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं का क्षेत्रीय सम्मेलन पौष शुक्ला चतुर्दशी, 11 जनवरी 2017 को महावीर भवन सवाईमाधोपुर में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा-चेन्नई का कुशल नेतृत्व प्राप्त हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता अखिल भारतीय रत्नसंघ के उपाध्यक्ष (संगठन) श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन-कोटा ने की तथा इस क्षेत्रीय सम्मेलन में पोरवाल क्षेत्र के अनेक ग्राम-नगरों के श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ पोरवाल सम्भाग के क्षेत्रीय प्रधान श्री कुशलचन्दजी गोटेवाले के मंगलाचरण एवं संकल्प के साथ हुआ। उन्होंने क्षेत्रीय सम्मेलन की भूमिका प्रस्तुत करते हुए सम्मेलन के उद्देश्य एवं संघ द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम के अन्तर्गत सर्वप्रथम पोरवाल क्षेत्र के वीर परिवारों को सम्मानित किया गया।

तत्पश्चात् संघ सेवा, समाज-सेवा, चिकित्सा-सेवा, अध्यापन-सेवा, जीवदया, साधना-आराधना एवं उत्कृष्ट कार्य करने वाले संघ सदस्यों को सम्मानित किया गया। सम्मानों में लाइफ टाइम एचीवमेंट सम्मान, चतुर्विध संघ सेवा सम्मान, पर्युषण स्वाध्यायी सेवा सम्मान, संस्कार केन्द्र उत्कृष्ट सेवा सम्मान, अध्यापक सेवा-सम्मान, आध्यात्मिक साधना सम्मान, राजनैतिक एवं समाज सेवा सम्मान, चिकित्सा सेवा-सम्मान प्रदान किये गये। कार्यक्रम में वक्ता के रूप में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल-जयपुर के अध्यक्ष श्री पारसचन्दजी हीरावत-मुम्बई, रत्नसंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा-जयपुर, स्वाध्याय संघ-जोधपुर के संयोजक श्री ओमप्रकाशजी

बांठिया-बालोतरा, मुख्य वक्ता जिनवाणी के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के निदेशक श्री प्रकाशचन्दजी जैन-जयपुर, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्दजी जैन-जोधपुर के संघ के श्रेष्ठ स्वरूप, आचार्य हस्ती के व्यक्तित्व, आध्यात्मिक शिक्षण, स्वाध्याय संघ की प्रगति आदि विभिन्न विषयों पर उद्‌बोधन हुए। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-सवाईमाधोपुर के अध्यक्ष श्री सुबाहुकुमारजी जैन एवं मंत्री श्री मदनलालजी जैन ने स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम लगभग चार घण्टे चला।

मुख्य अतिथि श्री पी.एस. सुराणा ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा अजमेर में आयोजित कार्यशाला में संघ द्वारा पारित विजन के कार्यक्रमों पर प्रकाश डालते हुए संघ के उत्थान, विकास, विस्तार एवं साधना-आराधना के समस्त कार्यों में चतुर्विध संघ एकजुट होकर कार्य करे, सभी का लक्ष्य एक हो, दिशा एक हो, संघ एक हो, क्रियान्विति भी एक हो, इस बात की प्रभावी प्रेरणा प्रदान की, साथ ही पोरवाल क्षेत्र से पधारे सभी महानुभावों से निवेदन किया कि आप सभी संघ द्वारा आयोज्य कार्यक्रमों में तन-मन-धन से अपनी सहभागिता प्रदर्शित करें। सभी संघ सदस्यों को एवं सवाईमाधोपुर संघ को सम्मेलन की सफलता के लिए बधाई देने के साथ सुन्दर व्यवस्था के लिए सवाईमाधोपुर संघ का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री कुशलजी गोटेवाला ने किया। इस दिन यहाँ सामूहिक सामायिक, 350 एकाशन, उपवास आदि हुए।

क्षेत्रीय सम्मेलन में उत्साह एवं उमंग का वातावरण रहा। इस कार्यक्रम में निम्नांकित सम्मान प्रदान किए गए- **1. वीर परिवार सम्मान-** श्री रमेशलालजी जैन 'करेला वाले', श्री शान्तिलालजी जैन 'चोरू वाले', श्री प्रभूदयालजी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री घनश्यामजी जैन-कोटा, श्री नरेन्द्रमोहनजी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर, श्री मूलचन्दजी जैन-खेरदा, श्री दामोदरलालजी जैन-जरखोदा, श्री राधेश्यामजी जैन-चोरू, श्री बंशीलालजी जैन-अलीगढ़। **2. लाइफ टाइम अचीवमेन्ट अवार्ड-** श्री शोभाग्यमलजी जैन-कुश्तला, श्री रामदयालजी जैन सर्राफ-बजरिया-सवाईमाधोपुर, स्व. श्री निहालचन्दजी जैन-देई, स्व. श्री गोपाललालजी वैद्य-अलीगढ़, स्व. श्री लड्डूलालजी जैन 'धमूण वाले'-सवाईमाधोपुर। स्व. श्री पारसचन्दजी जैन बोहरा-बजरिया-सवाईमाधोपुर। **3. चतुर्विध संघ सेवा सम्मान-** श्री भैरूलालजी जैन-चौथ का बरवाड़ा, श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन-देई, श्री राकेशजी जैन-सुमेरगंजमण्डी, श्री नरेशचन्दजी जैन-श्योपुरकलां, श्री टीकमचन्दजी जैन-अलीगढ़, श्री पुखराजजी जैन-जयपुर, श्री हनुमानजी जैन 'खिजुरीवाले'-कोटा, श्री प्रदीपजी जैन 'अरनेठा वाले'-कोटा, श्रीमती मंजूजी जैन लुंकड़-कोटा, स्व. श्रीमती संजूलताजी धर्मसहायिका श्री रविन्द्रजी जैन-अलीगढ़। **4. संस्कार केन्द्र उल्लेखनीय सेवा सम्मान-** युवारत्न श्री विजयकान्तजी जैन-बजरिया, श्री राजकुमारजी जैन नवलखा-कोटा, सुश्री रिंकीजी जैन-अलीगढ़, सुश्री निकिताजी जैन-सवाईमाधोपुर, सुश्री येशुजी जैन-आलनपुर। **5. चिकित्सा सेवा एवं प्राणी दया सम्मान-** डॉ. जितेशजी जैन-सवाईमाधोपुर, डॉ. शीतलराजजी जैन-सवाईमाधोपुर, डॉ. तीव्रचन्दजी जैन-आवासन मण्डल-सवाईमाधोपुर, डॉ. राजीवजी जैन-कोटा, वैद्य मधुसूदनजी गौतम-सवाईमाधोपुर। **6. अध्यापक सेवा सम्मान-** श्री धर्मेन्द्रकुमारजी जैन 'व्याख्याता'-आवासन मण्डल-सवाईमाधोपुर, श्री प्रेमबाबूजी जैन-बजरिया, श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन-बजरिया, श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन-आवासन मण्डल-सवाईमाधोपुर।

अक्षय तृतीया हेतु गोटन संघ को स्वीकृति

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने 31 जनवरी, 2017 को पीपाड़शहर में **अक्षय तृतीया 29 अप्रेल, 2017 पर गोटन** विराजने की स्वीकृति साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ स्वीकृति प्रदान की है, जिससे गोटन संघ हर्षित एवं प्रमुदित है। एकान्तर तप-साधक अपने नाम एवं सदस्य संख्या का उल्लेख

कर सम्पूर्ण जानकारी अपने पधारने की सूचना संघ के प्रधान कार्यालय घोड़ों के चौक, जोधपुर ई-मेल-absjrhssangh@gmail.com, फोन- (0291) 2636763/2641445 पर अथवा गोटन संघ के सम्पर्क सूत्र पर भिजवाने का श्रम करावें। गोटन के सम्पर्क सूत्र-**श्री हंसराजजी चौपड़ा**-अध्यक्ष, हस्ती किराणा स्टोर, मेन मार्केट, पोस्ट-गोटन-342902 (जिला-नागौर), मोबाइल-94602-85067, श्री ओमप्रकाशजी ओस्तवाल-मंत्री, महावीर ऑटोमोबाइल्स, पोस्ट-गोटन-342902 (जिला-नागौर), मोबाइल-94685-48048

श्री रतनलालजी बाफणा 'रत्नसंघ-विभूषण' से होंगे सम्मानित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा संघसेवी, संतसेवी, संघहितैषी, संघहितचिन्तक, संघरत्न सम्मान से सम्मानित शासन सेवा समिति के संयोजक श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ, उदारमना, सेवाभावी, प्राणिमित्र सम्मानीय सुश्रावक श्री रतनलालजी सी. बाफणा को संघ दीप्ति में सतत सहयोग प्रदान करने के उपलक्ष्य में पीपाड़ शहर में आयोजित दीक्षा महोत्सव के पावन प्रसंग पर 08 फरवरी 2017 को वीरपरिवार एवं दीक्षार्थी अभिनन्दन समारोह में रत्नसंघ विभूषण से सम्मानित किया जायेगा।

-पूरणराज अबानी, महामंत्री

मुमुक्षु भाई-बहिनों का अभिनन्दन-समारोह चेन्नई में सम्पन्न

जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के पावन मुखारविन्द से पीपाड़ शहर (राज.) में 09 फरवरी 2017 को जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करने वाले मुमुक्षु बन्धु श्री कल्पेश जी कवाड़ तथा मुमुक्षु बहिन सुश्री मधुबाला जी कवाड़ का अभिनन्दन समारोह 7 जनवरी 2017 को जैन दादावाड़ी चेन्नई में आयोजित हुआ। अभिनन्दन समारोह में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा सहित चेन्नई के गणमान्य महानुभाव उपस्थित हुए। इस अवसर पर दक्षिण क्षेत्र में विराजित वीर परिवारों को भी सपरिवार आमंत्रित किया गया। प्रात: 10.30 से दोपहर 2.00 बजे तक आयोजित इस कार्यक्रम में लगभग 2000 महानुभावों की उपस्थिति रही। समारोह में दोनों मुमुक्षुओं के परिवारजनों ने अपनी भावाभिव्यक्ति रखते हुए उनके जीवन को रेखांकित किया, जिससे वैराग्य का रंग प्रदर्शित हुआ। दोनों मुमुक्षुओं ने भी परिवार का आभार प्रकट करते हुए गुरु भगवन्तों की महान् कृपा का उपकार मानते हुए उद्बोधन दिया।

दीक्षार्थी बहिन की शोभायात्रा एवं सम्मान समारोह नागौर में सानन्द सम्पन्न, 6 फरवरी को जलगाँव में दीक्षोत्सव

जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञा से एवं व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. के मुखारविन्द से जलगांव (महा.) में 06 फरवरी 2017 को जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करने वाली विरक्ता बहन सुश्री हिमांशी जी कांकरिया की भव्य शोभायात्रा का आयोजन नागौर (राज.) में 01 जनवरी 2017 को हुआ। शोभायात्रा में रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा सहित संघ के अनेक पदाधिकारी एवं नागौर सकल समाज के संघ पदाधिकारी उपस्थित थे। नागौर के समस्त संघों का सक्रिय सहयोग शोभायात्रा में प्राप्त हुआ। शोभायात्रा कांकरिया परिवार के निवास स्थान से नागौर के मुख्य मार्गों से होती हुई श्री सुमतिनाथ जैन मन्दिर परिसर में पहुँची। अभिनन्दन सम्मान समारोह की अध्यक्षता रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा-चेन्नई ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में श्री के.रामजी बागड़िया, पूर्व डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में ओसवाल न्यात नागौर के अध्यक्ष श्री गौतमचन्दजी कोठारी का कुशल नेतृत्व प्राप्त हुआ। वीर परिवार एवं दीक्षार्थी बहिन के सम्मान कार्यक्रम के अन्तर्गत नागौर स्थित जैन समाज की सभी सम्प्रदायों

की संस्थाओं द्वारा वीर परिवार एवं दीक्षार्थी बहिन का सम्मान किया गया। नागौर की सभी संस्थाओं द्वारा एक सामूहिक अभिनन्दन-पत्र तैयार कर दीक्षार्थी बहिन को समर्पित किया गया। सकल जैन समाज एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-नागौर द्वारा वीर माता-पिता एवं दीक्षार्थी बहिन को माला, शॉल एवं चुन्दड़ी द्वारा सम्मानित किया गया।

बनें आगम अध्येता (6)

आवश्यकसूत्र पर खुली पुस्तक परीक्षा आयोजन

'बनें आगम अध्येता' योजना के अन्तर्गत 'आवश्यक सूत्र' आगम पर परीक्षा आयोजित की जा रही है। इस परीक्षा में श्राविकाओं की रुचि को देखते हुए मुख्य समापक परीक्षा सभी केन्द्रों पर **26 फरवरी, 2017** को आयोजित की जायेगी।

उत्तराध्ययनसूत्र भाग-3 का परिणाम सभी प्रतिभागियों के मोबाइल पर भेजा गया है। परीक्षा का पारितोषिक उत्तराध्ययनसूत्र के तीनों भागों के परिणाम को मिलाकर भिजवाया जायेगा। प्रतिभागियों का पारितोषिक प्रतिभागी के बैंक खाते में ही प्रेषित किया जायेगा। अतः प्रतियोगिता के प्रत्येक प्रतिभागी अपना नाम, स्थान का उल्लेख करने के साथ निम्न जानकारी भिजवाने का श्रम करावें :- Name of Bank, Name of Account holder, Bank Account Number, Bank Place, Bake IFS code, Micr Code, Mobile No. -*बीना मेहता-महासचिव*

स्वाध्यायियों के लिए आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायी बंधुओं से निवेदन है कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आत्म गुणों के संचय, संवर्धन एवं संरक्षण के महापर्व पर्वाधिराज पर्युषण पर्व (दिनांक 19 अगस्त से 26 अगस्त 2017 तक) के पुनीत अवसर पर आपकी सेवाओं की महती आवश्यकता है। आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवाएँ संघ को प्रदान करावें। पर्युषण में बाहर क्षेत्र में जाकर सेवा देने से आपकी धर्माराधना तो सुचारू रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। अतः आपसे आग्रह है कि आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय, जोधपुर के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें। साथ ही आप अपनी नवीनतम जानकारी जैसे अपने मोबाइल नंबर, ईमेल तथा व्हाट्सएप नम्बर आदि भी इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करें ताकि आपसे सम्पर्क में आसानी रहे।

विशेष निवेदनः- हम सभी स्वाध्यायी बन्धुओं की पारिवारिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक जान-पहचान अपने क्षेत्र में नहीं, अपितु पूरे भारत वर्ष एवं विदेशों में भी है। इस संबंध में निवेदन है कि हम अपने जान-पहचान वालों से व्यावहारिक वार्तालाप करने के साथ ही आध्यात्मिकता से जुड़ी बातें भी करें। हमारे सम्पर्क में आया बन्धु जिस क्षेत्र से जुड़ा है, उस क्षेत्र में चातुर्मास है या नहीं, इसकी जानकारी लें। अगर नहीं हैं तो क्षेत्र के अध्यक्ष/मंत्री से बात कर स्वाध्यायी बुलाने की प्रेरणा करें। अगर आपकी प्रेरणा से उस क्षेत्र में स्वाध्यायी जाते हैं तो आपको धर्म दलाली का लाभ स्वतः ही मिल जाएगा। साथ ही सम्पर्क में आने वाले बंधुओं की धार्मिक जानकारी एवं योग्यता की परख करें तथा उन्हें स्वाध्यायी बनने एवं बनाने हेतु प्रेरणा करें। ऐसे बन्धु जिनमें स्वाध्यायी बनने की योग्यता हो उनके पते एवं फोन नम्बर इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करें, ताकि उनसे सम्पर्क किया जा सके। **संयोजक/सचिव**, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन :-0291-2624891, 9462543360, 9414126279

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत बिलाड़ा में आध्यात्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविर आयोजित

पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के पावन सान्निध्य में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के मार्गदर्शन में कार्यरत आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना समिति द्वारा श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बिलाड़ा के तत्त्वावधान में आध्यात्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविर का आयोजन 26 से 29 दिसम्बर, 2016 को बिलाड़ा (जोधपुर-राज.) में सम्पन्न हुआ। शिविर में चौथ का बरवाड़ा, अलीगढ (रामपुरा), खेरली, खोह, बौंल, वैर, महवा, हिण्डौनसिटी, गंगापुरसिटी, भरतपुर, अलवर, कोटा, भोपालगढ़, पिपाड़सिटी, जोधपुर, जबलपुर, नदबई, धुलिया(महा.), जयपुर, सवाईमाधोपुर, आदर्शनगर, बजरिया, हाउसिंग बोर्ड, बिलाड़ा आदि सुदूरवर्ती-निकटवर्ती ग्राम-नगरों से 140 छात्र-छात्राएँ सम्मिलित हुए। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार कक्षाओं को विभाजित करके अध्यापन कराया गया। अनेक प्रतियोगिताएँ भी आयोजित हुईं।

शिविरकाल में आचार्य भगवंत एवं संत-सती मण्डल के पावन प्रेरणा से शिविरार्थियों ने अपने चारित्र व क्रिया पक्ष को मजबूत बनाने के लिए प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण, नवकारसी, रात्रि-भोजन त्याग आदि व्रत-नियम किये। तपस्या के रूप में एकासन, उपवास, बेले आदि किए।

शिविर में शिक्षण कार्य में श्री त्रिलोकचन्दजी जैन-जयपुर, श्री जिनेन्द्रजी जैन-जयपुर, श्री महेन्द्रजी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री मनीषजी जैन-चैन्नई, श्रीमती अरुणाजी कर्नावट-जयपुर, श्रीमती पुष्पाजी मेहता-पीपाड़ सिटी की पूर्णकालीन एवं श्रीमान् जगदीशजी जैन, श्री राजेशजी जैन की अंशकालीन की सेवाएँ प्राप्त हुईं।

शिविरकाल में महान् अध्वसायी सरस व्याख्यानी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., परम श्रद्धेय श्री यशवंतमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. आदि सन्तों का मागदर्शन प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा एवं युवक परिषद् के पूर्व अध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा ने भी सम्बोधित किया।

शिविर के अन्तिम दिवस आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने प्रवचन के समय सभी शिविरार्थियों को जिनवाणी का रसपान कराया एवं प्रत्याख्यान आदि करवाये।

राष्ट्रीय संघ अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा के मुख्यातिथ्य एवं शिविरलाभार्थी श्री इन्दरचन्दजी सुराणा, चेन्नई के विशिष्ट आतिथ्य तथा स्थानीय पदाधिकारियों की सन्निधि में आयोजित समापन समारोह में शिविर में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त छात्र-छात्राओं को विशेष आमन्त्रित महानुभावों के द्वारा पुरस्कार प्रदान कर उत्साहवर्द्धन किया गया। बिलाड़ा संघ के द्वारा मुख्यातिथि एवं सभी अध्यापकगणों का सम्मान किया गया। सभी शिविरार्थियों को पारितोषिक का वितरण श्रीमान् स्व. पृथ्वीराजजी प्रेमकुमारजी कवाड़, श्रीमान् स्व. मांगीलालजी हरीशकुमारजी कवाड़, चैन्नई की ओर से किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् पी. शिखरमलजी सुराणा द्वारा बिलाड़ा संघ को धन्यवाद ज्ञापित किया गया एवं अन्त में मांगलिक श्रवण कर सबने प्रसन्नता का अनुभव किया।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बिलाड़ा के सभी कार्यकर्त्ताओं ने उत्साह से अतिथि सेवा का लाभ लिया एवं शिविर के संचालन में पूर्ण रूप से सहयोग किया। शिविर के लाभार्थी श्रीमान् इन्दरचंदजी राजकुमारजी दिनेशकुमारजी सुराणा, अयनावरम चैन्नई को हार्दिक धन्यवाद। शिविर को सफल बनाने में पल्लीवाल क्षेत्र से श्रीमान् राजेशजी जैन, हिण्डौनसिटी, पोरवाल क्षेत्र से श्रीमान् राजेशजी जैन, बजरिया स.मा., श्रीमान् रविन्द्रजी जैन, हा.बोर्ड स.मा. का सहयोग प्राप्त हुआ। इस शिविर आयोजन में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी महानुभावों का आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना समिति की ओर से हार्दिक धन्यवाद एवं आभार। *- हरीश कवाड़, संयोजक, आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना समिति*

अ.भा.श्री जैन रत्न आ. संस्कार केन्द्र, जोधपुर के बढ़ते चरण

(1)"बहिना! तुमसे है कुछ कहना" कार्यक्रम सम्पन्न

समाज के विकास में महिलाओं की भूमिका व बालिकाओं में संस्कार निर्माण की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम के रूप में 30 दिसम्बर 2016 को श्री जयनारायण व्यास स्मृति भवन (टाउन हॉल) में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर द्वारा आयोजित "बहिना! तुमसे है कुछ कहना" इस भव्य कार्यक्रम में श्री के.एन. भण्डारी, अध्यक्ष सिंह सभा तथा श्री पी.एस. सुराणा, राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के साथ मंचासीन राष्ट्रीय कवि, जाने माने कलाकार, समाज सेवी व मुख्य वक्ता श्री युगराज जैन (मुम्बई) से पूरा मंच सुशोभित हो रहा था। मंच पर श्री पूरणराज अबानी, श्री हर्षवर्धन ललवाणी, श्री राजेश भण्डारी, श्री धनपतचंद सेठिया भी मंचासीन थे।

श्री हर्षवर्धन ललवाणी द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। बड़ी संख्या में बालिकाओं, अभिभावकों, महिलाओं व युवतियों से हॉल भरा हुआ था। कुल 800 की उपस्थिति थी, जिसमें 400 बालिकाएँ व 400 अन्य उपस्थित थे। हॉल के बाहर भी जन समुदाय लाइव प्रोग्राम देख रहे थे। अंग प्रदर्शन, व्यसन फैशन, बालिकाओं का पलायन, विदेशी संस्कृति के नकारात्मक प्रभाव व शालीनता को नहीं अपनाया जाना, शादी के रिश्तों का टूटना आदि बिंदुओं से हो रहे पतन को रेखांकित करते हुए श्री जैन ने कहा कि मर्यादा में रहना ही नारियों व बालिकाओं का गहना है तथा बिना सोचे-समझे जवानी के ज्वार में युवकों के संग चले जाना, देर रात तक होटलों व महफिलों में रहना नरक तुल्य दु:खों को आमंत्रण देना है। बालिकाओं ने लघु प्रश्नोत्तरी के पत्रक भी भरकर दिये।

समारोह में बैठक व स्वागत व्यवस्था के माकूल इंतजाम के लिए श्री राजेश चोरड़िया, श्री संजय सुराणा, श्री सुरेन्द्र कुम्भट, श्री गणपत चौपड़ा, श्री अमरचंद चौधरी, श्री गजेन्द्र चौपड़ा, श्री प्रकाश चौपड़ा, श्री रमेश सिंघवी व शक्तिनगर के युवा दल का सहयोग अत्यन्त सराहनीय था। श्री के.एन. भण्डारी व श्री पी.एस. सुराणा ने सुसंस्कारों को मजबूत करने पर बल दिया। श्री राजेश भण्डारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया व श्री तरूण बोहरा ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

(2) मिड ब्रेन एक्टिविटी रविवारीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

01 जनवरी 2017 को मिड ब्रेन एक्टिविटी प्रशिक्षण कार्यक्रम की जानकारी देने के लिए छठी गली, शक्तिनगर स्थानक, जोधपुर में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें संस्कार केन्द्र व संस्कार शिविर के 200 संभागी छात्र-छात्राएँ व उनके अभिभावक भी उपस्थित थे।

15 जनवरी 2017 से 6 दिनों के लिए प्रत्येक रविवार को मिड ब्रेन एक्टिविटी का प्रशिक्षण देने के लिए छठी गली, शक्ति नगर स्थानक,जोधपुर में प्रशिक्षण कक्षा प्रारम्भ हुई। इसमें 56 छात्र-छात्राओं ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इन्दौर से समागत 4 ट्रेनर्स ने Projector, Exercise द्वारा प्रशिक्षण दिया। डेढ़ घंटे तक पट्टी बांधकर छात्र कलर व संख्याओं की पहचान करने में सफल रहे। प्रशिक्षण स्थल पर श्री हर्षवर्धनजी ललवाणी, श्री राजेशजी भण्डारी, श्री सुभाषजी, श्री सुरेन्द्रजी कुम्भट, श्री नौरतनजी मेहता उपस्थित थे। छात्रों के लिए यह प्रशिक्षण बहुत लाभप्रद रहा। जोधपुर के विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण की कक्षाएँ आयोजित की जायेंगी।

(3) विधि सहित मौखिक प्रतिक्रमण परीक्षा-2017

05 फरवरी 2017 को जोधपुर संस्कार केन्द्रों व शिविरों के छात्र-छात्राओं की विधि सहित मौखिक प्रतिक्रमण परीक्षा आयोजित होगी। जिसमें लगभग 160 छात्र-छात्राएँ भाग लेंगे। परीक्षा के लिए 25 परीक्षा केन्द्रों व

लगभग 55 परीक्षकों को चयनित कर लिया गया है। जोधपुर से बाहर के संस्कार केन्द्रों की परीक्षाएँ आगामी माह में कराने का निर्णय लिया गया है।

(4) संस्कार केन्द्र व शिविरों की अद्यतन संख्या

79 संस्कार केन्द्रों (4 जलगांव क्षेत्र सहित) व 46 संस्कार शिविरों में करीब 1850 छात्र-छात्राएँ अध्ययनरत हैं।

-राजेश भण्डारी, सचिव

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की 1 से 12 की आगामी परीक्षा 16 जुलाई 2017 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा दिनांक **16 जुलाई 2017**, रविवार को दोपहर 12.30 बजे से आयोजित की जाएगी।

1. परीक्षा, ज्ञान वृद्धि का प्रमुख साधन है। क्रमबद्ध एवं सही ज्ञान ही व्यक्ति को हित-अहित की जानकारी कराता है। अत: ज्ञान बढ़ाने एवं सुसंस्कार पाने हेतु आप स्वयं भी परीक्षा दें तथा अन्य भाई-बहनों को भी परीक्षा में भाग लेने की प्रभावी प्रेरणा कर धर्म दलाली का लाभ प्राप्त करें।
2. कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र नया प्रारम्भ किया जा सकता है।
3. परीक्षा से सम्बन्धित आवेदन-पत्र एवं पुस्तकें शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।
4. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार व मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।
5. परीक्षार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी तथा गुजराती तीनों भाषाओं में प्रकाशित हैं।
6. परीक्षा में प्रश्नों के उत्तर हिन्दी, अंग्रेजी तथा गुजराती इन तीनों में से किसी भी भाषा में लिखे जा सकते हैं।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- अशोक चोरडिया, संयोजक-94141-29162, नवरतन गिड़िया, सचिव-94141-00759, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-93515-89694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर-0291-2630490, फैक्स- 2636763, **Website : jainratnaboard.com, E-mail: shikshanboard jodhpur@gmail.com**

-नवरतन गिडिया, सचिव

बैंगलुरु में मुमुक्षु श्री कल्पेशजी कवाड़ का भव्य अभिनन्दन

रविवार 01 जनवरी, 2017 को नव वर्ष की शुभ वेला पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (कर्नाटक) बैंगलुरू के तत्त्वावधान में मुमुक्षु श्री कल्पेशजी कवाड़ का अभिनन्दन समारोह शूले जैन स्थानक में बड़ी भव्यता से रखा गया। मुमुक्षु श्री कल्पेशजी कवाड़, वीर पिता श्री अशोककुमारजी कवाड़, वीर माता श्रीमती उषादेवीजी कवाड़ का फूलों की नगरी बैंगलुरू महानगर में भव्य अभिनन्दन किया गया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (कर्नाटक) बैंगलुरू, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ट्रस्ट (कर्नाटक) बैंगलुरू, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल (कर्नाटक) बैंगलुरू, श्री जैन रत्न युवक परिषद् (कर्नाटक) बैंगलुरू के संयुक्त तत्वावधान में यह मुमुक्षु-अभिनन्दन एवं वीर माता-पिता का भावभीना स्वागत अभिनन्दन किया गया।

इस प्रसंग पर शूले श्री संघ, निमाज श्री संघ, श्रीरामपुरम् श्री संघ, लक्ष्मीनारायणपुरम् श्री संघ, शांतिनगर श्री संघ, विजयनगर श्री संघ, जयनगर श्री संघ, विल्सनगार्डन श्री संघ, पीपाड़ जैन संघ, कर्नाटक जैन कॉन्फ्रेन्स, समरथ जैन श्रावक संघ, विजयनगर-वसवनगुड़ी- हनुमंतनगर मित्र मण्डल, सुधर्मा श्रावक संघ, जयमल श्रावक संघ, श्री

मरुधरकेसरी जैन गुरु सेवा समिति आदि द्वारा स्वागत किया गया व बधाइयाँ प्राप्त हुई। *-गौतमचन्द ओस्तवाल, मंत्री*

चेन्नई में विवाह भोजों का आयोजन दिन में

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में तथा श्री विमलचन्दजी सुराणा के संयोजन में रात्रिभोजन त्याग समिति के सद्प्रयासों से इस वर्ष अग्रलिखित श्रावकों ने अपने यहाँ हो रहे शुभविवाह के मंगल प्रसंगों पर प्रीतिभोज दिन में आयोजित किये- 1. श्री सोहनलालजी प्रेमचन्दजी हुण्डीवाल, 2. श्री दुलीचन्दजी अरुणकुमारजी बाघमार, 3. श्री जी. गणपतराजजी बाघामर, 4. श्री शांतिलालजी पदमचंदजी सेठिया, 5. श्री विजयराजजी चौधरी, 6. श्री रूपराजजी राजेन्द्रजी सेठिया, 7. श्री राजेन्द्रकुमारजी चौधरी, 8. श्री प्रसन्नचंदजी पदमचंदजी कवाड़, 9. श्री मनोजकुमारजी बाघमार, 10. श्री पारसमलजी नरेन्द्रकुमारजी कोठारी (दोनों सुपुत्रों के प्रीतिभोज दिन में आयोजित किये।), 11. श्री बी. नवरतनमलजी बाघमार, 12. श्री विमलचंदजी सुराणा (सुपुत्र नवीन के शुभ विवाह पर), 13. श्री प्रेमचंदजी लोढ़ा, 14. श्री विमलचन्दजी सुराणा (सुपुत्री नेहा के शुभविवाह पर), 15. श्री सुरेशचन्दजी सुराणा, 16. श्री पन्नालालजी महेन्द्रकुमारजी कोठारी आदि।

दिन में प्रीतिभोज आयोजित करने वाले सभी श्रावकों का संघ की ओर से अभिनन्दन पत्र भेंट कर शाल व माला द्वारा संघ के पदाधिकारीगण एवं कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा स्वागत किया गया। रात्रिभोजन त्याग समिति के संयोजक श्री विमलचन्दजी सुराणा ने अपने सुपुत्र व अपनी सुपुत्री दोनों के शुभविवाह के प्रीतिभोज दिन में आयोजित कर एक अनुपम आदर्श प्रस्तुत किया। *-आर. नरेन्द्र कांकरिया, प्रचार-प्रसार सचिव-098411-48978*

संथारापूर्वक दिवंगत साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका को श्रद्धांजलि

जयपुर- साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के संथारापूर्वक देवलोकगमन पर गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. एवं महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. दोनों के सान्निध्य में महावीर नगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में अनेक वक्ताओं ने, विशेषतः महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. ने पूज्या गुरुणी जी के जीवन व गुणों पर प्रकाश डाला। साध्वीप्रमुखा के जीवन में घटित अनेक संस्मरणों का उल्लेख करते हुए उन्हें इस युग की महान् साधिका बताया।

इसी प्रकार लालभवन में भी आचार्य विजयराजजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती महासती श्री वसुमतिजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में संघ द्वारा गुणानुवाद सभा रखी गई। महासतीजी ने बहुत ही मार्मिक शब्दों में अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। संघमंत्री श्री विमलचन्दजी डागा तथा अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। *-सुरेशचन्द कोठारी, संयुक्तमंत्री-लालभवन, जयपुर*

आचार्य विजयरत्नसुन्दर सूरीश्वर को पद्मभूषण

विख्यात जैन संत आचार्य विजयरत्नसुन्दर सूरीश्वरजी को पद्मभूषण अलंकरण से सम्मानित किया जायेगा। 68 वें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर भारत सरकार ने पद्म पुरस्कारों की घोषणा की, उनमें आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरीश्वरजी महाराज को भी यह सम्मान प्रदान किए जाने की घोषणा की गई। प्रभावशाली प्रवचनकार आचार्यश्री ने अब तक तीन सौ ग्यारह पुस्तकें लिखी हैं। इसके लिए उनका नाम विश्व कीर्तिमान की स्वर्ण-पुस्तक (गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड) में भी दर्ज हुआ है। उनके प्रवचन और लेखन में पारिवारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के सम्मान की जीवन्त प्रेरणाएँ हैं। गुजराती में लिखित दौ सौ पिचौतहर (275) पुस्तकों के अलावा भी आचार्यश्री के साहित्य का हिन्दी, मराठी, उर्दू, तमिल, अंग्रेजी, फ्रेंच आदि भाषाओं में अनुवाद भी हुए हैं। उल्लेखनीय है कि 10 जनवरी 2016 मुम्बई में आयोजित हुए साहित्य सत्कार समारोह में आचार्यश्री द्वारा लिखित

पुस्तक 'मेरा भारत महान् भारत' का लोकार्पण प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ था।

आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान 2017 तथा संघ द्वारा प्रदत्त अन्य सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

आचार्य हस्ती-स्मृति सम्मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष जैन आगम, जैन धर्म-दर्शन, कला एवं संस्कृति तथा जैन जीवन-पद्धति के क्षेत्र में लेखन, शोध तथा जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान करने वाले विशिष्ट विद्वान् को 'आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान' से सम्मानित किया जाता है। इस सम्मान हेतु लेखकों से सम्मान योग्य कृति की चार प्रतियाँ 30 जून 2017 तक आमन्त्रित हैं। उक्त तिथि के पश्चात् प्राप्त प्रविष्टियाँ सम्मिलित नहीं की जाएगी। सम्मान हेतु नियम इस प्रकार हैं-

1. विद्वान् की एक कृति अथवा उनके सम्पूर्ण योगदान के आधार पर भी सम्मानित किया जा सकेगा।
2. सम्मान हेतु प्रकाशित अथवा अप्रकाशित (टंकित) कृति की चार प्रतियाँ प्रेषित की जानी चाहिए।
3. प्रकाशित कृति सन् 2013 से पूर्व की नहीं होनी चाहिए।
4. अन्य संस्थाओं द्वारा पूर्व में पुरस्कृत कृति पर यह सम्मान नहीं दिया जाएगा।
5. कृति का विशेषज्ञ विद्वानों से मूल्यांकन कराया जाएगा।
6. कृति के मौलिक एवं पूर्व में पुरस्कृत न होने का प्रमाण-पत्र संलग्न करना होगा।
7. सम्मान के रूप में 51 हजार की राशि प्रशस्ति-पत्र के साथ प्रदान की जाती है।

आवदेन-पत्र कृति की चार प्रतियों के साथ अपने बायोडेटा एवं सम्पर्क सूत्र सहित संघ कार्यालय के पते पर प्रेषित करें।

युवा प्रतिभा- शोध साधना-सेवा-सम्मान (45 वर्ष की आयु तक)

1. **प्रशासनिक चयन-** राज्यस्तरीय व केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन।
2. **प्रोफेशनल विशिष्ट-** डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, कम्पनी सचिव व अन्य प्रोफेशनल कोर्स में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।
3. **शोध-** वैज्ञानिक खोज (अहिंसा व जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली)
4. **संघ-सेवा-** चतुर्विध संघ-सेवा, विशेष धार्मिक अध्ययन, धार्मिक लेखन इत्यादि।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान (एक श्राविका, एक युवा, एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)

कम से कम 10 वर्ष स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधन) के रूप में सक्रिय सेवा। (युवा स्वाध्यायी के लिए आवश्यक होने पर सेवा वर्ष में छूट दी जा सकेगी।)

गुणी-अभिनन्दन-

1. **तपस्या-** कम से कम पाँच वर्ष तक एकान्तर, दीर्घ तपस्या, दीर्घ संवर-साधना या अन्य विशिष्ट तप।
2. **अन्य-** सेवा, साधना, संघ उन्नयन में योगदान, चतुर्विध संघ-सेवा, विद्वान्।

न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा-शिक्षा-प्रतिभा सम्मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर संघ-संरक्षक न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती उगमकंवरजी लोढ़ा की पावन प्रेरणा से संघ द्वारा प्रदत्त युवा शिक्षा-प्रतिभा

सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित हैं। इसके अन्तर्गत उन छात्र-छात्राओं की प्रविष्टियाँ स्वीकार की जायेंगी, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की हो। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, विश्वविद्यालय आदि की परीक्षाओं में वरीयता सूची में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले श्रेष्ठ छात्र को 21 हजार रुपये की राशि से सम्मानित किया जाएगा। प्रतियोगी एवं प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों में उच्च वरीयता प्राप्त छात्र-छात्रा को भी सम्मानित किया जा सकता है। इच्छुक अभ्यर्थी आवेदन करते समय अंकतालिका की सत्यापित प्रतिलिपि संलग्न करें।

डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की पूर्व महामंत्री डॉ. बिमला जी भण्डारी की पुण्य स्मृति में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में भण्डारी परिवार की ओर से जैन धर्म-दर्शन से सम्बद्ध विषय पर पी-एच्.डी एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्त करने वाले शोधकर्त्ताओं को 'डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा। इस हेतु आवश्यक बिन्दु इस प्रकार हैं-

1. जिन शोधकर्त्ताओं ने 18 फरवरी 2016 से 17 फरवरी 2017 की अवधि में पी-एच्.डी/डी.लिट् उपाधि प्राप्त की है, उनमें से 5 पी-एच्.डी. उपाधिधारकों तथा 2 डी.लिट् उपाधिधारकों को क्रमशः 11 हजार रुपये एवं 15 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि से सम्मानित किया जाएगा।
2. 18 फरवरी 2016 से 17 फरवरी 2017 के मध्य जो भी पी-एच्.डी. एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्तकर्त्ता होंगे, वे इस सम्मान हेतु आवेदन कर सकते हैं। आवेदन-पत्र के साथ पी-एच्.डी./डी. लिट् उपाधि के समुचित सर्टिफिकेट एवं शोधकार्य का सारांश संलग्न करना होगा।
3. प्राप्त आवेदन-पत्रों का निर्णायक समिति द्वारा मूल्यांकन कर सम्मान हेतु अनुशंसा की जाएगी।
4. सम्मान राशि 'श्री सरदारमल भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर' के सौजन्य से प्रदान की जाएगी।

उक्त सभी सम्मानों हेतु अपनी प्रविष्टियां संघ के निम्नांकित पते पर संबंधित सम्मान का नाम लिखते हुए 30 जून 2017 से पूर्व प्रेषित करें। *-पूरणराज अबानी, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. 0291-2636763*

संक्षिप्त समाचार

जोधपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा 13 से 17 दिसम्बर 2016 तक जैनागम स्तोक वारिधि पाठ्यक्रम शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम से सप्तम कक्षा की तैयारी कराई गई। शिविर में 55 शिविरार्थियों ने भाग लिया। अध्यापकों एवं संत-सतियों का सुन्दर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

-श्रीमती सुशीला गुलेच्छा, अध्यक्ष

हैदराबाद- आचार्य हस्ती फाउण्डेशन की ओर से 08 जनवरी को श्री शान्तिलालजी गुन्देचा को षष्ठ आचार्य हस्ती सेवा-सम्मान प्रदान किया गया। जैन सेवा संघ के प्रांगण में एक विशिष्ट सम्मान समारोह में बड़े उत्साह के साथ स्वाध्यायी प्रेमी, सरलमना एवं धार्मिक शिविरों के प्रेरक श्री गुन्देचा को इस सम्मान से हैदराबाद की संस्था ने सम्मानित किया। करुणा इण्टरनेशनल के राज्य प्रभारी श्रीपाल देशलहरा के अनुसार 22 जनवरी को पशु कल्याण समाज सेवियों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें अनेक गणमान्य महानुभावों ने भाग लिया। 29 जनवरी को भारतीय जैन संघटना की कोरा शाखा का गठन किया गया। *-श्रीपाल देशलहरा*

जोधपुर- श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी जोधपुर द्वारा स्व. डॉ. बिमलाजी भण्डारी की पुण्य स्मृति में 17 फरवरी,

2017 को निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर आयोजित किया जायेगा। शिविर में हर्निया, मस्सा, भगन्दर, एपेंडिक्स, फिस्टुला आदि के ऑपरेशन किये जायेंगे। शिविर में डॉ. राम गोयल-जोधपुर, डॉ. सौरभ गोयल-अहमदाबाद, डॉ. रमेश सेठिया-जोधपुर आदि अनुभवी चिकित्सकों की सेवाएँ प्राप्त होंगी। *-पूरणराज अबानी, अध्यक्ष*

सूरत- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा ने चातुर्मास पूर्ण कर जबसे विहार किया है तब से सूरत के श्रावक-श्राविका निरन्तर विहार सेवा का लाभ ले रहे हैं। 12 जनवरी से 15 जनवरी 2017 तक सूरत का द्वितीय वार्षिक संघ स्नेह मिलन महाबलेश्वर (महा.) में आयोजित किया गया, जिसमें 131 सदस्यों ने भाग लिया। वहाँ पर प्रतिदिन सामूहिक प्रार्थना एवं सामायिक का कार्यक्रम रखा गया तथा संघ को आगे बढ़ाने के सम्बन्ध में विचारों का आदान-प्रदान किया गया। *-सुनील नाहर*

विल्लुप्पुरम्- श्री एस.एस. जैन संघ की ओर से 26 दिसम्बर 2016 को मुमुक्षु सुश्री मधुबालाजी कवाड़ का अभिनन्दन किया गया। संघ के अध्यक्ष, मंत्री, पदाधिकारी, युवक मण्डल के सदस्यगण, महिलामण्डल, बहूमण्डल आदि सभी की उपस्थिति रही। इस अवसर पर कइयों ने त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए। *-च. ललितकुमार कातरेला, मंत्री*

पाली-मारवाड़- तपस्वी श्राविकारत्न श्रीमती शांतिदेवीजी भण्डारी धर्मसहायिका श्री निहालचन्दजी भण्डारी द्वारा 14 वर्ष 2 माह से लगातर एकाशन तप किया जा रहा है। उन्होंने **5151 एकाशन तप** लगातार किए हैं। उनका कहना है कि तप में असीम शक्ति है। उन्होंने दो वर्षीतप भी सम्पन्न किए हैं। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों ने श्री भण्डारी साहब के निवास स्थान पर जाकर श्रीमती शान्तिदेवी का शॉल ओढा कर तथा अभिनन्दन पत्र प्रदान कर बहुमान किया। *-चैनराज मेहता, मंत्री*

जोधपुर- सुश्रावक श्री रमनजी धारीवाल सुपुत्र श्री जौहरीमलजी धारीवाल की प्रथम पुण्यतिथि पर 29 जनवरी 2017 को माहेश्वरी भवन में लगभग 400 जनों ने रक्तदान किया। *-धनपत सेठिया*

बधाई

बालोतरा- समाजसेवी श्री ओमप्रकाशजी बाँठिया (सी.ए.) प्रान्तीय सचिव, रोटरी इण्टरनेशनल को जिला प्रशासन

बाड़मेर द्वारा 26 जनवरी, 2017 को गणतंत्र दिवस समारोह में राजस्थान सरकार के राजस्व मंत्री श्री अमराराम चौधरी, जिला कलेक्टर श्री सुधीर कुमार शर्मा द्वारा शिक्षा चिकित्सा, पर्यावरण, पशुसेवा एवं सामुदायिक सेवा के लिये 'प्रशस्ति-पत्र' से सम्मानित किया गया। आप महावीर इण्टरनेशनल के अध्यक्ष एवं जोन चैयरमेन तथा अणुव्रत महासमिति के पूर्व राष्ट्रीय संगठन मंत्री रह चुके हैं। सम्प्रति स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के राष्ट्रीय संयोजक हैं तथा अनेक संस्थाओं में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

उदयपुर- मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय ने ममता जैन धर्मपत्नी श्री विश्वजीतजी जैन को जीवाजीवभिगम सूत्र के विशेष सन्दर्भ में स्थावर जीवों की अवधारणा का वैज्ञानिक विश्लेषण विषय पर पी-एच्.डी. की उपाधि प्रदान की है। उन्होंने अपना शोधकार्य जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग के प्रोफेसर जिनेन्द्र जैन के निर्देशन में पूर्ण किया।

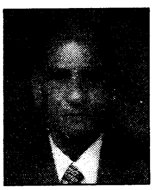

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ समाजसेवी श्री अर्जुनराजजी सुपुत्र स्व. श्री गुलराजजी मेहता को 68 वें गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 2017 की पूर्व संध्या पर आयोजित कार्यक्रम में राजस्थान के राज्यपाल महामहिम श्री कल्याणसिंहजी द्वारा समाजसेवा में उल्लेखनीय सेवाएँ देने के लिए राज्यस्तरीय प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया गया। पेंशनर दिवस 17 दिसम्बर 2016 को राजस्थान उच्च

न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री जसराजजी चौपड़ा द्वारा भी आपको प्रशस्ति-पत्र से जयपुर में सम्मानित किया गया।

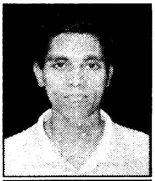

अलीगढ़ (टोंक)- श्री सुनीतकुमार जैन को विवेकानन्द जयंती के अवसर पर आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह-2017 में विवेकानन्द शिक्षा समिति, टोंक की ओर से लेखन व पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। आप विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक विषयों से जुड़े लेखन कार्य में संलग्न हैं।

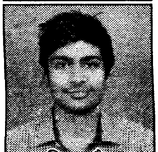

विनय जैन

इन्दौर- श्री विनय जैन सुपुत्र श्री गौतमचन्दजी जैन एवं सुपौत्र स्व. श्री मथुरालालजी जैन 'देवली वाले' ने कम्प्यूटर इंजीनियरिंग की परीक्षा विशेष योग्यता (मुम्बई) से उत्तीर्ण की तथा आपकी HEPTIK INFOTECH in Corporation में ANDROID टेक्लोलोजी में सिस्टम इंजीनियर के पद पर नियुक्ति हुई है।

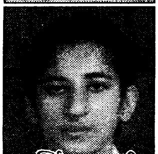

पार्श्विका भण्डारी

जोधपुर- सुश्री पार्श्विका भण्डारी सुपुत्री श्रीमती मधुजी-प्रदीपचन्दजी भण्डारी ने दिसम्बर-2016 में दंत चिकित्सक (BDS) की परीक्षा 6th रैंक से उत्तीर्ण की है। इससे पूर्व सीनियर सैकेण्डरी परीक्षा 79 प्रतिशत से तथा राजस्थान प्री मेडिकल टेस्ट 94 प्रतिशत से उत्तीर्ण किए हैं। आपको सामायिक व प्रतिक्रमण कण्ठस्थ है।

शिवांगी एम. चौपड़ा

जोधपुर- सुश्री शिवांगी एम. चौपड़ा सुपुत्री श्री महीपतराज-अन्नपूर्णाजी चौपड़ा एवं सुपौत्री श्री नरपतराजजी-संतोषदेवीजी चौपड़ा ने चार्टेड एकाउण्टेंट (CA) परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने CBSE की 10th , 12th बोर्ड एवं C P T में AIR प्राप्त की। आप सदैव ही धार्मिक क्षेत्र में प्रयत्नशील एवं रुचिशील छात्रा रही है।

शानिल रांका

जोधपुर- श्री शानिल रांका सुपुत्र श्रीमती सुनीता-सन्तोषजी रांका एवं सुपौत्र श्रीमती शान्तिदेवीजी-प्रेमचन्दजी रांका का CA, CS, ICWA करने के बाद "Earnest and Younge (E&Y) बैंगलोर में Senior Associate पद पर चयन हुआ है।

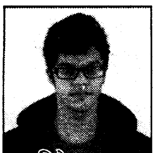

अभिषेक सुराणा

जोधपुर- श्री अभिषेकजी सुराणा सुपुत्र श्रीमती मंजूजी-शेखरजी सुराणा एवं सुपौत्र स्व. श्रीमती ज्ञानकंवरजी-श्री उत्तमचन्दजी सुराणा ने 23 वर्ष की उम्र में सी.ए. (CA) की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की है। धार्मिक ज्ञान में भी आप सदैव आगे रहते हैं। आपके पिता श्री शेखरजी सुराणा श्री जैन रत्न युवक परिषद् के सचिव पद पर भी कार्यरत थे।

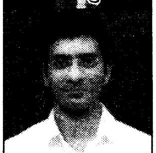

जय बाफना

जोधपुर- श्री जय बाफना सुपुत्र श्रीमती मीनाजी-दिलीपजी बाफना एवं सुपौत्र श्रीमती मोहिनीदेवीजी-कुशलचन्दजी बाफना ने सी.ए. (CA) की परीक्षा उत्तीर्ण की।

इन्दौर- श्री नीरज जैन सुपुत्र श्री कन्हैयालालजी जैन एवं सुपौत्र श्री हरकचन्दजी जैन ने अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए सी.ए. (CA) फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

श्रद्धाञ्जलि

प्राकृत भाषा एवं जैन विद्या के तीन विद्वानों का देहावसान

(1) प्राकृत, संस्कृत तथा भाषा विज्ञान के अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त मूर्धन्य मनीषी **प्रो. सत्यरंजनजी बैनर्जी** का 10 दिसम्बर 2016 को कोलकाता में निधन हो गया। आप काफी दिनों से अस्वस्थ थे। आपने कलकत्ता

विश्वविद्यालय में अध्यापन किया तथा जैन विश्व भारती, लाडनूँ एवं B.L. Institute of Indology, Delhi में भी प्राकृत एवं जैन विद्या की अध्ययनशालाओं में भी लम्बे समय तक प्राकृत भाषा तथा आगमों का अध्यापन एवं प्रशिक्षण दिया। प्राकृत भाषा के शोध एवं सम्पादन के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर प्रदान कराने में आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

(2) प्राकृत भाषा एवं जैनागम के वरिष्ठ मनीषी **प्रो. गोकुलचन्दजी जैन** पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य-प्राकृत एवं जैनागम विभाग एवं पूर्व संकाय प्रमुख श्रमण विद्या संकाय, सम्पूर्णानन्द संस्कत विश्वविद्यालय, वाराणसी का 82 वर्ष की अवस्था में 04 नवम्बर 2016 को देहान्त हो गया। आपने अनेक वर्षों तक भारतीय ज्ञानपीठ, काशी तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में जैनदर्शन विभाग में अनेक वर्षों तक कार्य किया एवं अनेक ग्रंथों का सम्पादन किया। वर्तमान में आप इन्दौर में रहकर अध्ययन, अध्यापन कर रहे थे।

(3) स्वतंत्रता संग्राम में जैनों के अवदान पर असाधारण शोध करने वाले सुप्रसिद्ध विद्वान् **डॉ. कपूरचन्दजी जैन-खतौली** का 22 जुलाई 2016 को देवलोकगमन हो गया। 'प्राकृत एवं जैन विद्या शोध सन्दर्भ' उनकी महत्त्वपूर्ण कृतियों में से एक है। कुन्दकुन्द महाविद्यालय, खतौली में संस्कृत-विभाग में अध्यक्ष पद पर रह कर उन्होंने जैन विद्या एवं प्राकृत के क्षेत्र में अनेक उपलब्धियाँ अर्जित कीं। *-डॉ. अनेकान्त जैन, दिल्ली*

बैंगलोर- धर्मसाधिका श्रीमती प्रेमकुमारीजी मुरडिया धर्मपत्नी स्व. श्री मिट्ठालालजी मुरिडया (कानोड़-

राजस्थान) का 07 जनवरी, 2017 को 80 वर्ष की उम्र में संथारा संलेखना सहित देहावसान हो गया। बचपन से ही आपकी धर्म के प्रति अच्छी जागरूकता होने के कारण इस उम्र में भी आपके हृदय में स्वाध्याय के प्रति अच्छी ललक थी। आप सभी साधु-संतों के दर्शन, प्रवचन एवं सेवाओं का लाभ लेती रहीं। आप प्रतिदिन सामायिक करती थीं। जलगांव (महा.) में विराजित आर्यरक्षितमुनिजी की आप सांसारिक बहिन थीं।

बालोतरा- सुश्राविका श्रीमती कौशल्याजी सालेचा का 14 जनवरी 2017 को असामयिक परलोकगमन हो गया। भारत की प्रतिष्ठित संस्था भारतीय जैन संघटना की आप ट्रेनर थीं। 'युवतियों का सक्षमीकरण' विषय पर आधारित कई शिविरों में आपने सैकड़ों बालिकाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के उपाध्यक्ष पद का आप बखूबी निर्वहन कर रही थीं। बालोतरा में संत-सतीवृन्द के पधारने पर आप धर्म-ध्यान व सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहती थीं। इसी का सुफल है कि आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा संचालित गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों से निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है।

सिकन्द्राबाद- जैन समाज के सजग प्रहरी श्री हस्तीमलजी मुणोत का 92 वर्ष की वय में 23 जनवरी, 2017 को

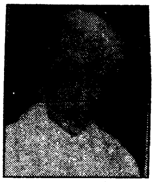

स्वर्गारोहण हो गया। आप एक प्रतिष्ठित व्यापारी होने के साथ धर्म में रुचि रखने वाले श्रावक भी थे। आप कर्नाटक गजकेसरी श्री गणेशीलालजी म.सा. के अनन्य भक्त थे। आपने जीवन्तपर्यन्त खादी को अपनाया एवं पैर में चप्पल भी धारण नहीं करते थे। उन्होंने निरन्तर 49 वर्ष तक एकान्तर तप किया। संवत्सरी एकीकरण के लिए आपने भरसक प्रयास किए। आपने विश्व जैन परिषद् का गठन किया तथा तीन वर्ष तक ऑल इण्डिया जैन क्रॉन्फेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। 25 जनवरी को श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ-सिकन्द्राबाद के तत्त्वावधान में श्रद्धांजलि सभा भी आयोजित की गई, जिसमें आपके गुणस्मरण किए गए। *-डायचन्द जैन, महामंत्री*

चेन्नई- सुश्रावक श्री शांतिलालजी कोठारी सुपुत्र श्री पुखराजजी कोठारी (चावण्डिया वाले) का 62 वर्ष की आयु में

स्वर्गवास हो गया। आप सरल स्वभावी, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं समाजसेवी थे। चेन्नई में चावण्डिया जैन संघ के आप 20 वर्षों तक कोषाध्यक्ष रहे। आप निर्भीक प्रवृत्ति के श्रावक थे। आपने आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मुखारविन्द से 20 वर्ष पूर्व शीलव्रत के प्रत्याख्यान लिए थे। आपके अन्य कई प्रत्याख्यान भी लिए हुए थे।

जोधपुर- संघनिष्ठ, धर्मशीला सुश्राविका श्रीमती उमरावकंवरजी सुराणा धर्मपत्नी स्व.श्री कपूरचन्दजी सुराणा का

87 वर्ष की आयु में 12 जनवरी, 2017 को परलोकगमन हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली श्राविका थीं। आपके सुपुत्र युवारत्न श्री संजयजी सुराणा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र में कोषाध्यक्ष पद का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। संत-सतीवृन्द सेवा, संघ-सेवा, समाज-सेवा आदि प्रवृत्तियों में सुराणा परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहता है।

हैदराबाद- संघसेवी श्रीमती प्रेमलतादेवी धर्मपत्नी श्री जसराजजी देवड़ा धोका का 11 जनवरी 2017 को स्वर्गगमन हो गया। जिनके निधन पर श्रद्धांजलि सभा एवं प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। अनेक संस्थाओं के द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा वहाँ विराजित महासती विजय ज्योतिश्रीजी, विश्वज्योतिश्रीजी के द्वारा मंगलपाठ दिया गया।

उदयपुर- सुश्रावक श्री लक्ष्मणसिंहजी मेहता का 22 जनवरी, 2017 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व मंत्री स्व. श्री चन्द्रराजजी सिंघवी के आप दामाद थे। श्री चन्द्रराजजी सिंघवी की महनीय सेवाएँ मण्डल को प्राप्त हुई।

अजमेर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री जतनमलजी लोढ़ा व उनकी धर्मसहायिका सुश्राविका श्रीमती चन्द्रकलाजी लोढ़ा का

स्वर्गवास 19 नवम्बर 2016 को एक ही दिन हो गया। आपका परिवार आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. की विशेष भक्ति करता रहा है। आप श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सक्रिय सदस्य रहे तथा श्राविकाजी नियमित तपस्या करती थीं। आपके तीन पुत्र श्री अशोकजी, श्री वीरेन्द्रजी व अनिलजी साधु-संतों की सेवा करते हैं।

इचलकरंजी- सुश्रावक श्री सायरचन्दजी कवाड़ (पाली वाले) का 16 दिसम्बर 2016 को स्वर्गवास हो गया। आपने विगत 12 वर्षों में गुरुदेव की सेवा में रहकर पर्वाधिराज पर्युषण में साधना-आराधना की थी। इस वर्ष निमाज में पूरी चातुर्मास अवधि में रहकर पावन चरण सन्निधि का लाभ लिया। आप धर्मनिष्ठ संघनिष्ठ कवाड़ परिवार छोड़कर गए हैं।

पचाला- सुश्रावक श्री चिरंजीलालजी जैन सुपुत्र श्री कल्याणमलजी जैन का 15 जनवरी 2017 को 86 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप दृढ़धर्मी, संघनिष्ठ, गुरुभक्त एवं व्रती श्रावक थे। आप सहज, सरल, स्वभाव के धनी थे। नित्य धर्म स्थानक में सामायिक करना एवं धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करना आपकी दिनचर्या में में शामिल था।

विजयनगर- सुश्रावक श्री बच्छराजजी सुपुत्र श्री दीपचन्दजी बाफना (शेरगढ़ निवासी) का 07 जनवरी, 2017 को स्वर्गगमन हो गया। आप सरल स्वभावी, मधुरभाषी, सेवाभावी व स्वाध्याय प्रकृति के थे। आपका चारित्र निष्ठ पूज्य संत-सतियों के प्रति दृढ़ श्रद्धा थी। आपने अपने नेत्रदान किए।

इन्दौर- सुश्राविका श्रीमती भंवरीदेवीजी धर्मसहायिका श्री जीतमलजी (पीपलवाड़ा वाले) का देहान्त हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति की थीं तथा आपने कई तपस्याएँ भी की। संत-सतियों की गोचरी कराने में आप सदैव अग्रणी थीं।

जोधपुर- भक्तिप्रिया सुश्राविका श्रीमती चिमनकंवरजी मेहता धर्मपत्नी श्री ज्ञानचन्दजी मेहता का 90 वर्ष की आयु

में 14 जनवरी 2017 को स्वर्गगमन हो गया। राईकाबाग क्षेत्र में पधारने वाले संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण में आप हमेशा अग्रणी रहती थीं। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्‌गुणों से युक्त था। नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली श्राविका ने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। आप साध्वी श्री इचरजकंवरजी म.सा. की सांसारिक ननन्द थीं। मेहता परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा, स्वधर्मी-वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में सदैव समर्पित रहा है। श्री महावीरचन्दजी मेहता नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले श्रावकरत्न हैं। आपकी सक्रिय सेवाएँ संघ को नियमित रूप से प्राप्त होती रहती हैं।

चेन्नई- तपस्वी सुश्रावक श्री तोलारामजी मिन्नी सुपुत्र स्व. श्री जैवन्तमलजी मिन्नी (भीनासर वाले) का 06 जनवरी

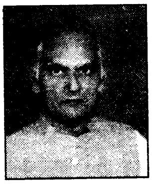

2017 को 82 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। नित्य नवकारसी, ज्ञान, ध्यान, सामायिक आदि आपके जीवन चर्या के अभिन्न अंग थे। मासक्षपण, 21, 15, 11, 8 आदि तपस्याओं से आपने जीवन को साधा। बीकानेर डिस्ट्रिक्ट जैन एसोसियेशन के अध्यक्ष एवं श्री साधुमार्गी जैन संघ चेन्नई के विभिन्न पदों पर रहते हुए निःस्वार्थ भाव से आपने समाज की सेवा की। भगवान महावीर अहिंसा प्रचार संघ, चेन्नई के कर्मठ कार्यकर्ता रहे। आपके मरणोपरान्त नेत्रदान किए गए।

फूलियाकलाँ- सुश्रावक श्री तेजमलजी लोढ़ा सुपुत्र श्री भूरालालजी लोढ़ा का 31 दिसम्बर 2016 को 85 वर्ष की

उम्र में स्वर्गवास हो गया। आपके जीवन में दयालुता, सहजता व सरलता पुष्प में सुवास की तरह थी। संत-सतीवृन्द की सेवा भक्ति में भी वे सदैव तत्पर रहते थे। फूलियाकलाँ ग्राम में लगातार 17 वर्ष तक सरपंच पद पर रहते हुए आपने ग्राम, संघ, समाज एवं धर्म के प्रति अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन किया। *-चन्द्रसिंह लोढ़ा*

सिकन्द्राबाद- वयोवृद्ध सुश्राविका श्रीमती प्यारीबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री मिश्रीलालजी गुगलिया (राणावास-पाली

निवासी) का 94 वर्ष की आयु में 07 जनवरी 2017 को स्वर्गवास हो गया। आप सरलहृदय, धर्मनिष्ठ, देव-गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धाशील श्राविका थीं। आप नियमित सामायिक, उपवास, आयंबिल तेले आदि की तपस्या करती थीं। सिकन्द्राबाद संघ के अंतर्गत आयंबिल की व्यवस्था कई वर्षों से आप अन्यों के साथ सम्भालती थीं। संत-सतियों के प्रति आपकी गहरी श्रद्धा-भक्ति थी। आप साध्वी श्री सज्जनकंवरजी म.सा. की सांसारिक छोटी बहन थीं। मरणोपरान्त आपके नेत्रदान किये गये।

-डायचन्द दक, महामंत्री

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

धोवन पानी हेतु निःशुल्क राख उपलब्ध

सम्पूर्ण भारत में कहीं भी धोवन पानी हेतु राख कोरियर/डाक द्वारा निःशुल्क भेजी जाती है। राख मंगवाने के लिए अपना नाम, डाक का पता, पिनकोड़ सहित मोबइल नं. 077427-31886 पर एस.एम.एस. करें या अक्षय जैन-094797-05060 पर सम्पर्क करें।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मण्डल से प्रकाशित सत्साहित्य की 20 वर्षीय सदस्यता हेतु प्रत्येक

787 श्री गौतमचन्दजी छाजेड़, बेंगलोर (कर्नाटक)

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15777 से 15781 तक 5 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

11000/- श्री सोहनलालजी, बुधमलजी, सम्पतराजजी, राजनजी बाघमार, मैसूर, श्रीमती बिंदुबाई जी के 15, अभिषेकजी के 9, पूजाजी के 9, आशादेवीजी के 8, एवं रोहितजी के 9 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होनेकी खुशी में।

11000/- श्री निहालचन्दजी, गुलाबचन्दजी भण्डारी एवं परिवार, पाली-मारवाड़, तपस्वी श्राविका श्रीमती शान्तिदेवीजी भण्डारी द्वारा लगातार 5151 एकाशन की तपस्या करने व श्री निहालचन्दजी भण्डारी एवं श्रीमती शान्तिदेवीजी भण्डारी के विवाह की 60वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में।

11000/- श्री कपूरचन्दजी, विबुधेशकुमारजी जैन, जयपुर, अपने सुपौत्र श्री जयन्त जी जैन सुपुत्र श्री विबुधेशकुमारजी जैन के कौग्नीजेन्ट कम्पनी में चयन हो जाने के उपलक्ष्य में।

5100/- श्री रांव बरलोटा मुथा परिवार, मैसूर, सौ.कां. शिक्षाजी संग चि. अजीतजी के शुभविवाहोत्सव के उपलक्ष्य में।

5100/- श्री तेजराजजी प्रकाशचंदजी कोठारी, रणसीगांव वाले, पल्लावरम, चेन्नई।

3100/- श्रीमती सौभाग्यकँवरजी, एम.पुष्पाजी एवं ललितकुमारजी, ऋषभकुमारजी, मनीषकुमारजी गोलेच्छा एवं समस्त परिवार, ब्यावर, श्रीयुत महेन्द्रकुमारजी गोलेच्छा का 05 दिसम्बर 2016 को स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1111/- श्री रामनारायणी, महावीर प्रसादजी जैन (डांगरवाडा), सवाईमाधोपुर, सुश्राविका श्रीमती कपूरीदेवीजी की 24 दिसम्बर 16 की पुण्य स्मृति में भेंट।

1101/- श्री प्रभुदयालजी, रमेशचन्दजी जैन (सिंगोर वाले), आलनपुर-सवाईमाधोपुर, चि. देवेन्द्र कुमारजी का शुभविवाह 18 जनवरी, 2017 को सौ.कां. दिव्याजी (सुपुत्री श्री नरेन्द्रजी जैन, चौरू वाले) के संग सुसम्पन्न होने की खुशी में।

1101/- श्री उम्मेदचन्दजी जैन, जरखोदा, सुपुत्र संदीपजी का शुभविवाह 16 जनवरी 2017 को सौ.कां. लक्ष्मीजी (सुपुत्री श्री प्रदीपजी जैन, खातौली वाले) के संग सुसम्पन्न होने की खुशी में।

1101/- श्री नेमीचन्दजी, राजेन्द्रजी, नरेन्द्रजी, कमलजी जैन 'सुनारी वाले',कोटा,चि. हर्षितजी सुपुत्र श्रीमती मधुजी-नरेन्द्रजी का शुभविवाह 23 जनवरी 2017 को सौ.कां.निकिता सुपुत्री श्रीमती मनोरमाजी-दिनेशजी इन्दौर के साथ सम्पन्न होने पर।

1100/- श्री विजय कुमारजी, प्रमिलाजी, दीक्षाजी एवं रक्षाजी जैन, जयपुर, श्री कल्याण प्रसादजी एवं श्रीमती शांतिदेवीजी जैन की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री लड्डूलालजी, गौतमचंदजी जैन, इंदौर, श्री विनय जैन पुत्र श्री गौतमचंदजी जैन की कम्प्यूटर इंजीनियरिंग के पश्चात् Heptik infotech-in corporation में System Engineer के पद पर नियुक्ति होने पर।

1100/- श्री बदरीलालजी जैन, सवाईमाधोपुर, अपने सुपौत्र श्री कपिलजी जैन श्री विनोदजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री देवेन्द्रनाथजी, श्रीमती कमलाजी, श्री लोकेन्द्रनाथजी, रितुजी, लोरीजी, आर्वीजी मोदी, जोधपुर, श्री हुक्मनाथजी मोदी एवं कृष्णाजी मोदी की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री उमरावचंदजी, शेखरचंदजी सुराणा, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री अभिषेकजी सुराणा के सी.ए. में उत्तीर्ण होने पर।

1100/- श्री राजूलालजी सुरेशचन्दजी जैन (श्यामपुरा वाले) गुलाबबाड़ी, कोटा, चिरंजीव नितेश जैन का शुभ विवाह सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती सुशीलाजी-अर्जुनराजजी मेहता, संजयजी-नीतूजी, अपूर्वजी, सुश्री टीशाजी मेहता, जोधपुर, श्री अर्जुनराजजी

मेहता को गणतंत्र दिवस-2017 पर राज्यस्तरीय समाज सेवा सम्मान से सम्मानित होने के प्रसंग पर।

1100/- श्री धर्मचन्दजी, गौतमचन्दजी, निर्मलकुमारजी, अभिनवकुमारजी जैन, निवासी पचाला, जिला-टोंक, पूज्य पिताजी श्री चिरंजीलालजी जैन की पुण्यस्मृति में भेंट।

1100/- श्री हरकचन्दजी कन्हैयालालजी जैन, रामबाग-इन्दौर, श्री नीरजजी जैन के सी.ए. फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

65410/- श्री पी.एस. सुराणा सा, चेन्नई, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से मुद्रित पुस्तक 'जय श्री शोभाचार्य' के प्रकाशन हेतु सप्रेम।

51000/- श्री चम्पालालजी, सुजीतकुमारजी, ललितकुमारजी, अमितकुमारजी मकाणा, दौड्डबालापुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से पुनः मुद्रित पुस्तक "आवश्यक सूत्र (अंग्रेजी)" के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

2100/- श्री तेजराजजी, प्रकाशचंदजी कोठारी (रणसीगांव वाले), पल्लावरम, चेन्नई।

2100/- श्री रतनलालजी रांका, सैलाना, सहयोग हेतु।

1100/- पल्लीवाल जैन यात्रा संघ, जयपुर, सहयोग हेतु।

1100/- श्री स्वरूपचंदजी सुराणा, जोधपुर, अपनी पूज्य माताजी श्रीमती किरण देवी धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरलालजी सुराणा के 06 जनवरी 2017 को प्रथम पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री बद्रीलालजी जैन, सवाईमाधोपुर, अपने सुपौत्र श्री कपिल जैन सुपुत्र श्री विनोदजी जैन के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती रतनकंवर जी सिंघवी, जोधपुर, अपने धर्मसहायक श्री रिखबचंदजी सिंघवी की तृतीय पुण्य स्मृति में।

1100/- सुश्री शिवांगी एम. चौपड़ा, जोधपुर, सी.ए. परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर को प्राप्त साभार

100000/- श्रीमती कमलादेवी दुलीचन्द बागमार चेरिटेबल ट्रस्ट, चेन्नई।

100000/- श्री दुलीचन्दजी बागमार एण्ड सन्स, चेन्नई।

30000/- श्री हर्षवर्धनजी ललवाणी, जोधपुर।

11000/- श्री राजेशजी भण्डारी, जोधपुर।

9900/- श्री आर.एस. जैन, जामनेर।

9800/- श्री ए.एस. जैन, जामनेर।

9700/- श्री आर.सी. जैन, बडगाँव।

9000/- श्री संजयजी सुराणा, जोधपुर।

9000/- श्री सुरेन्द्रजी कुम्भट, जोधपुर।

8000/- श्री अमृतलालजी बाफना, जोधपुर।

8000/- श्री अमितजी कुम्भट, जोधपुर।

7000/- श्री लालचन्दजी जैन, जोधपुर।

7000/- श्री अमरचन्दजी जैन, जोधपुर।

6100/- श्री नेमीचन्दजी जैन, भोपालगढ़।

5000/- श्री अरिहन्तजी, जोधपुर।

5000/- श्रीमती शशिजी टाटिया, जोधपुर।

4000/- श्रीमती गंगाकंवरजी ओस्तवाल, जोधपुर

4000/- श्री प्रशांतजी अबानी, जोधपुर।

3000/- श्री पंकजजी ओस्तवाल, जोधपुर।

2100/- श्री राकेशजी मेहता, जोधपुर।

2000/- श्रीमती अल्काजी सुराणा, जोधपुर।

50000/- श्री संदीपजी भाण्डावत, जोधपुर।

11000/- श्री भीखमचन्दजी गोलेछा, जोधपुर।

9900/- श्री सुशीलकुमारजी, फत्तेपुर।

9900/- श्री एस.के. जैन, धरणगाँव।

9775/- श्री कस्तूरचन्दजी, जलगाँव।

9600/- श्री सुनीलकुमारजी, भुसावल।

9000/- श्री चंचलजी कुम्भट, जोधपुर।

8200/- श्री वीरेन्द्रजी जैन, जोधपुर।

8000/- श्री अमरचन्दजी लोढ़ा, जोधपुर।

8000/- श्रीमती हीनाजी कुम्भट, जोधपुर।

7000/- श्री नवरतनजी जैन, जोधपुर।

7000/- श्री जितेन्द्रकुमारजी लोढ़ा, जोधपुर।

5500/- श्री महिपालचन्दजी भण्डारी, जोधपुर।

5000/- श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, जोधपुर।

4000/- श्री पूरणराजजी अबानी, जोधपुर।

4000/- श्री पुनवानचन्दजी ओस्तवाल, जोधपुर।

3000/- श्री संजयजी बाफना, जोधपुर।

3000/- श्री प्रवीणजी अबानी, जोधपुर।

2100/- श्री जबरचन्दजी सेठिया, जोधपुर।

2000/- श्री लोकेशजी कुम्भट, जोधपुर।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना में मुमुक्षु भाई श्री कल्पेशजी कवाड़ एवं मुमुक्षु बहिन सुश्री मधुबालाजी कवाड़ की भागवती दीक्षा की अनुमोदनार्थ प्राप्त अर्थ सहयोग।

30,600/- श्री पदमचन्दजी, किशोरकुमारजी लुंकड़, तिरूवल्लुर।
12,000/- श्रीमती पिंकीबाईजी, चेन्नई।
10,000/- श्रीमती कलाबाईजी, चेन्नई।
8,001/- श्रीमती सीमाजी विमलचन्दजी बोरा, किलपाँक, चेन्नई।
5100/- श्री महावीरचन्दजी श्रीश्रीमाल, चेन्नई।
5100/- श्रीमती बसन्तबाईजी पारसमलजी भूरट, रानीपेट।
5100/- श्री श्रीचन्दजी गुलेच्छा, चेन्नई।
5100/- श्री अशोककुमारजी, अक्षयकुमारजी साण्ड, चेन्नई।
4500/- श्री ए. गौतमचन्दजी सिंघवी एण्ड कम्पनी, चेन्नई।
2200/- श्री राजेन्द्रजी वैद मेहता, चेन्नई।
2100/- श्री सुधीरजी, हर्षितजी, लक्षितजी गुलेच्छा, वैपरी, चेन्नई।
2100/- श्री मीठालालजी, कमलेशजी, राकेशकुमारजी (एस.एल.पी.), चेन्नई।
2100/- श्री पारसमलजी सुराणा, चेन्नई।
2100/- श्री प्रसन्नचन्दजी, चेन्नई।
2100/- श्री सागरमलजी, महावीरचन्दजी छाजेड़, अडयार, चेन्नई।
2100/- श्री अरुणकुमारजी, निखिलकुमारजी बागमार, चेन्नई।
2100/- श्री प्रकाशचन्दजी आदर्शकुमारजी बागमार, चेन्नई।
2100/- श्री रमेशचन्दजी, कमलेशजी कवाड़, मगद।
2000/- श्री गणपतराजजी बागमार, कोयम्बटुर।
2000/- मैसर्स जी.एच.ओ. एग्रो प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई।
1100/- श्री शान्तिलालजी, गणपतराजजी, अनिलजी चौपड़ा, वडपलानी।
1100/- श्री इन्दरचन्दजी, प्रकाशचन्दजी कोठारी, शैनोनगर, चेन्नई।
1100/- श्री गौतमचन्दजी, मुकेशकुमारजी मुणोत, चेन्नई।
1100/- श्री पारसमलजी बोरा, बैंगलोर।
1100/- श्री गणपतराजजी, अरविन्दकुमारजी रांका, आवड़ी।
1100/- श्री आर. पदमचन्दजी, ललितकुमारजी बागमार, चेन्नई।
1100/- श्री रतनलालजी दीपककुमारजी सिसोदिया, वैपरी, चेन्नई।
1100/- श्री नेमचन्दजी, शान्तिलालजी, मैसूर।
1100/- श्री प्रकाशचन्दजी, शीतलकुमारजी, चेन्नई।
1100/- श्री पदमचन्दजी, ऋतिकजी कटारिया, सैदापेठ।
1100/- श्री कंवरलालजी, दिनेशकुमारजी संकलेचा, तिरूवलूर।
1100/- श्री रक्षितकुमारजी खांटेड, बैंगलोर।
1100/- श्री इन्दरचन्दजी, प्रकाशचन्दजी कोठारी, चेन्नई।
1100/- श्री सम्पतराजजी, रमेशकुमारजी छाजेड़, चेन्नई।
1100/- श्री गणपतराजजी, रमेशचन्दजी गुगलिया, विरगमबाकम।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. M. Harish Kawad**, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व तिथि

फाल्गुन कृष्णा 8, रविवार	**19.02.2017**	अष्टमी
फाल्गुन कृष्णा 14, शनिवार	**25.02.2017**	चतुर्दशी, पक्खी
फाल्गुन शुक्ला 8, रविवार	**05.03.2017**	अष्टमी
फाल्गुन शुक्ला 15, रविवार	**12.03.2017**	चतुर्दशी,पक्खी, फाल्गुनी चौमासी पर्व
चैत्र कृष्णा 8, मंगलवार	**21.03.2017**	अष्टमी, भ. आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 79 वां जन्मदिवस

जय गुरु हस्ती ||GURUDEV|| जय गुरु हीरा-मान

गुरु हस्ती के दो फरमान
सामायिक स्वाध्याय महान

गुरु हीरा का यह सन्देश
व्यसन मुक्त हो देश विदेश

UDAY GROUP

UDAY INDUSTRIES CHENNAI PVT. LTD.

IMPORT & EXPORT AND DEALERS OF IRON & STEEL
LONG & FLAT PRODUCTS

UDAY CONSULTS LLP

OVERSEAS AND DOMESTIC MANPOWER RECRUITMENT
AND
FACILITY MANAGEMENT

CONNECTING BRIGHT TALENT WITH THE RIGHT COMPANY

STEEL | LOGISTICS | MANPOWER

WITH BEST COMPLIMENTS from:
G R SURANA & RAJESH SURANA
No.10&11, Jawaharlal Nehru Road,
Koyambedu, Chennai - 600 107.
Mobile No: 9940566666, Contact No: 044-24797675
Website: www.udaygroup.net
Mail Id: industries@udaygroup.net

भण्डारी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

B H
Since 1986

(आपके स्वास्थ्य के साथ हमेशा)

राजस्थान व पड़ौसी राज्यों में लेजर, लैप्रोस्कोपी एवं लिथोट्रिप्सी
का सर्वश्रेष्ठ एवं विश्वसनीय सेन्टर

~ अस्पताल की विशेषताएं ~

दूरबीन पद्धति से पेट, अपेन्डिक्स, हर्निया, प्रोस्टेट, पाइल्स आदि की शल्य चिकित्सा की सुविधा।

शरीर में किसी भी स्थान पर होने वाली पथरी के ईलाज का सर्वश्रेष्ठ संस्थान।

स्त्री रोग, नॉर्मल, सिजेरियन व हाई रिस्क डिलेवरी का अग्रणीय संस्थान।

विशेषज्ञों की सेवायें

- मूत्र व पथरी रोग
- पेट, लीवर व आंत रोग
- जनरल व मोटापा निवारण सर्जरी
- स्त्री रोग
- जनरल फिजिशियन
- प्लास्टिक व कॉस्मेटिक सर्जरी
- बाल रोग एवं बाल शल्य चिकित्सा
- न्यूरो सर्जरी
- दन्त रोग
- नाक, कान व गला रोग
- चर्म रोग

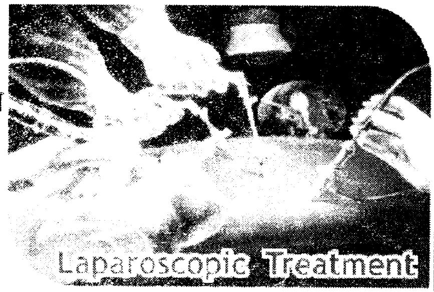

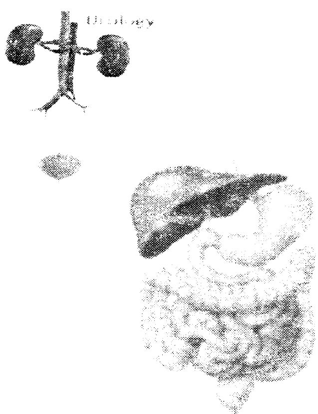

सुविधायें

- 30 वर्ष का अनुभव
- 4 लाख से अधिक रोगियों का सफल ईलाज
- 2 लाख से अधिक रोगियों का शल्य क्रिया द्वारा उपचार।
- 50,000 से अधिक पथरी रोगियों का उपचार।
- NABH & NABL से मान्यता प्राप्त।
- MLC (Medico Legal Case) की सुविधा
- 24x7 ICU, Emergency Facilty

CGHS, ECHS, ESIC, NPCIL (Rawatbhata), BSNL, BHEL, GAIL, IOCL, CWC, FCI, NFL, MNIT, CIPET, CSWRI, HCL, AAI, Coal India, CISF (8th RES BN), Rajasthan University, केन्द्र व राजस्थान सरकार के सभी कर्मचारी व पेंशनर्स एवं सभी प्रमुख TPA व इंश्योरेंस कंपनीयों से ईलाज हेतु अधिकृत

138-ए, वसुन्धरा कॉलोनी, गोपालपुरा बाईपास, टोंक रोड़, जयपुर - 302018
फोन: 0141-2703851-52 (मो.) 9660006228, 9829770055

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है,
जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

– आचार्य श्री हस्ती

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

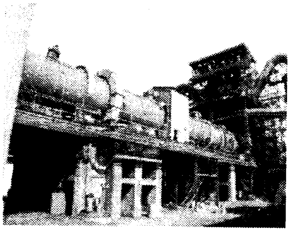

DRI Plant

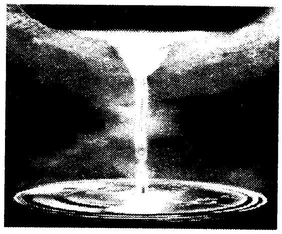

Electric Arc Furnace

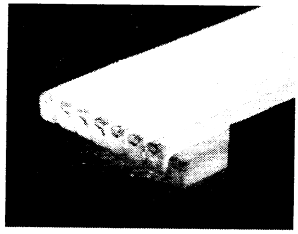

Billets

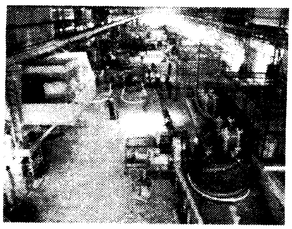

Rolling Mill

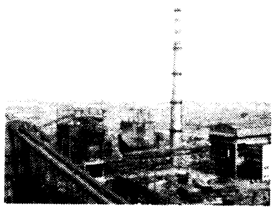

Captive Power Plant

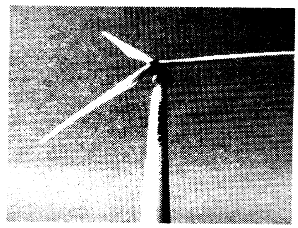

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती–हीरा जय जय ! हीरा–मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे–मोती जन–जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता के लिए सदस्यता अभियान से जुड़िये। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

Acharya Hasti Scholarship Fund

Ujjawal Bhavishya Ki Aur Ek Kadam..........

Your Contribution Towards This Noble Cause Will Go A Long Way In Lighting The Lamp Of Knowledge To Deserving and Intelligent Students, Hence We Kindly Request You To Contribute For This Noble Cause.

Note-The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. The Bank A/c Details is as follows -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund

A/c No. 168010100120722

Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168

PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

- For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad,Chennai (+91 95001 14455)

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन श्रीमान् रिखबचंद सा सुखानी, रायचूर (कर्नाटक)	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज जी राजकंवर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन–चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

M. Harish Kumar Kavad - 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-600056** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सर्म्पक करें– मनीष जैन, चैन्नई (**Mob. +91 95430 68382**)

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम्।।

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports
Paras Chand Hirawat
CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E),
Mumbai-400 098 (MH)
Tel. : +91 22 4018 5000
Email : dpe90@hotmail.com

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
PACHPADRA-PALI-ERODE
K.L. ASSOCIATES
'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)
Mobile : 094141-22757
135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)
Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

BHANSALI GROUP
Dhanpatraj V. Bhansali
BHANSALI DEVELOPERS
Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E),
Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O),
E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS
Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)
FC51, Bharat-Diamond Bourse,
Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)
Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429
Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Basant Jain & Associates, C.A.
BKJ & Associates, C.A.
BKJ Consulting Pvt. Ltd.,
Megha Properties Pvt. Ltd.
Ambition Properties Pvt.Ltd.
बसंत के जैन
अध्यक्षः श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
601, Dalamal Chambers, New Marine Lines,
Mumbai - 400020 (MH)
Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

NARENDRA HIRAWAT & CO.
Launches
N.H. Studios ***N.H. Jewells***
A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg,
Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)
Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

!!Jai Guru Heera!! !!Jai Guru Hasti!! !!Jai Guru Man!!

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba, Gandhinagar-382 009
Phone : (079) 23276252, 23276204-0

LIFE
SHOULD NOT
ONLY BE LIVED,
IT SHOULD BE
CELEBRATED!

With best compliments from:

C. R. Kothari & Sons Group of Companies
Stock Broking - DP-CDSIL-NBFC-Solar Power

Mumbai - Baroda - Jaipur - Ajmer

Pradeep Kothari
Sanjay Kothari
Hemant Kothari
Alok Kothari

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन